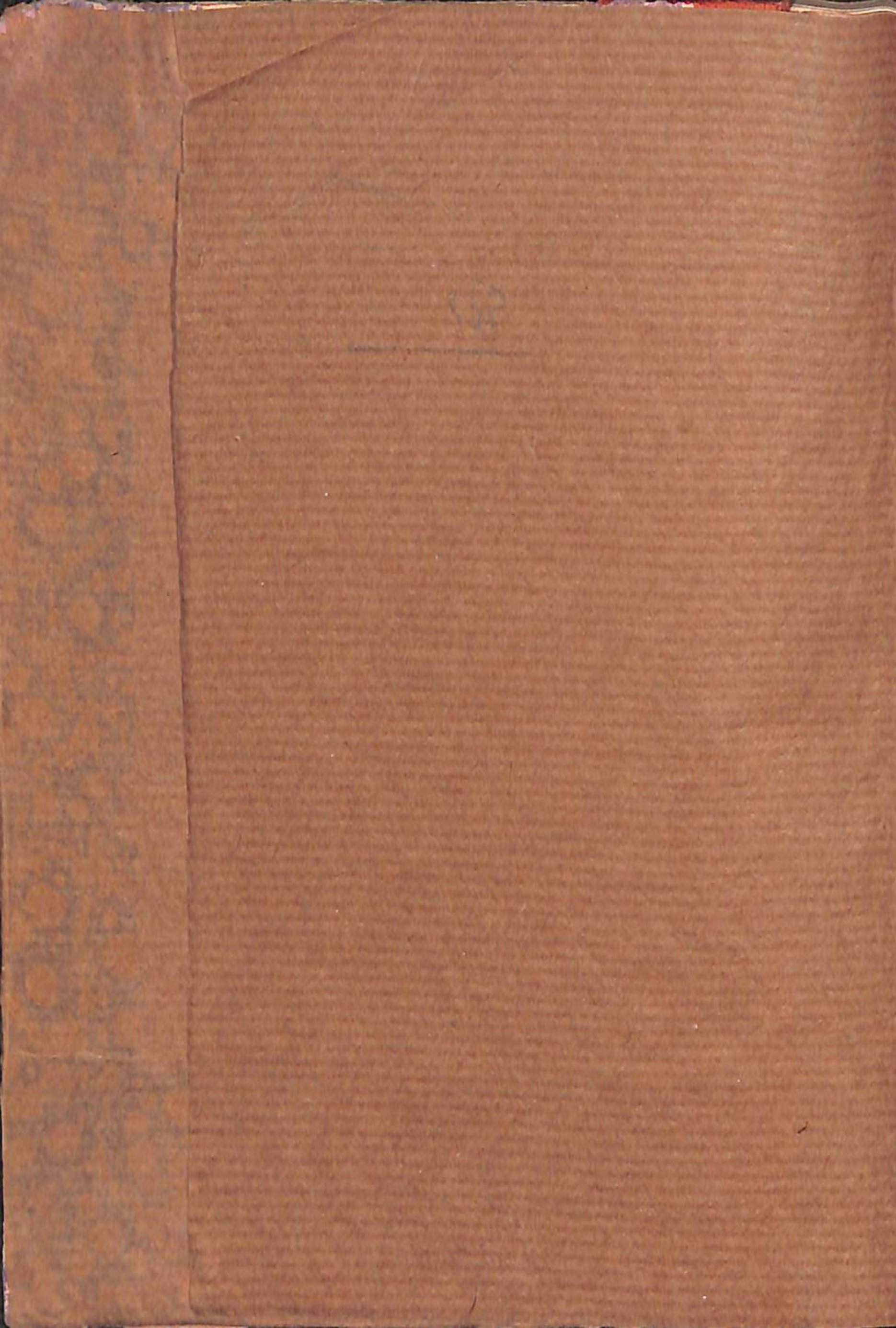




॥ ॐ ॥

सुतभावप्रकाश

भाषा टीका सहित

---:०:---

सम्पादक

पं० रामशरण ज्योतिषाचार्य

---:०:---

प्रकाशक

पं० शिवरामदत्त ज्यो० एण्ड सन्

पंचांग दिवाकर कार्यालय माई हीरां गेट जालन्धर शहर

द्वितीयबार १०००] मूल्य १।।)



41 ...

सुतभावतरङ्गः

पुत्रप्रबन्धविनयोदरदेवसेवागर्भस्थितिजनकभावविनेयविद्या
नीतिस्थितिसुकृतमंत्रिविवेकशक्तिधीयंत्रमंत्रककुपा:सुतभे विचार्य्यम्।।

पुत्र, प्रबन्ध विनय, उदर, देवसेवा, गर्भस्थिति, पिता का ..., शिष्य, विद्या, नीतिस्थिति, पुण्य, मंत्री, विवेकशक्ति, बुद्धि, ... मंत्र, पृथिवी का स्वामी, इन पूर्वोक्त पदार्थों का विचार पञ्चम ... से करना चाहिये।

सन्तति विचार

नाथैः कलत्रात्मजधर्म्मभानां पुत्रार्थचिन्तां कथयेत्सजीवैः ।
बुद्धि तथा सोमसुतात्मजाभ्यां पितुस्तथैवात्मजभाग्यसूर्य्यैः ।।

सप्तम, पञ्चम, नवम, इन तीनों स्थानों के स्वामियों से तथा गुरु से सन्तति का विचार करे। एवं बुध तथा पञ्चम स्थान से बुद्धि का विचार करे। पञ्चम, नवम इन दोनों से तथा सूर्य से पिता का विचार करे।

लग्नतश्चन्द्रतो वापि सुते सन्ततिचिन्तनम् ।
जीवात्पञ्चमेऽप्येवं सन्ततिं चिन्तयेद्बुधः ।।

... लग्न से अथवा चन्द्रमा से पञ्चम स्थान में सन्तान का बिचार ... न्तु यहाँ स्मरण रखना चाहिये कि लग्न और चन्द्रमा इन दोनों



के मध्य में जो अधिक बली हो उससे पञ्चम स्थान में सन्तान का विचार करे। इस प्रकार गुरु से पञ्चम स्थान में भी पण्डितजन सन्तान को विचारें।

लग्नतो मदनश्चापि सन्तानं चिन्तयेत्सुते।

चन्द्रदेवेज्यदैत्येज्याः स्युरिमे सन्ततिप्रदा॥

लग्न से और सप्तम से पञ्चम स्थान में सन्तान का विचार करे, अर्थात् पञ्चम स्थान में और एकादश से सन्तान का विचार करना चाहिये। चन्द्र, गुरु, शुक्र, ये तीनों सन्तान देने वाले ग्रह हैं।

सन्तति होने न होने के योग

सुतभवनं शुभयुक्तं शुभदृष्टं वा शुभर्क्षमिह येषाम्।

तेषां प्रसवः पुंसां भवत्यवश्यं न विपरीते॥

जिन पुरुषों का पञ्चम स्थान शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो अथवा पञ्चम स्थान में शुभ ग्रह की राशि हो तो उन पुरुषों के सन्तान अवश्य होती है, परन्तु उक्त प्रकार से विपरीत होने पर सन्तति नहीं होती, अर्थात् पञ्चम स्थान में पाप ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तथा पञ्चम स्थान पाप ग्रह की राशि हो एवं पञ्चम स्थान शुभग्रहों से दृष्ट युक्त न हो तो सन्तान नहीं होती।

सुत गृहे शुभदृष्टियुतेर्बलं द्भति सन्ततिरत्र न चान्यथा।

सुतगृही निजनाथ निरीक्षितः स शुभदृष्टयुतः सदपत्यदः॥

यदि पञ्चम भाव शुभग्रहों की दृष्टि से युक्त हो तो बल से

सन्तान होती है अन्य प्रकार से नहीं होती, और पञ्चम स्थान अपने स्वामी से दृष्ट हो तथा शुभग्रह से दृष्ट-युक्त हो तो अच्छी सन्तान को देता है।

सन्तानभावो निजनाथदृष्टः सन्तानलब्धिं शुभदृष्टयुक्तः।
करोति पुंसामशुभैश्च दृष्टः स्वस्वाम्यदृष्टो विपरीतमेव॥

यदि पञ्चमभाव अपने स्वामी से दृष्ट हो और शुभग्रह से दृष्ट युक्त हो तो पुरुषों की सन्तान की प्राप्ति को करता है। यदि पञ्चमभाव पापग्रहों से दृष्ट हो और अपने स्वामी से दृष्ट न हो तो पुरुषों को विपरीत फल कहे अर्थात् उसकी सन्तान नहीं होती है।

सन्तान संख्या के योग

पुत्राप्तिः सचिवेन्द्विनस्फुटयते राश्यंशसंख्याः सुताः।
धीधर्म्मावनिनायकस्फुटचयप्राप्तांशसंख्याऽथवाः।
धीधर्मक्षितिगस्फुटैक्यभवने यातांशतुल्याः सुताः॥

गुरु, चन्द्र, सूर्य, इन तीनों के राश्यादि स्पष्टों के योग करने से जो राश्यंश हों उस राशि की संख्या के समान वा नवांश संख्या के समान पुत्र होते हैं। अथवा पञ्चमेश, नवमेश, चतुर्थेश इन तीनों के स्पष्टराश्यादि के योग करने से जो राश्यादि हों उसमें जितने नवांश गये हों उतनी संख्या में सन्तान होती है। पञ्चम, नवम, चतुर्थ इन तीन स्थानों में जितने ग्रह स्थित हों उनके राश्यादि स्पष्टों के

योग करने से जो राश्यादि हो उसमें जितने गतनवांश हों उसके ही तुल्य पुत्र होते हैं।

पुत्रान्पचञ्मभात्तृतीयभवनाद्भ्रातृन्कलत्रात्स्त्रियो ।
दासीश्च क्षितिराशितः स्वभवनाद्दासांश्च मित्राणि च ।
यातांश्चैव नवांशकाञ्च्छुभदृशा हत्वा तथा रोपये ।
द्व्योमव्योमचरैर्विभज्यतु तथा भूताश्च पुत्रादयः ॥

पञ्चम स्थान से पुत्रों की संख्या का विचार और तृतीय से भ्राताओं की, सप्तम से स्त्रियों की चतुर्थ से दासियों की द्वितीय से दास और मित्रों की संख्या का विचार करे। पञ्चमादि भावों में जितने नवांश गत हों उस संख्या को शुभ ग्रहों को दृष्टि के अंशादि योग से गुणाकर स्थापित करें तब क्रम से शुभ दृष्टि से गुणित पञ्चमादि भावों की गत नवांश संख्या में १।५।१।५।१।२ से भाग दे अर्थात् पुत्र संख्या के लिये १ से और भ्रातृसंख्या के लिये ५ से एवं स्त्री संख्या के लिये १। से, दासी के लिये ५ से, दास केलिये २ से भाग दे लब्ध पुत्रादियों की संख्या होती है।

पुत्रं सोदरभं कलत्रमुदयं यानं च राशिं विना ।
तल्लिप्ताः शुभखेट दृग्बलहतः षष्ठ्या विभक्ताः क्रमात् ।
व्योमाकाशकराप्त पुत्रसहजस्त्रीदासदासीसुहृत् ।
संख्याः पापनभोगदृग्वलभवाः पुत्रादिनाशप्रदाः ॥

पञ्चम, तृतीय, सप्तम, चतुर्थ इन चार भावों की राशि को त्याग कर अंशादियों की कला करके शुभग्रहों के दृग्बल से गुणा

कर ६० से भाग दे लब्ध में क्रम से १।५।१।५।१।२ का भाग दे लब्ध पुत्र, भ्रातृ, स्त्री, दासी, मित्र यह छः संख्यायें होती हैं। एवं राशि रहित पुत्रादि भावों की कलाओं को पापदृग्बल से गुणाकर ६० से भाग दे, लब्ध में क्रम से १।५।१।५।१।२ से भाग दे लब्ध पुत्रादियों की हानि की संख्यायें होती हैं।

पुत्र-पुत्री संख्या के अन्य योग

यावत्संख्या ग्रहाणां सुतभवनगता पूर्णदृष्टियुता वा ।
तावत्संख्या प्रसूतिर्भवति बलयुताः पुंग्रहा पुत्रजन्म ॥
पुत्री शुक्रश्च चन्द्रो विधुसुत इनजो गर्भहानिं करोति ।
केचिच्चन्द्राद्विचार्य्य मुनिवरकथितं तद्विचिन्त्यं नवांशे ॥

ग्रहों की जितनी संख्या पञ्चमभाव में हो अथवा पञ्चमभाव जितने ग्रहों की पूर्ण दृष्टि से युक्त हो उस संख्या के समान प्रसव होता है। यदि पञ्चमभावस्थ वा पञ्चमभावदर्शी बलवान् पुरुष ग्रह हों पुत्र जन्म को करते हैं। एवं पञ्चमभाव शुक्र-चन्द्रमा से युक्त वा दृष्ट हो तो कन्या होती है और पञ्चमभाव बुध वा शनि से युक्त वा दृष्ट हो तो गर्भ हानि करता है। कोई आचार्य चन्द्रमा से सन्तान संख्या को विचारना कहते हैं और श्रेष्ठ मुनिजन सन्तान संख्या के विचार को नवांश में विचारना कहते हैं।

सन्तानभावे गगने चराणां यावन्मितानामिह दृष्टिरस्ति ।
स्यात्सन्ततिस्तत्प्रमितार्नृसंज्ञैर्नराश्च कन्या प्रमदाभिधानैः ॥

पुत्रस्थान पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो तो उसके तुल्य पुरुष

ग्रहों से पुरुष सन्तान और स्त्री सन्तान होती है।

सन्तानभावांकसमानसंख्या स्यात्सन्ततिर्वेति वदंति केचित्।
नीचोच्चमित्रारिगृहस्थितानां दृष्ट्या शुभं वा शुभमर्भकाणाम्॥

सुतभाव में स्थित राशि की संख्या के समान सन्तान की संख्या होती है इस प्रकार कोई आचार्य कहते हैं। नीच उच्च-मित्र तथा स्वराशि, मूल त्रिकोण राशि और शत्रु राशि में स्थित ग्रहों की दृष्टि से बालकों को शुभ वा अशुभ फल कहना चाहिये, अर्थात् नीच व शत्रु राशि में स्थित ग्रहों की दृष्टि का अशुभ फल कहे और उच्च, मूल त्रिकोण, स्वराशि, मित्रराशि में स्थित ग्रहों की दृष्टि का शुभ फल कहे।

नवांशतुल्या प्रभवात्रसंख्या दृष्ट्याशुभानां द्विगुणावगम्या।
क्लिष्टा च पापग्रहदृष्टियोगा मिश्रा च मिश्रग्रहदृष्टितोऽत्र॥

पञ्चमभाव में जितनी नवांश संख्या हो उतनी सन्तान की संख्या होती है यदि वह पञ्चमभाव में स्थित नवांश संख्या ग्रहों से दृष्ट हो तो उस संख्या के द्विगुण सन्तान संख्या जाननी चाहिये और वह पञ्चम भाव में स्थित नवांश संख्या पापग्रहों से दृष्ट हो तो उतनी सन्तान की संख्या का कष्ट होता है, एवं शुभ व अशुभ हो तो मिश्रफल कहना चाहिये अर्थात् कुछ सन्तान जीवित रहे और कुछ मृत्यु को प्राप्त होती है।

संख्या नवांशतुल्या सौम्यांशे तावती सदा दृष्टा।
शुभदृष्टे तद्द्विगुणा क्लिष्टा पापांशकेऽथवा दृष्टे॥

पञ्चम भाव में शुभ ग्रह की नवांश राशि हो तो उसके तुल्य सन्तान होती है और वह नवांश राशि शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो उस राशि की द्विगुण संख्या सन्तान होती है। एवं पञ्चम भाव में पापग्रह की नवांश राशि हो अथवा वह पापग्रह से दृष्ट हो तो उतनी संख्या सन्तान को कष्ट होता है।

पञ्चमभवनस्वामी यत्संख्येंऽशे भवति तावती संख्या ।

शुक्रनवांशे तस्मिन्बहून्यपत्यानि शक्रसंदृष्टे ॥

पञ्चम स्थान का स्वामी जितनी संख्या के नवांश में स्थित हो सन्तान की उतनी संख्या होती है। यदि पञ्चम स्थान में शुक्र की नवांश २७ राशि हो और वह शुक्र से दृष्ट हो तो बहुत सन्तान होती है।

सुतस्वामी शुभः पापो यद्गेहमनुवर्त्तते ।
तद्गेहं त्रिगुणं कार्यं दशभिर्भागमाहरेत् ।
शेषांकतः सुतानां च संख्या स्याद्वनितात्मजा ॥

पञ्चम स्थान का स्वामी शुभग्रह व पापग्रह जिस गृह में वत्तमान हो उस गृह की संख्या को तीन से गुणा कर १० से भाग दे तब शेष अंक से पुत्रों की तथा कन्याओं की संख्या होती है।

घटशनिः सुतगः सुतपञ्चकी मृगशनिश्च सुतात्रयदस्तथा ।
यदि कुजः शनिवत्त्रिसुतप्रदो यदि बुधः सुतभे तनयाप्रदः ॥

यदि पञ्चम स्थान में कुम्भराशि का शनि हो तो पांचपुत्र वाला होता है और पञ्चम स्थान में मकरराशि का शनि हो तो तीन

कन्याये देता है। यदि पञ्चम स्थान में शनि के समान मकर राशि का मंगल हो तो तीन पुत्र को देता है अथवा बुध पञ्चम स्थान में हो तो कन्या को देता है।

कविविधू सुतभे तनयाप्रदावुदितवत्सुतपंचकदो गुरुः।
उपखगौ क्रियकर्कवृषोपगौ नहि विलम्बकरौ परगौ न चेत्॥

इस प्रकार शुक्र तथा चन्द्रमा पञ्चम स्थान में स्थित हों तो कन्या को देते हैं और केवल गुरु पञ्चम भाव में हो तो पांच पुत्र को देता है। राहु वा केतु मेष, कर्क व वृष राशि में स्थित होकर पञ्चम में स्थित हों तो सन्तान की उत्पत्ति में विलम्ब नहीं होता, यदि राहु व केतु उक्त राशियों से अतिरिक्त राशियों में स्थित होकर पञ्चम स्थान में हो तो सन्तान की उत्पत्ति में विलम्ब करता है।

सुरगुरुर्भवभे नवमे च बुधो यदि तदाष्टसुतो बहुजीवितः।
त्रिरिपुकर्मकुजे मदने गुरौ नवमगे भृगुजे सुतपञ्चकी॥

यदि गुरु एकादश स्थान में हो और नवम स्थान में बुध स्थित हो तो आठ पुत्र वाला दीर्घजीवी होता है। तृतीय, षष्ठ वा दशम स्थान में भौमस्थित हो तथा सप्तम में गुरुस्थित हो और नवम में शुक्रस्थित हो तो पांच पुत्र वाला होता है।

सुतविधुः सुतगौ च कवीज्यकौ निगमवित्सुत कल्पितवैभवः।

पञ्चम भाव में चन्द्रमा और शुक्रगुरु स्थित हों तो वेदवेत्ता पुत्र से कल्पित वैभव वाला होता है।

यदि चतुष्टययुग्मगताः शुभा रिपुगता रविभौमशनैश्चराः ।
सुतचतुर्दशकस्य पिता भवेत्स पुरुषो रमणी त्रितयो भवेत् ॥

यदि शुभग्रह द्विस्वभावराशि में स्थित होकर केन्द्र में हो और सूर्य भौम तथा शनि षष्ठस्थान में स्थित हों तो वह पुरुष चौदह पुत्रों का पिता और तीन स्त्री वाला होता है।

यदि तनोस्त्रितये विधुनन्दनो द्विसुतदश्च सुतात्रितयप्रदः ।
यदि गुरुःसुतपंचकदो भृगुस्त्रिसुतदश्च सुताद्वयदस्तथा ॥

यदि लग्न से तृतीय स्थान में बुध हो तो दो पुत्र तथा तीन कन्या देता है। यदि तृतीय स्थान में गुरु हो तो पांच पुत्र को देता है एवं शुक्र तृतीय हो तो तीन पुत्र और दो कन्या को देता है।

पुत्रैकं दिननाथ पञ्चमपतिः सद्वीर्य्यदृष्टिर्भवे-
त्पुत्रैः पञ्चभवन्ति देवगुरुणा भौमस्तृतीयं क्रमात् ॥

❀ 'पाठान्तरम्' रविस्त्वेकपुत्रं त्रयं वा प्रदद्याद्विधुः कन्यका युग्मकं वा चतुष्कम् । प्रदद्यात्कुजः पुत्रकाणां त्रयं च बुधः पुत्रिका पंचकं वा चतुष्कम् । सुतानां गुरुः पञ्चकं वा चतुष्कं सितोदारिकाणां चतुष्कं चषट्कम् । शनिस्त्वेकपुत्रं सुतायुग्मकंतु प्रवाच्यं ग्रहाणां युतेर्वीक्षणाद्वेति ।

'पाठान्तरं वा' एकःपुत्रो रवौ वाच्यश्चन्द्रे चैव सुताद्वयम् भौमे पुत्रास्त्रयो वाच्या बुधे पुत्री चतुष्टयम् । गुरौगर्भे सुता पंच षष्ठ पुत्र्यो भृगुनन्दने शनौ च गर्भपातः स्याद्राहौ गर्भे भवेन्नहीति 'अथवा' एक त्रिपंच पुत्राः स्युः सूर्येधीस्थे कुजे गुरौ । द्वित्रि पंच च सप्तैव पुत्रीन्द ज्ञेसिते शनाविति 'अथवा' एकःसुतो ऽत्रदिनकृद्यदि वा त्रयस्ते ध्नते सुते सुतगते यदि वा चतस्रः । तिस्रःकन्याः स्युःकुजेज्ञे चतस्रः पुत्राः पञ्चेज्ये बलिष्ठेऽथशुक्रे । कन्या षट्स्युर्वा चतस्रः शनौ तु द्वे कन्ये पुत्रैक्यमी वशाश्चेति ।

सौरे सप्तसुताभृगौ रससुतावेदाज्ञइन्दौद्विके: ।

तद्वच्चैव नवांशकं सुतगृहे संशोधयेल्लग्नत: ॥

यदि पंचम भाव का स्वामी सूर्य बलवान् ग्रहों की दृष्टि से युक्त हो तो एक पुत्र, पंचमेश गुरुबलवान् ग्रहों की दृष्टि से युक्त हो तो पाँच पुत्र, इसी प्रकार पंचमेश भौम, बलवान् ग्रहों से दृष्ट हो तो तीन पुत्र। पंचमेश शनि से सात कन्या होती हैं। एवं शुक्र से छः कन्या तथा बुध से चार कन्या और चन्द्रमा पंचमेश होकर बलवान् ग्रहों से दृष्ट हो तो दो कन्या होती हैं। इस प्रकार लग्न से पंचम भाव में नवांश का विचार करे।

पञ्चमात्पञ्चमे मन्दे सुतस्थे च तदीश्वरे ।

सूनव: सप्तसंख्याश्च द्विगर्भे यमलंभवेत् ॥

पंचम से पंचमस्थान में अर्थात् नवमस्थान में शनिस्थित हो और नवमेश पंचम स्थान में स्थित हो तो सात पुत्र होते हैं, और दो गर्भ में यमल होता है।

वित्तेशे पञ्चमस्थे सुतस्थे पञ्चमाधिपे ।

षट्संख्या च सुतप्राप्तिस्तेषां च त्रिप्रजामृति: ॥

यदि द्वितीयेश पंचम स्थान में स्थित हो एवं पंचमेश भी पंचम स्थान में हो तो छः पुत्रों की प्राप्ति होती है. उन में तीन सन्तान की मृत्यु होती है।

लग्नात्पञ्चमगे जीवे जीवात्पञ्चमगे शनौ।

मन्दात्पञ्चमगे राहौ पुत्रमेकं विनिर्दिशेत् ॥

लग्न से पंचम स्थान में गुरु हो और गुरु से पंचम स्थान में शनि हो तथा शनि से पंचम स्थान में राहु हो अर्थात् लग्न में राहु, पंचम में गुरु, नवम में शनि हो तो एक पुत्र को कहे।

सुतभवनसुरेज्यः पूर्णचन्द्रेण दृष्टः, स्वगृहगतनवांशे पंचमे युक्तदृष्टे।
कथयति सुतपंच-क्षोणिपुत्रस्त्रयं वा, दिनकर सुतसंस्थे पुत्रमेकं विदध्यात्॥

यदि गुरु पंचम स्थान में स्थित हो कर पूर्ण चन्द्रमा से दृष्ट हो अथवा पंचम भाव में गुरु की नवांश राशि स्थित हो और वह गुरु से युक्त वा दृष्ट हो तो पांच पुत्र दैवज्ञ कहते हैं। तथा पंचम स्थान में स्थित भौम पूर्ण चन्द्र से दृष्ट हो तो तीन पुत्र होते हैं। एवं पूर्णचन्द्र से दृष्ट सूर्य पंचम स्थान में हो तो एक पुत्र को देता है।

सौम्यःसुतान्पंच ददाति धीस्थो ह्यस्तंगतस्तद्विफलं करोति।
सुरेज्यवैरी सुतराशिसंस्थः कन्यासुते द्वे कथिते मुनीन्द्रैः॥

यदि पंचम स्थान में स्थित बुध पूर्णचन्द्र से दृष्ट हो तो पांच पुत्र को देता है और अस्तंगत हो कर बुध पंचम भाव में हो तो निष्फल करता है। यदि पंचम स्थान में स्थित शुक्र पूर्णचन्द्र से दृष्ट हो दो कन्या श्रेष्ठ मुनियों ने कहीं हैं।

चतुर्थे पापसंयुक्ते षष्ठे पापसमन्विते।
सुतेशे परमोच्चस्थे लग्नेशेन समन्विते।

कारके शुभसंयुक्ते दशसंख्यास्तु सूनवः ॥

चतुर्थ तथा षष्ठ स्थान में पापग्रह युक्त हों और पंचमेश परमोच्चांश में हो एवं पुत्रकारक शुभग्रह से युक्त हो तो दस पुत्र होते हैं।

परमोच्चगते जीवे धनेशे राहुसंयुते।
भाग्येशे भाग्यसंयुक्ते संख्याका नवसूनव ः॥

यदि गुरु अपने परमोच्चांश में स्थित हो और धन भाव का स्वामी राहु से युक्त हो तथा भाग्येवश भाग्य में स्थित हो तो नौ पुत्र होते हैं।

पुत्रभाग्यगते जीवे सुतेशे बलसंयुते।
धनेशे कर्म्मराशिस्थे वसुसंख्यास्तु सूनवः॥

यदि गुरु, पंचम वा भाग्य में स्थित हो और पंचमेश बलवान् हो तथा धनेश कर्मस्थान में हो तो आठ पुत्र होते हैं।

कारकस्थितराशेर्वा पंचमे विन्दुसंख्यया।
नीचारिमूढगेहानां विन्दुं त्यक्त्वा सुतान्वदेत् ॥

पंचमभाव कारक ग्रह की अष्टक वर्ग कुण्डली में पंचम भाव कारक ग्रह की राशि से पंचम स्थान में जितनी संख्या रेखाओं की हों उतनी संख्या सन्तान की कहे परन्तु कारक की राशि से पंचम स्थान में जितने ग्रहों की रेखा प्राप्त हुई हो उन ग्रहों के मध्य में जो ग्रह नीच में वा शत्रुराशि में वा अस्तंगत हो उन की

संख्या को छोड़ कर शेष ग्रहों की रेखा के समान पुत्रों की संख्या को कहे।

❀पुत्रस्थानेशकिरणात्पुत्रभावांशकाद्वदेत्।
रश्मिजालैर्गुरोर्वापिबलोत्कर्षाद्वदेत्तथा॥

पंचमेश की रश्मियों से वा पंचम भाव के नवांश से वा गुरु की रश्मियों से सन्तान की संख्या कहे अथवा उक्त तीनों में से जो अधिक बली हो उस से सन्तान की संख्या को कहे।

प्रथम पुत्र वा पुत्री जन्म के योग

गोपुराद्यंशके वापि शुभांशे शुभवीक्षिते।
पुंग्रहे पुंगृहं प्राप्ते पुंभागे पुत्रनायके
सुपुत्रजननं विद्यात्प्रथमं नात्र संशयः।

यदि पंचमेश गोपुरादि अंशक में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हों और पंचम में पुरुष राशि हो पंचमेश पुरुष ग्रह होकर पुरुष राशि में और पुरुषनवांश में हो तो प्रथम सुपुत्र का जन्म जाने इस में संशय न करना चाहिए।

स्त्रीराशौ स्त्रीग्रहे प्राप्ते स्त्रीभावे पुत्रनायके।
दारिकां प्रथमं विद्यात्षड्वांशे षंढमादिशेत्॥

यदि पंचम स्थान में स्त्री राशि और पंचम स्थान में स्त्री

❀ग्रहाणां रश्मिसंख्यामानमुक्तञ्च 'ग्रन्थान्तरे' स्वोच्चस्थे दश[10]- सूर्ये नव[9] चन्द्रे पञ्च[5] भूमिपुत्रे च। प[5]ञ्चेन्दुजे तथेज्ये सप्ता[7]ष्टौ[8]- भार्गवे शनेः पञ्च[5] इति।

ग्रह हो तथा पंचम का स्वामी स्त्री राशि में हो तो प्रथम पुत्री का जन्म जाने और नपुंसक ग्रह का नवांश पंचम में हो अथवा पंचमेश नपुंसक ग्रह के नवांश में हो अथवा पंचम में नपुंसक ग्रह हो तो नपुंसक के जन्म को कहे।

लग्ने द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननाथे प्रथमः सुतः स्यात्।
तुर्य स्थितेऽस्मिश्च सुतो द्वितीयः पुत्री सुतो वेति पुरः प्रकल्प्यम्॥

यदि लग्नेश, लग्न, द्वितीय, तृतीय स्थान में स्थित हो तो प्रथम पुत्र का जन्म होता है यदि लग्नेश चतुर्थ-स्थान में हो तो प्रथम कन्या जन्म और द्वितीय पुत्र जन्म होता है अथवा चतुर्थ स्थान से आगे कन्या, पुत्र, वा कन्या, पुत्र इस प्रकार कल्पना करे।

तनुधनत्रिषु पंचमपेक्षितस्तनुपतिः प्रथमं सुतजन्मदः।
सुकृतपंचमलाभवधूगतस्तनुपतिः प्रथमं तनयाप्रदः॥

यदि लग्न का स्वामी पंचमेश से दृष्ट हो कर लग्न वा द्वितीय वा तृयीय स्थान में स्थित हो तो प्रथम पुत्र का जन्म होता है। अथवा लग्न का स्वामी पंचमेश से दृष्ट हो कर नवम, पंचम, एकादश और सप्तम स्थान में स्थित हो तो प्रथम कन्या का जन्म होता है।

लग्नात्पंचमसप्तमे दिनपतिः सौरान्वितोवीर्य्यवा-
नादौ पुत्रमिदं च शौनकमतं पश्चाद्भवेत्कन्यका।

चन्द्राद्द्वादशमानपञ्चमरविश्चन्द्रे न वीर्यान्विते ।
तत्कन्या प्रथमं न जीवति कथं पुत्रो न जीवेत्कदा ॥

लग्न से पञ्चम वा सप्तम स्थान में शनि से युक्त बलवान् सूर्य स्थित हो तो प्रथम पुत्र जन्म, पश्चात् कन्या जन्म होता है, यह महर्षि शौन का मत है। चन्द्रमा से द्वादश, दशम, पञ्चम स्थान में सूर्य हो और चन्द्रमा बलवान् न हो तो उस पुरुष की प्रथम कन्या ही नहीं जी सकती है और पुत्र तो कभी नहीं जी सकता है।

अथ वधूखचरः प्रबलः सुते स्मरगृहे रमणीजनिदः पुरा ।
नरसुते नरनायकवीक्षिते प्रथममेव सुतस्य जनुर्भवेत् ॥

यदि बलवान् स्त्री ग्रह पञ्चम या सप्तम स्थान में हो तो प्रथम कन्या को देता है यदि पञ्चम स्थान में राशि हो और पुरुष ग्रहों से दृष्ट हो तो प्रथम पुत्र का जन्म होता है।

एकादशे यदा क्रूरः पञ्चमे शुक्रशीतगू ।
प्रथमं कन्यका जन्म माता तस्याः सकष्टका ॥

एकादश स्थान में पापग्रह और पञ्चम स्थान में शुक्र और चन्द्रमा हो तो प्रथम कन्या जन्म होता है और उसकी माता कष्ट सहित होती है।

वृश्चिकझषकर्कटका येषामपत्यभावमापन्ना ।
बहुलापत्या ज्ञेयाः कन्यापूर्वप्रजा चापि ॥

जिन मनुष्यों के पांचवें भाग में वृश्चिक 'मीन' कर्क में राशि

स्थित हों वे बहुत सन्तान वाले होते हैं और कन्या का जन्म पहिले होता है।

व्ययं वित्तं तृतीयं वा लग्नेशः पश्येतार्यदि ।
तुर्यलग्नं पञ्चमस्थाः पुरः पुत्रस्य जन्म च ॥

यदि पञ्चम स्थान में स्थित हुआ लग्नेश द्वादश, द्वितीय, तृतीय वा चतुर्थ लग्न को देखे तो पहले पुत्र का जन्म होता है।

किसी अवस्था विशेष में सन्तानप्राप्ति के योग

द्विदेहसंस्था भृगुभौमचन्द्राः सन्तानमादौ जनयन्ति नूनम् ।
एते पुनर्धन्विगता न कुर्युः पश्चात्तथादौ गदितं महद्भिः ॥

यदि शुक्र, भौम, चन्द्रमा, ये तीनों द्विस्वभावराशि (मिथुन कन्या, मीन) में स्थित हों तो प्रथम अवस्था में सन्तान को उत्पन्न करते हैं परन्तु उक्त तीनों ग्रह धन राशि में स्थित हों तो आयु की प्रथम अवस्था में और आयु के पिछले भाग में सन्तान का न होना महात्माओं ने कहा है।

पुत्रं लभते बाल्ये लग्ने संस्थः शुभश्च पश्येद्वा (यस्येह)।
दशमे शुभस्तु कुर्याद्यौवनकाले नृणां पुत्रम् ॥

यदि शुभग्रह लग्न में स्थित हो वा लग्न को देखे तो बाल्य-काल में पुत्र को प्राप्त होता है अथवा दशम स्थान शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो मनुष्यों के यौवनकाल में पुत्र को करता है।

जायायां यौवनान्ते पुत्रं कुर्याच्छुभस्तु पश्येद्वा ।
यदि तुर्ये शुभखेटो वार्द्धक्ये पुत्रसंभवं कुरुते ॥

यदि शुभग्रह जायास्थान में स्थित हो वा जाया स्थान को देखे तो युवा अवस्था के अन्त में पुत्र को उत्पन्न करता है अथवा चतुर्थ स्थान में शुभग्रह स्थित हो वा चतुर्थ स्थान को शुभ ग्रह देखे तो वृद्ध अवस्था में पुत्र को उत्पन्न करता है।

केन्द्रत्रिकोणगृहगः सुतपः शुभर्क्षे ।
सौम्यान्वितो यदि सुतं समुपैति बाल्ये ॥
भोगीशयुक्तसुतराशिपभुक्तिजातः ।
स्वल्पायुरेति फणिभुक्तिभवश्चिरायुः ॥

यदि पंचमेश शुभग्रह की राशि में स्थित हो और शुभग्रह से युक्त होकर केन्द्र वा त्रिकोण में स्थित हो तो पुरुष बाल्य-अवस्था में पुत्र को प्राप्त होता है। यदि राहु से युक्त पंचमेश की अन्तर्दशा में पुत्र उत्पन्न हो तो अल्पायु को प्राप्त होता है और राहु की अन्तर्दशा में पुत्र उत्पन्न हो तो दीर्घायु वाला होता है।

कर्के विधौ पापयुतेक्षितेऽर्के मन्देक्षितेऽन्त्यायुषि पुत्रलाभः ।
जनुस्तनौ पापयुते च पापभे खाबलौ युग्मभगे क्षितेः सुते ।
सुतोऽस्य मध्यायुषि सेज्यभार्गवेऽङ्गगौ ज्ञमन्दौ यदि नात्मजश्रियः॥

कर्क राशि का चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो और सूर्य, शनि से दृष्ट हो तो अल्पावस्था में पुत्र लाभ होता है। यदि जन्मलग्न में पापग्रह की राशि हो और वह पापग्रह से

युक्त हो तथा सूर्य वृश्चिक राशि में हो और मंगल समराशि में हो तो मध्यायु में उस पुरुष के पुत्र होता है। यदि गुरु शुक्र एक एक राशि में हों और बुध शनि लग्न में हो तो मनुष्य के पुत्रसम्पत्ति नहीं होती है।

सन्तान की प्राप्ति के समय का विचार

सुतलग्नेशदारेशलग्नेशानां यदा तदा ।
सङ्गमस्तु तदा पुत्रलाभः स्याद्यवनोदितम् ॥

पंचमेश, सप्तमेश, लग्नेश तीनों का जब संगम हो तब पुत्र लाभ होता है अर्थात् गोचर में भ्रमणवश से १।३।५।७।९।११ इन संतानप्रद स्थानों में से किसी भी स्थान में उक्त तीनों का जब जब संगम हो तब सन्तति प्राप्त होती है, ऐसा यवनाचार्य ने कहा है।

लग्नपुत्रकलत्रेशयोगे यदि दशा भवेत् ।
सुतयुक्तेक्षकेशानां पुत्रसिद्धिस्तदा भवेत् ॥

लग्नेश, पंचमेश सप्तमेश, इन तीनों का गोचर भ्रमणवश से जब योग हो उस समय पंचमेश की वा पंचम स्थान में युक्त ग्रह की वा पंचम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखने वाले ग्रह की दशा वा अन्तर्दशा हो तो उस समय सन्तति प्राप्ति होती है।

सुतपतिगुर्वोरथ वातद्युताराश्यंशपानां वा ।
बलसहितस्य दशायाः परिपाके वा भवेत्सुतप्राप्तिः ॥

पंचमेश की वा गुरु की अथवा पंचमेश और गुरु जिस राशि में वा जिस नवांश में हों उनके स्वामियों की अर्थात् इन चारों में से जो बलवान् हो उसकी दशा के वा अन्तर्दशा के परिपाक समय में सन्तति की प्राप्ति होती है।

लग्नाधिपः सुतस्थाने जायास्थानगतोऽपि वा ।
सुतजायाधिपौ लग्ने तदा गर्भस्तु योषितः ।।

लग्न का स्वामी जब गोचर में राशि भ्रमणवश से पंचम स्थान में वा सप्तम स्थान में प्राप्त हो अथवा पंचमेश और सप्तमेश गोचर में राशि भ्रमणवश से जब लग्न में प्राप्त हो तब स्त्री को गर्भ होता है।

जन्मलग्नात्त्रिकोणस्थे शनौ पुत्रे गुरुर्यदि ।
तस्मिन्वर्षे भवेद्गर्भो देवशालमुनेर्मतम् ।।

जिस वर्ष में गोचर में राशि भ्रमणवश से जन्मलग्न की राशि से पंचम वा नवम स्थान में शनि हो और पंचम स्थान में गुरु हो उस वर्ष में गर्भ होता है, यह देवशाल मुनि का मत है।

लग्नेशपुत्रेशसुरेज्ययोगे नेत्रैकतष्टे ह्यवशिष्टसंख्ये ।
राशौ ततो नवशरे प्रमिते गतेज्ये यदैति सन्तानसुखं तदा स्यात् ।।

लग्नेश, पंचमेश, तथा गुरु इन तीनों के राश्यादि स्पष्टों का योग करके जो राशि हो वह यदि बारह से अधिक हो तो बारह से तष्ट करे, शेष राशि जो हो उसमें और उससे नवम तथा पंचम राशि में अपनी राशि के भ्रमणवश से जब गोचर में गुरु आये तब सन्तान के सुख को प्राप्त होता है।

(उदाहरण) यहां लग्न मकर है इसके स्वामी शनि का राश्यादिस्पष्ट १।६।१८।४ और पंचमेश शुक्र का राश्यादि ९।२७।३०।१८ गुरु का राश्यादिस्पष्ट ८।८।५।५८ इन तीनों का योग किया तो १९।११।५४।२० हुआ, यहां राशि १२ से अधिक है अतः राशि १९ में १२ से भाग दिया तो ७।११।५८।२० शेष राश्यादि रहे यहाँ शेष राशि वृश्चिक है अतः वृश्चिक राशि से पंचम राशि मीन और नवम राशि कर्क हुई। इसलिये वृश्चिक, मीन और कर्क राशि में वर्त्तमान धन राशि के भ्रमणवश से गोचर में जब गुरु आयेगा तब सन्तान का सुख होगा।

सन्तानकामभाग्याया लाभे तत्पतिभिर्युते ।
तन्मासे गर्भलाभः स्याद्विशेषाच्चन्द्रदृग्युते ॥

पंचम, सप्तम, नवम, एकादश इन चारों भावों के स्वामी ग्रह जन्म कुण्डली में जिस मास में लाभ भाव में जायें और चन्द्रमा से जिस दिन दृष्ट युक्त हों उस मास में गर्भ लाभ होता है।

कामेश्वरो लग्नपतिप्रयुक्तः शुक्रेण युक्तो शशिना स दृष्टः ।
तन्मासमध्ये स्थिरगर्भलाभ एवं विचार्य्य प्रवदेन्नराणाम् ॥

सप्तमेश, लग्नेश, और शुक्र इन तीनों का योग जिस मास में और ये तीनों जिस दिन चन्द्रमा से युक्त दृष्ट हों उस मास के उस दिन में स्थिर गर्भ का लाभ होता है इस प्रकार विचार कर मनुष्य को कहे।

मंदेश्वरःकामपतिप्रयुक्तो भाग्येशयुक्ता शशिदृग्युतः स्यात् ।

तन्मासमध्ये खलु भाग्ययोगात्पुण्यस्य कार्ये खलु गर्भदःस्यात् ॥

जिस मास में, सप्तमेश, शुक्र, तथा भाग्येश, इन तीनों का योग हो और ये तीनों जिस दिन चन्द्रमा से दृष्ट युक्त हों उस मास में वह दिन भाग्ययोग से पुण्यकार्य में गर्भ दायक होता है।

जीवाच्चन्द्रमसो विलग्नभवनात्पुत्रप्रदं पञ्चमं,
तस्माद्धर्म्मगृहं च तत्पतिदशाभुक्तौ सुताप्तिं वदेत्।
पुत्रस्थानपकामपस्फुटयुते यत्तारका तद्दशा,
तत्खेटान्वितवीक्षकग्रहदशाभुक्तिश्च पुत्रप्रदा ॥

गुरु, चन्द्र, लग्न, इन तीनों से पंचम स्थान के स्वामी की दशा अन्तर्दशा में तथा उस पंचम स्थान से नवम स्थान के स्वामी की दशा अन्तर्दशा में अर्थात् गुरु, चन्द्र, लग्न इन तीनों की राशि-स्वामी की दशा अन्तर्दशा में पुत्र प्राप्ति कहे। पंचमेश और सप्तमेश के स्पष्ट राश्यादि का योग करने से जो राशि हो उसके स्वामी की दशा अन्तर्दशा में वा योग की हुई राशि में जो ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखे उसकी दशा, अन्तर्दशा पुत्र देने वाली होती है।

पुत्रस्थानपकारकेक्षकयुता दुःस्थानपा दुर्बला,
दुःस्थानस्तत्परिपाकभुक्तिसमये पुत्रस्य नाशं वदेत्।
चत्वारो वलशालिनो यदि शुभास्तत्पाकभुक्त्यन्तरे,
पुत्राप्तिं सुतसम्पदः प्रभुजनप्रीतिं च कुर्वन्ति ते ॥

पुत्र स्थान का स्वामी, पुत्रकारक, पुत्र स्थान को देखने वाला, पुत्र स्थान में स्थित ये चारों दुष्टस्थान ६।८।१२ के स्वामी हों वा निर्बल हों वा दुष्टस्थान ६।८।१२ में स्थित हों तो उनकी दशा के और अन्तर्दशा के समय में पुत्र नाश को कहे। यदि पुत्रेश, पुत्र कारक, पुत्र स्थानदर्शी, पुत्र स्थान स्थित, ये चारों बलवान् हों और शुभग्रह हों तो उनकी दशा और अन्तर्दशा में वे पुत्र प्राप्ति को, पुत्र सम्पत् को, स्वामी की प्रीति को करते हैं।

पुत्रेशकारकयुतेक्षकखेचराणां तत्कालजस्फुटयुतांशकराशियातौ ।
वागीशभानुतनयौ यदिगोचरेण ज़ातस्य पुत्रजनिमृत्युकरौ भवेताम् ॥

पुत्रस्थान का स्वामी, पुत्रकारक, पुत्र स्थान में स्थित, पुत्र-स्थान को देखने वाला, इन चारों के स्पष्ट राश्यादि के योग करने से जो राशि अंश हों, उस राशि अंश के समान जब गोचर में राशि भ्रमण वश से गुरु आय तब पुत्र प्राप्ति होती है। एवं उस राश्यंश के तुल्य राश्यंश में जब गोचर से शनि आये तब पुत्र मृत्यु होती है।

(उदाहरण) पंचमेश शुक्र का राश्यादि स्पष्ट ९।२७।३०।१९ पुत्र कारक स्पष्ट गुरु ८।८।५।५८ पुत्र भाव में स्थित शनि स्पष्ट १।६।१८।४ पुत्रभाव दर्शी स्पष्ट भौम ७।२९।३७।१९ एवं पुत्रभावदर्शी बुध स्पष्ट ७।२१।५५।४२ इन पांचों का योग किया तो ११।२।२७।२१ राश्यादि योग हुआ, इस योग स्पष्ट राश्यादि के समान जब गोचर से गुरु आयेगा तब पुत्र होगा और उसी योग राश्यादि के समान जब गोचर से शनि आयेगा तब पुत्र की मृत्यु होगी।

पुत्रस्थानपलग्नपस्फुटयुते राश्यंकोणे गुरौ ।

पंचमेश और लग्नेश इन दोनों के राश्यादि स्पष्टों के योग करने से जो राश्यंशादि आयें उससे नवम, पंचम स्थान में राशि भ्रमणवश से जब गोचर में गुरु आये तब पुत्र प्राप्ति होती है ।

(उदाहरण) पुत्र स्थानेश स्पष्ट शुक्र ९।२७।३०।१८ लग्नेश स्पष्ट शनि १।६।१८।४ इन दोनों का योग किया तो ११।३।४८।२२ राश्यादि योग हुआ, यहां योग राशि मीन है, अतः मीन से पंचम कर्क और नवम वृश्चिक है इस लिये गोचर से जब कर्क और वृश्चिक का गुरु होगा तब पुत्र होगा ।

'ऋतुरेतो विचारः'

ऋतुस्तु भौमो विज्ञेयो रेताः शुक्रः प्रकीर्तितः ।
ऋतुं रेता न पश्येत रेतसं न ऋतुस्तथा ।
अप्रसूतोभवेज्जातः परिणीता बहुस्त्रियः ॥

'मंगल' ऋतु संज्ञक है और 'शुक्र' रेतस् संज्ञक है । यदि रेतस् (शुक्र) ऋतु (भौम) को और ऋतु (भौम) रेतस् (शुक्र) को न देखे तो जातक बहुत विवाह वाला भी हो तो सन्तान हीन होता है ।

ऋतुरेतसोः सम्पर्काज्जायते सन्ततिर्ध्रुवम् ।
असम्पर्कात्तयोर्जातो वन्ध्यो भवति निश्चितम् ॥

ऋतु (भौम) रेतस् (शुक्र) के सम्बन्ध से निश्चय

सन्तान होती है। यदि ऋतु और रेतस् का परस्पर कुछ भी सम्बन्ध न हो तो 'जातक' निश्चय वन्ध्य होता है।

बहुसन्तति के योग

सितस्य भांशे भृगुजेन दृष्टे बहून्यपत्यानि तथा हिमांशोः।
यद्वेन्दुशुक्रेज्ययुते सुताख्ये तथेक्षिते वा विधुभार्गवाभ्याम् ॥

यदि पंचमस्थान में स्थित शुक्र की २।७ राशि तथा नवांश शुक्र से दृष्ट हो तो बहुत सन्तति होती है एवं पंचमस्थान में स्थित चन्द्रमा की राशि तथा नवांश चन्द्रमा से दृष्ट हो तो बहुत सन्तति होती है, अथवा पंचम स्थान में चन्द्र, शुक्र, गुरु, युक्त हों तो बहुत सन्तति होती है अथवा पंचम स्थान चन्द्रमा और शुक्र से दृष्ट हो तो भी बहुत सन्तति होती है।

बहुपुत्र के योग

पुत्रे राहुरविज्ञाः स्युः कारके शुभसंयुते ।
शुभेन वीक्षिते वापि बहुपुत्रं समादिशेत् ॥

पंचमस्थान में राहू, सूर्य, बुध स्थित हों और पुत्रकारक ग्रह शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो बहुत पुत्र को कहे।

पुत्रेशे शुभराशिस्थे शुभदृष्टिसमन्विते ।
कारके केन्द्रभावस्थे बहुपुत्र समादिशेत् ॥

❀ 'पाठान्तरम्' शुक्रेन्दुवर्गे शशिभेविलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथदृष्टे। पापैरयुक्ते बहुपुत्रशाली शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीन इति।

पंचमस्थान का स्वामी शुभग्रह की राशि में हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तथा पुत्रकारकग्रह केन्द्र में हो तो बहुत पुत्र कहे।

पुत्रस्थानगते राहौ मंदांशकविवर्जिते।
बहुपुत्रनरं विद्याच्छुभग्रहनिरीक्षिते ॥

शुभग्रह से दृष्ट राहु पंचमस्थान में स्थित होकर शनि की १०।११में राशि के नवांश में न हो तो मनुष्य को बहुपुत्रवान् जाने।

पुत्रस्थानाधिपे स्वोच्चे लग्नेशे शुभ संयुते।
कारके शुभसंयुक्ते बहुपुत्रं समादिशेत् ॥

पंचमस्थान का स्वामी अपनी उच्च राशि में हो और लग्नेश शुभग्रह से युक्त हो तथा पुत्रकारक ग्रह भी शुभग्रह से युक्त हो तो बहुत पुत्र को कहे।

वर्गोत्तमांशगे जीवे लग्नेशस्यांशपे शुभे।
पुत्रेशेन युते दृष्टे पुत्रयोगा इमे स्मृताः ॥

यदि गुरु वर्गोत्तमांश में स्थित हो और लग्नेश के नवांश का स्वामी शुभग्रह हो तथा वह पंचमेश से युक्त या दृष्ट हो तो ये पुत्रयोग जानने चाहियें।

वित्तेशे पुत्रभावस्थे परिपूर्णबलान्विते।
वैशेषिकांशके जीवे पुत्रयोगा इमे स्मृताः ॥

यदि द्वितीयस्थान का स्वामी परिपूर्ण बली होकर पंचमस्थान में स्थित हो और गुरु वैशेषिकांश में हो तो ये पुत्रयोग जानने चाहिएँ।

सुतभवने भृगुजीव सौम्यनाथैर्बलसहितैरविलोकिते युते वा ।
बहुसुतजननं वदन्ति सन्तःसुतभवने शवलेन चिन्त्यमेतत् ॥

यदि पंचमस्थान बलवान् शुक्र, गुरु, बुध, तथा पंचमेश से दृष्ट वा युक्त हो तो श्रेष्ठजन बहुत पुत्रों की उत्पत्तिको कहते हैं। एवं पंचमेश के बल से भी विचार करना चाहिये।

चन्द्रे सुतभंयाते पुरुषांशके ओजराशिके भवति ।
सूर्येण दृश्यमाने बहुपुत्रभाक् क्लेशसूतिश्च ॥

यदि पंचमभाव में स्थित हुआ चन्द्रमा विषम नवांश और विषम राशि में स्थित होकर सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष बहुत पुत्रवाला और क्लेश से प्रसववाला होता है।

घटभृन्मिथुनं प्रसवे सुतभावे यस्य योगमुपजातभ् ।
जनयति तस्य च बहुलान्पुत्रान् स्वल्पायुषो नीचान् ॥

जिसके जन्म समय में पंचमभाव में कुंभ वा मिथुनराशि स्थित का-योग हो उस पुरुष के अल्पायु वाले, नीचे स्वभाव वाले बहुत पुत्रों को उत्पन्न करता है।

चन्द्रराशिगते सौरे पञ्चमे बहुपुत्रवान् ॥

यदि कर्क राशि का शनि पंचमस्थान में हो तो बहुत पुत्र वाला होता है।

पुत्रप्राप्ति के योग

पुत्रस्थाने तदीशे वा गुरौ वा शुभवीक्षिते ।
शुभेन सहिते वापि पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥

पंचमस्थान वा पंचमस्थान का स्वामी गुरु वा शुभग्रह से दृष्ट हो वा शुभग्रह से युक्त हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है, इसमें संशय न करना चाहिये ।

लग्नेशे पुत्रभावस्थे पुत्रेश बलसंयुते ।
परिपूर्णबले जीवे पुत्रप्राप्तिर्न संशय ॥

लग्न का स्वामी पंचमस्थान में हो और पंचमेश बलवान् हो एवं गुरु भी परिपूर्णवली हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है, इसमें संशय न करना चाहिये ।

पुत्रस्थानगते जीवे परिपूर्णबलान्विते ।
लग्नाधिपेन वा दृष्टे पुत्र प्राप्तिर्न संशयः ॥

पंचम स्थान में स्थित हुआ गुरु परिपूर्ण बली हो अथवा लग्नेश से दृष्ट हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है, इसमें संशय न करना चाहिये ।

पुत्रस्थानगते वित्तनाथे पूर्णबलान्विते ।
दृष्टे देवेन्द्र गुरुणा पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥

पूर्ण बल से युक्त द्वितीयेश गुरु से दृष्ट होकर पंचमस्थान में स्थित हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है, इसमें संशय न करना चाहिये

लग्नपुत्राधिपौ युक्तावन्योन्यं वापि वीक्षितौ ।
क्षेत्रे परस्परस्थौ वा पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥

लग्नेश और पंचमेश दोनों एक स्थान में स्थित हों अथवा दोनों परस्पर देखते हों अथवा लग्नेश पंचमेश की राशि में हो और पंचमेश लग्नेश की राशि में हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है, इसमें संशय न करना चाहिये।

लग्नपुत्राधिपौ केन्द्रे शुभग्रह-समन्वितौ ।
कुटुम्बेशे बलाढ्ये तु पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥

लग्नेश और पंचमेश शुभग्रह से युक्त होकर केन्द्र में स्थित हों तथा द्वितीयेश बलवान् हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है, इसमें संशय नहीं करना चाहिये।

पुत्रस्थानाधिपस्यांशे शुभसंयुते ।
शुभेन वीक्षिते वापि पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥

पुत्रस्थान के स्वामी के नवांशराशि का स्वामी यदि शुभग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है, इस में संशय न करना चाहिये।

लग्नेशे दारभावस्थे भाग्येशे दारसंयुते ।
द्वितीयेशे विलग्नस्थे पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥

लग्नेश और भाग्येश सप्तमस्थान में स्थित हों तथा द्वितीयेश लग्न में स्थित हो तो पुत्र की प्राप्ति अवश्य होती है।

मृद्वंशादिसमायुक्ते पुत्रस्थानेश्वरे दृष्टे ।
गोपुराद्यंशके वापि पुत्रसिद्धिर्न संशयः ॥

यदि बलवान् पंचमेश मृदु षष्ठांशादि में युक्त हो अथवा गोपुरादि दशमवर्ग में हो तो पुत्र की सिद्धि (प्राप्ति) होती है इस में संशय न करना चाहिए।

वैशेषिकांशके जीवे पुत्रेशेऽपि तथा स्थिते ।
शुभनाथेन वा दृष्टे पुत्रे तत्प्राप्तिमादिशेत् ॥

यदि गुरु वैशेषिकांश में हो और पंचमस्थान शुभग्रह से वा पंचमेश से दृष्ट हो तो पुत्र की प्राप्ति को कहे।

दारेशग्रहसंयुक्ते नवांशभवनाधिपे ।
भाग्यवित्तविलग्नेशै दृष्टे तत्प्राप्तिमादिशेत्॥

सप्तमेश के नवांशराशि का स्वामी, भाग्येश, धनेश, लग्नेश इन तीनों से दृष्ट हो तो पुत्र की प्राप्ति को कहे।

पुत्राधिपस्थांशपतौ विलग्ने लग्नेश्वरस्थांशपतौ सुतस्थे ।
गुरुस्थितांशाधिपतौ च केन्द्रे पुत्राप्ति माहुर्मुनयो महान्तः ॥

पंचमेश के नवांश का स्वामी लग्न में स्थित हो और लग्नेश के नवांश का पंचम में स्थित हो एवं गुरु के नवांश का स्वामी केन्द्र में हो तो श्रेष्ठ मुनिजन पुत्र की प्राप्ति को कहते हैं।

पारावतांशादियुते सुतेशे भाग्येश्वरे तादृशभावयुक्ते ।
लग्नेश्वरे शोभन दृष्टियुक्ते पुत्राप्तिमाहुर्मुनयो महान्तः ॥

यदि पंचमेश और भाग्येश ये दोनों पारानवांशादि दशवर्गों में हों और लग्नेश शुभग्रह से दृष्ट हो तो श्रेष्ठ मुनिजन पुत्र की प्राप्ति को कहते हैं।

सौम्ये स्वक्षेत्रगते पञ्चमभे पुत्रभाग्भवति ।
सिंहस्थितेऽपि चैवं नवमे वा तृतीयभार्यायाम् ॥

यदि अपनी राशि ३।६ में स्थित हुआ बुध पंचम स्थान में हो तो पुत्र वाला होता है और सिंह राशि का बुध भी पंचम में हो तो भी पुत्र वाला होता है। इस प्रकार नवम में स्थित हो तो तृतीय स्त्री से पुत्र वाला होता है।

यस्य तुलाराशिस्तनयस्थाने कथंचिद्गच्छेत् ।
एकः श्रेष्ठपुत्रो यद्यपि सुभगः प्रसूयते नूनम् ॥

जिस पुरुष के पंचमभाव में तुला राशि किसी प्रकार प्राप्त हो यद्यपि उसका एकही पुत्र होता है परन्तु निश्चय से सुन्दर ऐश्वर्यवान् उत्पन्न होता है।

स्वल्पापत्य के योग

स्थिरराशिगता होरा तनयस्थानेऽपि वा स्थितो यस्य ।
संभवत्यल्पापत्यो बहुतनयः सौम्यसंदृष्टः ॥

जिसके जन्म समय में लग्न में तथा पंचम में स्थिर राशि हो वह अल्पापत्य होता है परन्तु वे दोनों राशि शुभग्रह से दृष्ट हों तो बहुत पुत्र वाला होता है।

धनस्थाने यदा क्रूरः क्रूरग्रहनिरीक्षितः ।
न पश्यति निजं क्षेत्रमल्पपुत्रस्तदा भवेत् ॥

द्वितीय स्थान में पापग्रह स्थित हो और पापग्रह से दृष्ट हो परन्तु जो पापग्रह द्वितीय स्थान को देखता हो उसकी राशि द्वितीय स्थान में न हो तो अल्प पुत्र वाला होता है।

भौमे शशिवेश्मस्थे द्वितीयपाणिगृहे सुतं विद्यात् ।
तत्रस्थेऽपि शशाङ्के स्वल्पापत्यो बहुस्त्रीकः ॥

यदि मंगल कर्क राशि में हो तो द्वितीय स्त्री से पुत्र प्राप्त होता है यदि चन्द्रमा भी कर्क में हो तो बहुत सी स्त्रियों के होने पर भी अल्पसन्तान वाला होता है।

अशुभशुभैः संमिश्रे चन्द्रगृहे पुत्रभाग्बलाधिक्यात् ।
विपरीतं फलं ब्रूयात्पापानां जन्मकालेऽपि ॥

यदि जन्म समय में कर्क राशि शुभाशुभ ग्रहों में मिश्रित हो तो बलाधिक्य से पुत्र वाला होता है परन्तु पापों के फल को विपरीत कहे ।

भार्य्याधिपे सुतस्थे भार्यानाशोऽथवाऽल्पपुत्रो वा ।
पापखगे वक्तव्यं सौम्यखेटे तु विपरीतम् ॥

यदि सप्तमेश पापग्रह पञ्चम स्थान में हो तो स्त्री का नाश अथवा अल्प पुत्रबाला होता है। यदि सप्तमेश शुभग्रह पञ्चम स्थान में हो तो विपरीत फल को कहना चाहिये अर्थात् स्त्रीवान् वा पुत्रवान् होता है।

कन्यालिवृषभसिंहाः पञ्चमगा यस्य सूतिसमये स्युः ।
तस्याल्पसुतत्वं स्याद्ग्रहरहिते पुत्रशोकभाग्भवति ।।

जिसके जन्म समय में कन्या, वृश्चिक, वृष, सिंह, ये चार राशियां पञ्चम स्थान में हों तो उसकी अल्प सन्तान होती है यदि उक्त राशि ग्रह रहित हों तो पुत्रशोक वाला होता है ।

द्वितीयादि स्त्री से पुत्र प्राप्ति के योग

पञ्चमे पापसंयुक्ते गुरोः पञ्चमगः शनिः ।
कलत्रान्तरे पुत्रलाभं कलत्रत्रयभाग्भवेत् ।।

पञ्चम स्थान में पापग्रह हों और गुरु से पञ्चम स्थान में शनि हो तो दूसरी स्त्री से पुत्र लाभ होता है और वह तीन स्त्री वाला होता है ।

कन्या प्रजा के योग

शुक्रेन्दु वर्गेण युते सुताख्ये युक्तेक्षिते वा भृगुचन्द्रमोभ्याम् ।
भवन्ति कन्याः समराशिवर्गे पुत्रश्च तस्मिन्विषमाभिधाने ।।

यदि पञ्चम स्थान में शुक्र और चन्द्रमा का वर्ग हो अथवा पञ्चम स्थान शुक्र चन्द्रमा से युक्त वा दृष्ट हो अथवा पञ्चम स्थान में समराशि वा सम वर्ग हो तो कन्या होती हैं । यदि पञ्चम स्थान में विषम राशि वा विषम वर्ग हो तो पुत्र होते हैं ।

चेत्पञ्चमर्क्षे समराशिवर्गे बुधेन वा सूर्यसुतेन युक्ते ।
सितेन शीतद्युतिनेक्षिते वा कन्याप्रजः स्यान्मनुजो नितान्तम् ॥

यदि पञ्चम स्थान में समराशि वा सम वर्ग हो और वह बुध से या शनि से युक्त हो और शुक्र से या चन्द्रमा से दृष्ट हो तो मनुष्य निरन्तर कन्या प्रजा वाला होता है ।

चन्द्रे सुतभं याते रविगेहे दारिकाबहुत्वं स्यात् ।
कन्यायां हिमरश्मौ तथैव वाच्यं तु हिवुके वा ॥

यदि सिंह राशि का चन्द्रमा पञ्चम स्थान में हो तो बहुत पुत्रियों वाला होता है । अथवा कन्या राशि का चन्द्रमा पञ्चम में या चतुर्थ स्थान में हो तो भी बहुत पुत्रियों वाला होता है ।

कन्या वृषो मृगो वा येषां सुतभागमागतो नृणाम् ।
कुर्युः कन्यानामुत्पत्तिं पुत्रग्रहवीक्षिताः पुत्रवान् ॥

जिन मनुष्यों के कन्या, वृष, मकर, राशि पञ्चम स्थान में हो उनके कन्याओं की उत्पत्ति को करते हैं। यदि पञ्चम स्थान में स्थित उक्त राशियां पुरुष ग्रहों से दृष्ट हों तो पुत्र वाला होता है ।

इन्दोर्वेश्मनि जीवे पुत्रस्थे दारिकाबहुत्वं स्यात् ।
सौम्येऽल्पसुतत्वं स्याच्छुक्रे बहुपुत्रभाक् तृतीयभार्यायाम् ॥

कर्कराशि का गुरु पञ्चम स्थान में हो तो बहुत कन्या वाला होता है तथा कर्क राशि का बुधपञ्चम में हो तो अल्प पुत्र वाला होता है एवं

कर्क राशि का शुक्र पञ्चम स्थान में हो तो तृतीय स्त्री से बहुत पुत्र वाला होता है।

लाभस्थितावर्ककुजौ सिताढ्यौ यद्वा खलः स्त्रीग्रहसंयुतश्चेत्।
जीवन्ति पुत्र्यो वहुलास्तदानीं न पुत्रसौख्यं सह मानवस्य ॥

यदि शुक्र से युक्त सूर्य, भौम लाभ स्थान में हों अथवा स्त्री ग्रह युक्त पापग्रह एकादश स्थान में हों तो मनुष्य की बहुत कन्या जीवित रहती हैं और पुत्र का सुख नहीं होता है।

विलम्ब तथा कालान्तर में पुत्रजन्म के योग

भूमितनुजे यदि लग्नसंस्थे रन्ध्रे शनौ पञ्चमगे रवौ वा
पुत्रादिलाभं मुनयो वदन्ति कालान्तरे शोभनदृष्टियोगात्।
लग्ने शनौ देवगुरौ तु रन्ध्रे व्यये कुजे पुत्रजनिश्चिरेण ॥

यदि भौम लग्न में हो और अष्टम स्थान में शनि तथापंचम स्थान में सूर्य हो एवं उक्त स्थानों में स्थित भौमादिग्रह से दृष्ट वा युक्त हों तो मुनिजन कालान्तर में पुत्रलाभ को कहते हैं। अथवा लग्न में शनि तथा अष्टम में गुरु और द्वादश में भौम हो तो बहुत काल तक पुत्रजन्म होता है।

यदि तु बहुग्रहसहिते लग्ने लाभस्थिते निशानाथे।
पूर्णे गुरुसितसंस्थैः पापैः पुत्रः कालान्तरे भवति ॥

यदि लग्न में बहुत ग्रह हों और पूर्ण चन्द्रमा लाभस्थान में हो तथा गुरु शुक्र से पाप ग्रह युक्त हों तो कालान्तर में पुत्र होता है।

विलग्नस्थे धरासूनौ निधनस्थे दिवाकरे ।
सुखे वा शुभसंदृष्टे पुत्रः कालान्तरे भवेत् ॥

लग्न में मंगल हो तथा अष्टम में सूर्य हो और सुखभाव शुभग्रह से दृष्ट हो तो कालान्तर में पुत्र होता है ।

लग्ने दिनकृत्तनये अष्टमसंस्थे गुरौ च यदि ।
भौमे पञ्चमगऽल्पसुतर्क्षे पुत्रः कालान्तरे भवति ॥

लग्न में मंगल हो तथा अष्टम स्थान में सूर्य हो तथा मंगल अल्प प्रजा वाली राशि में स्थित होकर पंचम भाव में हो तो कालान्तर में पुत्र होता है ।

लग्नाधिपे कुजे स्वोच्चे रन्ध्रे मन्दयुते रवौ ।
शुभदृष्टिसमायोगे चिरात्पुत्रमुपैति सः ॥

लग्न का स्वामी मंगल हो और वह अपनी उच्चराशि मकर का हो तथा अष्टम स्थान में शनि से युक्त सूर्य हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो कालान्तर में पुत्र प्राप्त होता है ।

लग्ने मन्दे गुरौ रन्ध्रे व्यये भौमसमन्विते ।
शुभदृष्टे स्वतुङ्गे वा चिरात्पुत्रमुपैति सः ॥

लग्न में शनि, अष्टम में गुरु, व्यय में भौम हो और शुभग्रह से दृष्ट हो या अपनी उच्चराशि में हो तो वह कालान्तर में पुत्र को प्राप्त होता

लग्ने सौम्ये धने पापे तृतीये पापखेचरे ।
पुत्रेशे शुभराशिस्थे चिरात्पुत्रमुपैति सः ॥

लग्न में शुभ ग्रह हो और द्वितीय में पाप ग्रह हो एवं पंचमेश शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो वह कालान्तर में पुत्र को प्राप्त करता है।

पुत्रस्थाः मन्दजीवज्ञाः लग्ने पुत्राधिपे शुभे ।
पुत्रेशे शुभराशिस्थे चिरात्पुत्रमुपैति सः ॥

यदि पंचम स्थान में शनि, गुरु, बुध स्थित हों, पंचमेश शुभग्रह की राशि में स्थित होकर लग्न में हो तो वह कालान्तर में पुत्र को प्राप्त करता है।

सुते राह्वर्कशुक्रेज्याः शुभर्क्षे शुभवीक्षिते ।
पुत्रेशे शुभराशिस्थे चिरात्पुत्रमुपैति सः ॥

पंचम स्थान में स्थित शुभग्रह की राशि में स्थित हुए राहु, सूर्य, शुक्र गुरु शुभग्रह से दृष्ट हों तथा पंचमेश शुभग्रह की राशि में हो तो कालान्तर में पुत्र को प्राप्त होता है।

पुत्रस्थानं गते तदीशे भृगुसंयुते ।
द्वात्रिंशे त्रयस्त्रिंशे वत्सरे पुत्रलाभकृत् ॥

पंचम स्थान में गुरु हो और पंचमेश गुरु से युक्त हो तो ३२ या ३३ वें वर्ष में पुत्र का लाभ होता है।

सुतेशे केन्द्रभावस्थे कारकेण समन्विते ।
षट्त्रिंशे त्रिंशमब्दे च पुत्रोत्पत्तिं विनिर्दिशेत् ॥

यदि पंचमेश पुत्रकारक से युक्त होकर केन्द्र १।४।७।१० में हो ३६ वें या ३० वें वर्ष में पुत्र की उत्पत्ति को कहे।

लग्नाद्भाग्यगते जीवे जीवाद्भाग्यगते भृगौ ।
लग्नेशे भृगुसंयुक्ते चत्वारिंशे सुतं लभेत् ।।

लग्न से नवम स्थान में गुरु हो और गुरु से नवम स्थान में अर्थात् लग्न से पंचम स्थान में शुक्र से युक्त लग्नेश हो तो ४०वें वर्ष में पुत्र को प्राप्त करता है ।

लग्ने दिनकृत्तनये अष्टमसंस्थे गुरौ च यदि ।
भौमे पञ्चमराशौ पुत्रं कालान्तरे विद्यात् ।।

यदि लग्न में शनि और अष्टम में गुरु तथा पंचम में मंगल हो तो कालान्तर में पुत्र की प्राप्ति को जाने ।

पापो वा वासवेज्यः सुखभवनगतः पंचमे चाऽष्टमे वा,
शीतांशुः सन्ततेः स्यात्खगुणमितसमाः तुल्य एक प्रबन्धः ।

यावन्तः पापखेटास्तनयगृहगताः सौम्यदृष्ट्या वियुक्ता-
स्तावद्वर्षप्रमाणो नियतमिह भवेत्सन्ततेर्वा विलम्बः ।।

यदि चतुर्थ स्थान में पाप ग्रह या गुरु स्थित हो और पंचम स्थान में या अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो तो ३० वर्ष तक सन्तान का प्रतिबन्ध (विलम्ब) रहता है । जितने पाप ग्रह पंचम स्थान में स्थित होकर शुभ ग्रहों की दृष्टि से रहित हों उतने ही वर्षों के प्रमाण निश्चय से सन्तान होने का विलम्ब होता हैं ।

कष्ट से पुत्र-प्राप्ति के योग

भाग्येशो मूर्त्तिवर्त्ती च सुतेशी नीचगो यदि ।
सुते केतुबुधौ स्यातां सुतं कष्टाद्विनिर्दिशेत् ।।

यदि नवमेश लग्न में हो तथा पंचमेश नीचराशि में हो और पंचम स्थान में केतु, बुध हो तो कष्ट से पुत्र की प्राप्ति को कहे ।

षडद्रित्रयसंस्थोऽपि नीचे वाऽप्यरिसंस्थितः ।
पापाक्रान्ते सुतस्थाने पुत्रं कष्टाद्विनिर्दिशेत् ।।

यदि पंचमेश दुष्ट स्थान ६।८। १२ स्थित हो या नीच में या शत्रु राशि में हो तथा पंचम स्थान में पाप ग्रह हो तो कष्ट से पुत्र प्राप्ति कहे ।

दत्तपुत्र के योग

दुःस्थौ विलग्नसुतपौ समुपैति पुत्रं दत्तात्मजं च शुभखेचरवीक्षितौ ।
चेत्-तद्भावराशियुतकारकवर्गमूलाद्गृह्णाति दत्ततनयं परतस्तु खेटान्

यदि लग्नेश तथा पंचमेश शुभग्रहों से दृष्ट होकर दुष्टस्थान ६।८।१२ में हों तो मनुष्य दत्तपुत्र को प्रप्त होता है । लग्न और पंचम में जो राशि हो वा पुत्र कारकग्रह के वर्गमूल से वा अन्य बली ग्रह से मनुष्य उसके गुण धर्मानुरूप दत्तपुत्र को ग्रहण करता है।

चन्द्रदृष्टियुतो मान्दिर्भानोः पुत्रसमन्वितः ।
तद्वीक्षणयुतो वापि दत्तपुत्रो भवेन्नरः ॥

यदि गुलिक चन्द्रमा से दृष्ट हो और शनि से युक्त या दृष्ट हो तो मनुष्य दत्तपुत्र वाला होता है ।

पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे मन्दक्षेत्रेऽथवा यदि ।
मान्दिमन्दयुते दृष्टे तदा दत्तादयःसुताः ॥

यदि पंचम स्थान में बुध की ३।६ राशि हो अथवा शनि की १०।११ राशि हो और गुलिक शनि से दृष्ट हो तो दत्त पुत्र होते हैं ।

पुत्रस्थानगतः कश्चित्पूर्णबलान्वितः ।
अदृष्टः पुत्रनाथश्चेत्तदा दत्तादयः सुताः ॥

यदि कोई पूर्णबली ग्रह पंचम स्थान में स्थित हो परन्तु पंचमेश से दृष्ट न हो तो दत्तपुत्र होते हैं ।

पापक्षेत्रगते चन्द्रे पुत्रेशे धर्मराशिगे ।
दत्तपुत्रस्य संप्राप्तिर्लग्नेशस्तु त्रिकोणगः ॥

यदि चन्द्रमा पाप गह की राशि में स्थित हो तथा पंचमेश नवम स्थान में हो और लग्नेश त्रिकोण ५।९ में हो तो दत्तपुत्र की प्राप्ति होती है ।

युग्मोदये पुत्रनाथश्चतुर्थस्थानगोऽपि वा ।
मन्दांशकसमारूढो दत्तपुत्रो भविष्यति ॥

यदि पंचमेश समराशि २।४।६।८।१०।१२ में स्थित हो या चतुर्थ स्थान में हो वा शनि के नवांश में हो तो दत्तपुत्र होगा।

युग्मांशे भानुजांशे वा पुत्रेशाऽर्केन्दुजान्वितः।
दत्तपुत्रस्य संप्राप्तिस्तस्मिन्योगे भविष्यति ॥

यदि पंचमेश सम राशि के नवांश में वा शनि के नवांश में हो और सूर्य, बुध से युक्त हो तो उस योग में दत्त पुत्र की प्राप्ति होगी।

पुत्रस्थाने कुजे मन्दे बुधक्षेत्रे विलग्नपे।
बुधदृष्टे युते वापि तदा दत्तादयः सुताः॥

पंचम स्थान में मंगल, शनि स्थित हों तथा लग्न का स्वामी बुध की राशि ३।६ में स्थित हो या बुध से दृष्ट युक्त हो तो दत्तपुत्र होते हैं।

पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे बुधसंस्थे वीक्षितेऽपि वा।
लग्नाधिपे शनौ वापि दत्तपुत्रा भवन्ति हि॥

पंचम स्थान में बुध की ३।६ राशि हो और वह बुध से युक्त या दृष्ट हो तथा लग्नेश शनि हो तो दत्त पुत्र होते हैं।

पुत्रेशे मन्दसंयुक्ते कुजे सौम्यनिरीक्षिते।
लग्नाधिपे बुधांशे वा दत्तपुत्राः भवन्ति हि॥

पंचमेश शनि से युक्त हो तथा मंगल पर बुध की दृष्टि हो किंवा लग्नेश बुध के नवांश में हो तो दत्त पुत्र होते हैं।

कामेशे लाभभावस्थे पुत्रेशे शुभसंयुते ।
पुत्रे मन्दे बुधे वापि दत्तपुत्रा भवन्ति हि ।।

सप्तमेश लाभ में हो तथा पंचमेश शुभ ग्रह से युक्त हो और पंचम स्थान में शनि या बुध हो तो दत्त पुत्र होते हैं।

लग्नाधिपे भृगौ स्वोच्चे पुत्रे मन्दसमन्विते ।
कारके बलसंयुक्ते दत्तपुत्रात्तु सन्ततिः ।।

लग्न का स्वामी शुक्र हो और वह अपनी उच्चराशि मीन में स्थित हो तथा पंचम में शनि स्थित हो एवं पुत्रकारकग्रह बल से युक्त हो तो दत्त पुत्र से संन्तान वाला होता है।

पुत्रस्थानाधिपे चन्द्रे लग्ने पुत्रे शनैश्चरे ।
परिपूर्णबले जीवे दत्तपुत्रात्सुतीभवेत् ।।

यदि चन्द्रमा पंचम स्थान का स्वामी होकर लग्न में हो तथा पंचम में शनि हो और गुरु पूर्ण बली हो तो दत्तपुत्र से सन्तान वाला होता है।

पुत्राधिपे रवौ लग्ने पुत्रस्थौ शनिसोमजौ ।
पुत्राधिपे बलयुते दत्तपुत्रात्सुतीभवेत् ।।

यदि सूर्य पंचमेश होकर लग्न में हो तथा पंचम में शनि बुध हो और पंचमेश बल से युक्त हो तो दत्तपुत्र से सन्तान वाला होता है।

लग्नाधिपे बुधे पुत्रे कुजदृष्टिसमन्विते ।
कारके लाभराशिस्थे दत्तपुत्रात्सुती भवेत् ॥

यदि बुध लग्नेश होकर पंचम स्थान में हो और वह भौम से दृष्ट हो तथा पुत्रकारक ग्रह लाभ स्थान में हो तो दत्तपुत्र से सन्तान वाला होता है।

लग्नाधिपे गुरौ पुत्रे शनिदृष्टिसमन्विते ।
पुत्रेशे भौमराशिस्थे दत्तपुत्रा भवन्ति हि ॥

यदि गुरु लग्नेश होकर पंचम स्थान में हो और शनि की दृष्टि से युक्त हो तथा पंचमेश शनि की राशि में हो तो दत्तपुत्र होते हैं।

❀मन्दांशकस्थिता: खेटा: शुक्लपक्षबलाधिक:: ।
गुरुर्यदि सुतस्थाने दत्तपुत्रेण सन्तति: ॥

यदि शुक्ल पक्ष में जन्म हो तथा बलवान् ग्रह शनि के नवाँश में स्थित हो और गुरु पचम स्थान में हो तो दत्तपुत्र से संतान वाला होता है।

मन्दस्य राशि: सुतभावसंस्थो मन्देन युक्त: शशिनेक्षितश्च ।
दत्तात्मजाप्ति: शशिवद्बुधेऽपि क्रीत: सुतस्तस्य नरस्य वाच्य: ॥

❀'पाठान्तरम्' मन्दांशके सुताधीश: शुक्लपक्षे बलाधिक: । गुरुर्यदि सुखस्थाने दत्तपुत्रेण सन्ततिरिति । 'पाठान्तरं वा' मन्दांशके सुते चन्द्र: शुक्लपक्षे बलाधिक: । गुरुर्यदि सुखस्थाने दत्रपुत्रेण सन्ततिरिति । "

यदि पंचस्थान में शनि की राशि हो और वह शनि से युक्त होकर चन्द्रमा से दृष्ट हो तो दत्तपुत्र की प्राप्ति होती है । एवं अपनी राशि का शनि पंचम स्थान में स्थित होकर बुध से दृष्ट हो तो उस मनुष्य का क्रीत पुत्र कहना चाहिये ।

पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे मन्दक्षेत्रेऽथवा भवेत् ।
मन्दमान्दियुते दृष्टे तदा दत्तादयःसुताः ॥

पंचमस्थान में बुध की ३।६ राशि हो अथवा शनि की १०।११ राशि हो और शनि गुलिक से युक्त दृष्ट हो तो दत्त पुत्र होते हैं ।

पुत्रेशे भाग्यभावस्थे भाग्येशे कर्मराशिगे ।
पुत्रे मन्दजदृष्टे तु दत्तपुत्रेण सन्ततिः ॥

पंचम स्थान का स्वामी नवम भाव में हो और नवम भाव का स्वामी दशम स्थान में हो तथा पंचम भाव गुलिक से दृष्ट हो तो दत्तपुत्र से सन्तान वाला होता है ।

पंचमे यद्गृहे युक्ते तदीशे व्ययराशिगे ।
लग्नेशो दुर्बलो यस्य दत्त पुत्रभवोदयः ॥

पंचम स्थान में स्थित राशि का स्वामी व्ययस्थान में हो और जिसका लग्नेश निर्बल हो उसको दत्त पुत्र की प्राप्ति होती है ।

दत्तपुत्र ग्रहण करने के पश्चात् द्वितीयभार्या से पुत्रप्राप्ति के योग

मन्दांशे पुत्रराशीशः स्वराशौ गुरुभार्गवौ ।
पूर्वं दत्त सुतप्राप्तिः परं नार्याः पुनः सुतः ।।

पत्र स्थान का स्वामी शनि के नवांश में हो और गुरु शुक्र अपनी राशि में हों तो प्रथम दत्त पुत्र की प्राप्ति होती है पश्चात् स्त्री से पुनः पुत्र होता है ।

पौनर्भव पुत्र के योग

मन्दवर्गगते चन्द्रे मन्दयुक्ते तु पंचमे ।
भानुभार्गवसंदृष्टे पुत्रः पौनर्भवो भवेत् ।।

चन्द्रमा शनि के वर्ग में स्थित हो और शनि पंचम में होकर सूर्य शुक्र से दृष्ट हो तो पौनर्भव पुत्र होता है ।

(द्वितीय बार) विवाहित स्त्री से

सौरस्य भांशे सुतभेऽब्जयुक्ते वा मन्दयुक्ते शशिना प्रदृष्टे ।
पुनर्भवासंभवदत्तकश्च पुत्रः प्रवाच्यो मनुजस्य नूनम् ।।

यदि पंचम स्थान में शनि राशि या नवांश हो और उस में चन्द्रमा स्थित हो अथवा शनि स्थित हो और वह चन्द्रमा से दृष्ट हो तो मनुष्य का पुनर्भवा स्त्री (द्वितीय वार विवाहित) से उत्पन्न दत्तपुत्र कहना चाहिये ।

मन्दस्थवर्गे सुतभावसंस्थे निशाकरस्थेऽपि च वीक्षितेऽस्मिन् ।
दिवाकरेणोशनसा नरस्य पुनर्भवास भवसूनुलब्धिः ।।

यदि पंचम भाव में शनि का वर्ग हो और उसमें चन्द्रमा स्थित हो वह सूर्य शुक्र से दृष्ट हो तो मनुष्य को पुनर्भवा स्त्री से उत्पन्न पुत्र की प्राप्ति होती है ।

क्रीत पुत्र के योग

तथैव मन्दे शशि युक्ते क्रीतः सुतः स्यान्मनुजस्य नूनम् ।

यदि शनि अपनी राशि या अपने नवांश में स्थित होकर पंचम स्थान में हो और चन्द्रमा तथा बुध से युक्त हो तो मनुष्य का क्रीत (खरीदा हुआ) पुत्र होता है ।

कानीन पुत्र के योग

व्यये भास्करसंदृष्टे वर्गे भास्कर चन्द्रयोः ।
चन्द्रसूर्ययुते वापि कानीनोऽयं भवेन्नरः ।।

यदि व्ययस्थान सूर्य से दृष्ट हो और व्ययस्थान में सूर्य चन्द्रमा का वर्ग हो अथवा व्यय में चन्द्र सूर्य स्थित हों तो वह मनुष्य कानीन (कन्या से उत्पन्न) पुत्र वाला होता है ।

※चन्द्रो यदार्कसक्तः कलत्रसंस्थस्तथैव पंचमे गेहे ।
त्रिदृष्टोप्यर्थसहितः कानीनः संभवेत्पुत्रः ।।

※'पाठान्तरम्' चूडायादार्कसत्वात्कलाहतस्यैव पंचमे गेहे । रविदृष्टेऽप्यथ सहिते कानीनः संभवति पुत्र इति ।

यदि चन्द्रमा सूर्य से युक्त होकर सप्तम स्थान में स्थित होकर सूर्य से दृष्ट या युक्त हो तो कानीन पुत्र होता है ।

दासीजन्य पुत्र के योग

सुते सितांशे च सितेन दृष्टे बहून्यपत्यानि विधोरपीदम् ।
दासी भवान्यात्मजभावनाथे यावन्मितेंऽशे शिशुसंमितिःस्यात् ॥

यदि पंचम भाव में शुक्र का नवांश हो और शुक्र से दृष्ट हो तो दासी से या रखेल स्त्री से उत्पन्न बहुत सन्तान होती है । एवं पंचम भाव में चन्द्रमा का नवांश हो और चन्द्रमा से दृष्ट हो तो भी दासी से या रखेल स्त्री से उत्पन्न बहुत संतान होती है । पंचम भाव के स्वामी के नवांश संख्या के तुल्य सन्तान की संख्या होती है ।

परजात के योग

लग्नेश भाग्येश सुखेशयुक्ते षष्ठाधिपे स्यात्परजात एव ।
तदंशनाथेन युते तदीशे पापेक्षिते स्यात्परजात एव ॥

यदि षष्ठभाव का स्वामी, लग्न, नवम, चतुर्थ, इन तीन स्थानों के स्वामियों से युक्त हो तो परपुरुष से उत्पन्न होता है । अथवा लग्न, नवम, चतुर्थ, इन तीन स्थानों के स्वामियों के नवांशेश से युक्त होकर षष्ठ स्थान का स्वामी पापग्रह से दृष्ट हो तो परपुरुष से उत्पन्न होता है ।

पापान्तरे मातृगृहे तदीशे तत्कारके वा ऽशुभदृष्टियुक्ते ।
लग्नेश्वराद्धीनबले शुभेशे जातस्तदानीं परजात इव ॥

चतुर्थभाव , चतुर्थ, चतुर्थकारक, पापग्रहों के मध्य में स्थित होकर पापग्रहों से दृष्ट हो और लग्नेश की अपेक्षा नवमेश हीन बली हो तो इस योग में उत्पन्न हुआ जातक परपुरुष से उत्पन्न होता है।

न वीक्ष्यते तद्गुरुणा विलग्नं निशाकरो वा गुरुणा न दृष्टः ।
दिवाकरेणापि युते शशांके सपापचन्द्रे रविणा तथैव ॥

यदि लग्न वा चन्द्रमा गुरु से दृष्ट न हो अथवा सूर्य से युक्त चन्द्रमा हो और गुरु से दृष्ट न हो अथवा पाप युक्त चन्द्रमा और सूर्य एक स्थान में हों अथवा पृथक् २ हों और गुरु से दृष्ट न हों तो परपुरुष से उत्पन्न होता है।

लग्नं शशाङ्कं सुरराजमंत्री न वीक्षते नैकगृहस्थितौ वा ।
न जीववर्गेण युतं तदानीं जातं वदेदन्यसमागमेन ॥

यदि लग्न वा चन्द्रमा को गुरु न देखे अथवा लग्न वा चन्द्रमा और गुरु एक राशि में न हों अथवा लग्न वा चन्द्रमा गुरु के वर्ग से युक्त न हो तो अन्य पुरुष के समागम से जातक की उत्पत्ति कहे।

परस्परक्षेत्रगतौ तु होरारसातलेशौ यदि जन्मलग्नात् ।
लग्नेश्वरौ वा हिबुकेश्वरो वा ध्वजादियुक्ते जननं परेण ॥

जन्म लग्न से लग्न तथा चतुर्थ स्थान के स्वामी परस्पर एक दूसरे की राशि में हों अर्थात् लग्नेश चतुर्तेश की राशि में हो अथवा लग्नेश वा सुखेश केतु वा राहु से युक्त हो तो अन्य पुरुष से उत्पन्न होता है।

पापे शुभे मातृगृहे सपापे लग्नेश्वरे हीनबले सपापे।
परांशकादौ सुखपे तदानीं जातो नरः स्यात्परजात एव ॥

नवम और चतुर्थस्थान में पापग्रह स्थित हों तथा निर्बल लग्नेश पापयुक्त हो एवं सुखेश शत्रु नवांशादि में स्थित हो तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य पर पुरुष से उत्पन्न होता है।

सुतेशे नरराशिस्थे राहुणा सहितः शशी।
पुत्रस्थानंगते मन्दे परजातं वदेच्छिशुम् ॥

पंचम स्थान का स्वामी पुरुष राशि में स्थित हो और चन्द्रमा राहु से युक्त हो तथा पंचम स्थान में शनि हो तो बालक को पर से उत्पन्न कहे।

सुतेशो राहुसंयुक्तः सुतस्थाने समाश्रितः।
न वीक्ष्यतेऽब्जो गुरुणा परजातो भवेन्नरः ॥

राहु से युक्त पंचमेश पंचमस्थान में हो और चन्द्रमा को गुरु न देखे तो वह पर मनुष्य से उत्पन्न होता है।

लग्नाद् द्वाशगश्चन्द्रो लग्नादष्टमगो गुरुः।
पापयुक्तौ न सद दृष्टौ यन्यनीज न संशयः ॥

लग्न से द्वादशस्थान में चन्द्रमा हो और लग्न से अष्टम स्थान में गुरु हो और दोनों चन्द्रमा गुरु पाप युक्त हों और शुभदृष्ट न हों तो पर पुरुष से उत्पन्न होता है ।

तुर्यश्चन्द्रे क्षितः खेटैः शत्रुभिर्वा युतेक्षितः ।
परेण जायते बालो निश्चितं च यथा पशुः ॥

चतुर्थस्थान चन्द्रमा से दृष्ट हो तथा शत्रु ग्रहों से युक्त-दृष्ट हो तो निश्चय से बालक पशु के तुल्य अन्य पुरुष से उत्पन्न होता है ।

त्रिषष्ठ द्विसुताधीशा यदा लग्ने स्थितास्तदा ।
तथापि परजातः स्याद्भृत्याद्यन्यसुतादिभिः ॥

जब तृतीय, षष्ठ, द्वितीय, पंचम इन स्थानों के स्वामी लग्न में स्थित हों तो दासादि से वा अन्य पुत्रादि से बालक उत्पन्न होता है ।

लग्ने क्रूरोऽस्तगः सौम्यः कर्मस्थो रविनन्दनः ।
अस्मिन्योगे च यो जातः जायते वर्णसंकरः ॥

यदि लग्न में क्रूरग्रह स्थित हो और सप्तमस्थान में शुभग्रह हो तथा दशम स्थान में शनि हो तो इस योग में उत्पन्न जातक वर्णसंकर होता है ।

मूर्तौ चेन्दुश्च दुश्चिक्ये भूमिसूनौ तु भार्गवे ।
यदा पञ्चमराशौ हि तदापि परबालकः ॥

यदि लग्न में चन्द्रमा हो और तृतीय स्थान में भौम हो एवं पंचम स्थान में शुक्र हो तो परपुरुष से बालक उत्पन्न होता है।

ग्रहराजे स्थिते लग्ने चतुर्थे सिंहिकासुतः।
स्वदेवरात्सुतोत्पत्तिर्जाता तस्या न संशयः ॥

यदि लग्न में सूर्य हो और चतुर्थ में राहु हो तो अपने देवर से उस के पुत्र की उत्पत्ति होती है, इस में संशय नहीं करना चाहिये।

लग्ने राहुधरापुत्रौ सप्तमे चन्द्रभास्करौ।
नीचेन जायते बालो यदि राज्ञी भवेदपि ॥

लग्न में राहु तथा मंगल स्थित हों और सप्तम स्थान में चन्द्रमा तथा सूर्य स्थित हों तो यदि राजपत्नी भी हो तो बालक नीच से उत्पन्न होता है।

सूर्ययुक्तेन्दुलग्नस्थे सप्तमे भौमभानुजौ।
अस्मिन्योगे यदा जन्म परेणैव हि जायते ॥

सूर्य से युक्त चन्द्रमा लग्न में हो और सप्तम स्थान में भाम शनि हों तो इस योग में जन्मने वाला दूसरे से उत्पन्न होता है।

केन्द्रं शून्यं भवेद्यस्य सोऽपिजातः परेण हि।
द्विषष्ठाष्टमरिःफेषु ग्रहास्तिष्ठन्ति यस्य सः ॥

परजातो भवेत्सत्यमन्यत्रापि च संस्थितः ।
एकस्थाने यदाऽस्तेशलग्नेशौ सोऽपि जारजः ॥

जिस के चारों केन्द्रों में ग्रह न हो वह जारज होता है । जिसके द्वितीय, षष्ठ, अष्टम, द्वादश स्थान में ग्रह स्थित हों तो अन्यत्र स्थित होने पर भी वह पुरुष सत्य ही जारज होता है। जिसके सप्तमेश और लग्नेश एक स्थान में में हों वह भी जारज होता है।

द्विशत्रू चैककेन्द्रस्थावन्यग्रहविवर्जितौ ।
तदापि परजातः स्यात्स्थिरलग्ने विशेषतः ॥

यदि अन्य ग्रहों से रहित हो कर दो शत्रु ग्रह एक केन्द्र में हों तथा विशेषतया स्थिरलग्न हों तो पर पुरुष से उत्पन्न होता है।

चतुर्थे दशमे लग्ने पापयुग्विधुसंस्थितः ।
लग्नेशेनेक्षितं लग्नं तदापि परबालकः ॥
लग्नेशे संस्थिते लग्ने परजातः कदाचन ।

यदि चतुर्थ, दशम, लग्न में पाप युक्त चन्द्रमा स्थित हो और लग्नेश लग्न को देखे तो भी बालक पर पुरुष से उत्पन्न होता है अथवा लग्नेश लग्न में हो तो भी जारज होता है।

नीचस्थिताश्चन्द्रदिवाकरेज्याः कुर्वन्त्यमी जन्मनि जारजातम् ।
लग्नेऽथवा सूर्यसुतो न दृष्टाः सौम्यैश्च शुक्रोदयशीतभासः ॥

यदि जन्म समय में चन्द्र, सूर्य, गुरु नीचराशि में स्थित हों त जारजात को उत्पन्न करते हैं अथवा लग्न में शनि हो तथा शुक्र लग्न, चन्द्रमा ये तीनों शुभग्रहों से दृष्ट न हों तो भी जारज होता है।

नवमस्थो गुरुर्यत्र धने चन्द्रोऽर्कमण्डले ।
अन्यजातः स विज्ञेयो योगेऽस्मिन्पतते ध्रुवम् ॥

जहां नवम स्थान में गुरु हो और चन्द्रमा धन स्थान में होकर सूर्य मण्डल में हो तो इस योग में उत्पन्न बालक निश्चय से जारज जानना चाहिये।

चन्द्रारभानवः षष्ठे गुरुः पञ्चमगो यदि ।
योगेऽस्मिन्नात्र संदेहश्चान्यजातः स उच्यते ॥

यदि चन्द्र, भाम सूर्य, षष्ठ स्थान में हों और गुरु पंचम स्थान में हो तो इस योग में जो उत्पन्न हो वह जारजात कहा है इस में संदेह नहीं करना चाहिये।

स्वातौ द्वितीयारविवार योगे सोमात्मजे सप्तमिरेवतीषु।
स्याद्द्वादशीवासवमन्दवारे जारेण जातं प्रवदन्ति वालम् ॥

यदि स्वाति नक्षत्र में द्वितीया तथा रविवार का योग हो और बुधवार सप्तमी तथा रेवती हो एवं द्वादशी-धनिष्ठा का योग शनिवार में हो तो इन योगों में उत्पन्न बालक को जार से उत्पन्न कहते हैं।

अर्यम्णभे स्थाद्रविवासरेऽष्टमी विश्वे चतुर्थी गुरुवासरे च ।
अहिर्बुध्न्येभे भौमदिने चतुर्दशी स्याज्जांरजातस्य च जन्मकाले ॥

उत्तराफाल्गुनी रविवार अष्टमी तिथि तथा उत्तराषाढा नक्षत्र में चतुर्थी तिथि गुरुवार एवं उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र, मंगलवार चतुर्दशी तिथि हो तो ये उक्त तीनों योग जारज के जन्म समय में होते हैं ।

भग्नपादर्क्ष संयोगाद्द्वितीया द्वादशी यदि ।
सप्तमी चार्कमन्दारे जारजो जायते ध्रुवम् ॥

भग्नपादीय नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा,) के संयोग से द्वितीया, द्वादशी, सप्तमी तिथि, एवं सूर्य, शनि, मंगलवार इन तीनों के योगों में अर्थात् नक्षत्र, भद्रातिथि, पापवार, इन तीनों के एकत्र होने पर जो बालक उत्पन्न हो वह निश्चय से जारज होता है ।

दिनान्ते च तिथिप्रान्ते लग्नप्रान्ते प्रसूतिषु ।
वारस्यान्ते च यो जातः सोऽन्यजातः प्रकीर्त्तितः ॥

दिन, तिथि, लग्न, वार, इन चारों की समाप्ति के समय में जो प्रसव होता है वह अन्यजात कहा है ।

एकः पापो यदा लग्ने लग्नेशो वा न पश्यति ।
सूर्यः पश्यति नो लग्नमन्यजात स्तदाभवेत् ॥

यदि एक पापग्रह लग्न में हो और उस को लग्नेश न देखे तथा लग्न को सूर्य न देखे तो जारज होता है ।

जारजातभंग के योग

चन्द्रे गुरुक्षेत्रगतेऽथवा चेत्सुरेज्ययुक्ते ऽन्यगृ स्थितेऽब्जे ।
गुरोर्द्रेष्काणेऽथ नवांशके वा न जारजातस्य भवेत्प्रसूतिः ॥

चन्द्रमा गुरु की राशि में स्थित हो अथवा अन्य राशि में स्थित चन्द्रम गुरु से युक्त हो अथवा गुरु के द्रेष्काण वा नवांश में चन्द्रमा वा लग्न हो तो इन योगों में जारजातक का प्रसव नहीं होता है।

सौम्यराश्यंशगे चन्द्रे गुरुराश्यंशगेऽपि वा ।
जारजातस्य योगेऽपि न परैर्जात इष्यते ॥

यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह की राशि वा नवांश में हो अथवा गुरु की राशि वा नवांश में हो तो जारजात योग होने पर भी जारजात नहीं होता है।

जीवक्षेत्रगते चन्द्रे शुक्रे वेतरराशिगे ।
द्रेष्काणे च तदंशे वा न परैर्जात इष्यते ॥

यदि चन्द्रमा गुरु की राशि में हो और शुक्र अन्य राशि में हो अथवा चन्द्रमा गुरु के द्रेष्काण में वा नवांश में हो तो जारजात नहीं होता है।

गर्भपात के योग

नवांशकाः पञ्चमभावसंख्या यावन्मितैः पापखगैः प्रदृष्टाः ।
नश्यन्ति गर्भाः खलु तत्प्रमाणाश्चेद्वीक्षिता नो शुभखेचरैस्ते ॥

पंचम भाव में जितने नवांश स्थित हों और वे जितने पाप ग्रहों से दृष्ट हों और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो उन के तुल्य गर्भ नाश होते हैं।

पञ्चमाधीश्वरस्यांशा यावद्भिः पापखेचरैः।
वीक्ष्यते तन्मिता गर्भा विलीयन्ते शुभैः शुभाः॥

पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो तो वह नवांश राशि जितने पाप ग्रहों से दृष्ट हो उतने ही गर्भ नाश होते हैं तथा जितने शुभग्रहों से दृष्ट हों उतने ही गर्भ पुष्ट होते हैं।

पञ्चमैकादशेभौमे शननात्र निरीक्षिते।
गर्भपातभवं दुःखं मृतापत्यभयं भवेत्॥

यदि मंगल, पंचम में वा एकादश में स्थित हो कर शनि से दृष्ट हो तो गर्भपात से उत्पन्न दुःख और मृतसन्तान का भय होता है।

पुत्रे कलत्रे च भवन्ति पापा, महिसुतो मृत्युगतो यदि स्यात्।
गर्भस्रवं तस्य भवेच्च पत्न्या ग्रहप्रमाणं प्रवदन्ति धीराः॥

यदि पंचम स्थान में और सप्तम स्थान में पापग्रह स्थित हों और अष्टम स्थान में मंगल हो तो उस पुरुष की स्त्री के गर्भपात ग्रहों के समान पण्डित कहते हैं।

कर्कालिमीनांशगते सुतेऽस्ते शुक्रे तनौ सौरियुते सुखं न।
तस्यापि पत्नीं च वदन्ति वन्ध्यां गर्भस्रवां पापखगैर्मदस्थैः॥

यदि शुक्र कर्क, वृहस्पति, मीन, के नवांश में प्राप्त हो कर पंचम में वा सप्तम में स्थित हो और लग्न में शनि हो तो सन्तान का सुख नहीं होता

है। यदि सप्तम भाव में पापग्रह स्थित हों तो उस पुरुष की स्त्री को वन्ध्या और गर्भपात वाली मुनिजन कहते हैं।

सुताधीशः सुतस्थानं नेक्षितः सद्ग्रहोऽपि वा।
यदा क्रूरयुतं दृष्टं तदा गर्भच्युतिं वदेत्॥

यदि पंचम स्थान, पंचमेश से वा शुभग्रह से दृष्ट न हो और क्रूर ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो गर्भच्युति को कहे।

वन्ध्या के योग

❀नो सूते तनुगेऽर्कजे द्यूनसितेऽथो मन्दसूर्यौ द्यूने।
कर्मेंदुं न गुरुः प्रपश्यति यदा नो गर्भिणी जायते॥
दृश्येऽर्द्धे सितसूर्यजौ द्विषि विधुद्यूनेऽपि चोग्रेक्षिते।
नोसूतेऽथ रिपौ शनि क्षितिसुतौ तोयर्क्षगौ नोद्भवः॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में लग्न में शनि और सप्तम में शुक्र हो तो उस की स्त्री प्रसव रहित होती है अथवा सप्तम स्थान में शनि और सूर्य स्थित हों और गुरु दशम स्थान गत चन्द्रमा को देखे तो मनुष्य की स्त्री गर्भवती नहीं होती है। अथवा शुक्र शनि दृश्य भाग (लग्न के भोग्यांश से सप्तम

❀'पाठान्तरम्' नो सूर्ये तगुनेऽर्कजे द्यूनगते वा मन्दसूर्यौद्यून कर्मेंदुं न गुरुः प्रपश्यति यदा नो गर्भिणी जायते । दृष्येऽर्द्धे रविसूर्यजौ द्विषि विधो द्युने च चोग्रे स्थिते, नो सूतेऽथ रिपौ शनिक्षितिसुतौ तोयर्क्षगौ नोद्भवः॥

के भोग्यांश पर्यन्त) में स्थित हों और षष्ट स्थान में चन्द्रमा हो तथा सप्तम स्थान पाप ग्रह से दृष्ट हो तो उस की स्त्री प्रसवक्ती नहीं होती है अथवा जल राशि के शनि मंगल षष्ठ स्थान में हों तो उस की स्त्री प्रसववती नहीं होती है ।

शनैश्चरे विलग्नस्थे भसन्धिस्थे सिते स्मरे ।
पुत्रभावे शुभायुक्ते जातो वन्ध्यापतिर्भवेत् ।।

शनि लग्न में स्थित हो और शुक्र राशि गण्डान्त में स्थित होकर सप्तम स्थान में हो एवं पंचम भाव में शुभ ग्रह स्थित हो तो मनुष्य वन्ध्या का पति होता है ।

सुतस्थाने त्रिपापेषु त्रिपापैर्यदि वीक्षिते ।
उभौ स्त्रीपुरुषौ वन्ध्यौ विज्ञेयौ शत्रुवीक्षिते ।।

पंचम स्थान तीन पाप ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो और पंचमेश के शत्रु ग्रह से भी दृष्ट हो तो दोनों स्त्री पुरुष वन्ध्या जानने चाहिए ।

स्वर्क्षस्थितौ रन्ध्रगत यमार्को प्रष्टुः स्त्रिय संदिशतश्च वन्ध्याम् ।
छिद्रस्थितौ चन्द्रबुधौ सदोषां वा काकवन्ध्यां ददतोऽङ्गनां वै ।।

यदि द्वितीय स्थान में वा अष्टम स्थान में शनि सूर्य स्थित हों तो प्रष्टा को स्त्री की वन्ध्या (बाँझ) करते हैं । यदि चन्द्र बुध अष्टम स्थान में स्थित हों तो प्रष्टा की स्त्री को दोषयुक्त वा काकवन्ध्या कहते हैं ।

मृतप्रजां छिद्रगयोः सितेज्ययोर्गर्भस्रवां भूमिसुतेऽष्टमस्थे ।
छिद्रेश्वरे छिद्रगते बलान्विते पुष्पं नविन्दत्यवलासु गर्भदम् ।।

यदि शुक्र और गुरु अष्टम स्थान में हों तो प्रष्टा की स्त्री को मृत प्रजावाली कहते हैं एवं मंगल अष्टम स्थान में हो तो प्रष्टा की स्त्री को गर्भपात वाली करता है । यदि बलवान् अष्टमेश अष्टम स्थान में हो तो प्रष्टा की स्त्रियों में गर्भदायक पुष्प (रज) नहीं होता है ।

सूर्यार्किभौमेकतमाश्रिते भे तद्वीक्षिते सद्गृहभागयोगे ।
एषां गृहस्थे च कुजेऽल्पवीर्ये समुद्भवं कीर्त्तितमप्रजानाम् ॥

यदि पंचम स्थान सूर्य, शनि, भौम, इन तीनों में से एक वा दो वा तीनों से युक्त हो वा दृष्ट हो अथवा इन तीनों की राशि में से किसी एक की राशि का अल्पबली भौम पंचम भाव में हो तो इन उक्त योगों में मृत प्रजाओं का जन्म होता है ।

पापद्वयेन युक्ते पंचमभवने नहि प्रजालाभः ।

यदि पचम स्थान दो पापों से युक्त हो तो सन्तान की प्राप्ति नहीं होती है ।

अस्तंगते पचममेशे पापःक्रान्ते च दुर्बले ।
षष्ठे नीचे सुताधीशे काकवन्ध्या विशेषतः ,।

यदि पंचमेश अस्तंगत पापाक्रान्त, दुर्बल तथा नीच राशि में स्थित हो कर षष्ठ भाव में हो तौ विशेष रूप से उस पुरुष की स्त्री काकवन्ध्या होती है ।

षष्ठस्थाने सुताधीशे लग्नेशे कुजवेश्मनि ।
म्रियते प्रथमापत्यं काकवन्ध्यत्वमाप्नुयात् ॥

यदि पंचमेश षष्ठ स्थान में हो और लग्नेश मंगल की राशि का हो तो मनुष्य की प्रथम सन्तान मरे और उस की स्त्री काकवन्ध्यत्व को प्राप्त होती है।

सुताधीशो हि नीचस्थः षडादि त्रयसंस्थितः।
काकवन्ध्या भवेन्नारी सुते केतुबुधौ यदि ॥

यदि पंचमेश नीच राशि में स्थित होकर दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो और पंचम स्थान में केतु, बुध स्थित हों तो मनुष्य की स्त्री काकवन्ध्या होती है।

सुतेशो नीचगो यत्र सुतस्थानं न पश्यति।
तत्र सौरि बधौ स्यातां काकवन्ध्यत्वमायद्म ुयत् ॥

सुतेश नीच राशि में स्थित हो कर पंचम को न देखे ओर जहाँ पंचमेश हो वहाँ शनि, बुध भी स्थित हों तो उस पुरुष की स्त्री काकवन्ध्यत्व को प्राप्त होती है।

सन्ततिबाधा के योग

सुतपतिरस्तगतो वा पापयुतः पापवीक्षितो वापि।
सन्ततिबाधां कुरुते केन्द्रे ❀कोणे द्विलाभगे चेन्न ॥

यदि पंचमेश अस्तंगत हो वा पाप युक्त वा पाप दृष्ट हो परन्तु केन्द्र १।४।७।१० में कोण ५।९ में, द्वितीय में तथा एकादश में न हो तो सन्तान

❀ 'पाठान्तरम् केन्द्रे पापान्बिते चन्द्र इति।

की बाधा को करता है ।

व्ययेशसंयुतांशेशत्र्यंशनाथसमन्विते ।
दृष्टे पुत्रेश्वरे तेन पुत्रार्ति कथयन्ति हिं ॥

व्ययेश के नवांशपति के द्रेष्काणपति से यदि पंचम भावपति युक्त वा दृष्ट हो तो पुत्र पीड़ा को कहे ।

पुंराशौ लग्नपतिः सुताधिपं वीक्षते वापि ।
सन्ततिबाधां कुरुते केन्द्रे पापान्विते चन्द्रे ॥

यदि लग्नेश पुरुष राशि में स्थित हो अथवा लग्नेश पंचमेश को देखे और पापयुक्त चन्द्रमा केन्द्र में हो तो सन्तान की वाधा को करता है ।

पुत्र नाश के योग

भौमः पञ्चमभवने जातं जातं विनाशयति पुत्रम् ।
दृष्टे गुरुणा प्रथमं सितेन नच सर्वसंदृष्टः ॥

यदि पंचम में भौम हो तो मनुष्य के उत्पन्न हुए पुत्र को नाश करता है । और पँचम स्थान गुरु से तथा शुक्र से दृष्ट हो तो प्रथम पुत्र को ही नाश करता है । अन्य पुत्र दीर्घायु वाले होते हैं यदि मंगल सब शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य के पुत्रों का नाश नहीं होता है ।

पुत्रभावे कुजःपुत्रं जात जातं विनाशयेत् ।
गुरुशुक्रयुतश्चापि नच सर्वग्रहेक्षितः ॥

पंचम स्थान में मंगल हो तो उत्पन्न हुए बालक को नाश करता है । परन्तु पंचम स्थान में स्थित मंगल, गुरु और शुक्र से युक्त हो वा सब शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो संतान का नाश नहीं होता है ।

पापः पञ्चमसंस्थः पुत्रविनाशं करोति बलहीनः ।
सौम्यः शुभं विधत्ते बलसहितश्चाष्टमाधिपं हित्वा ॥

यदि निर्बल पाप ग्रह पञ्चम स्थान में हो तो पुत्र नाश को करता है । एवं अष्टमेश को छोड़ कर बलवान् शुभ ग्रह पञ्चम स्थान में हो तो शुभ फल को करता है ।

भौमेन राहुणा वापि युक्तः स्यात्पंचमेश्वरः ।
राहुभौमान्तरस्थो वा पुत्रनाशकरो भवेत् ॥

यदि पञ्चम स्थान का स्वामी मंगल से वा राहु से युक्त हो अथवा पञ्चमेश राहु और भौम के अन्तराल में हो तो पुत्र नाश करने वाला होता है ।

अस्तं गते पञ्चमेशे पापाक्रान्ते च दुर्बले ।
नापत्यं जायते दैवाज्जायते म्रियते शिशुः ॥

यदि पंचमेश अस्तंगत्त हो और पापाक्रान्त हो तथा निर्बल हो तो मनुष्य की सन्तति नहीं होती है, यदि भाग्यवश सन्तान हो भी जाय तो उत्पन्न हुआ बालक मर जाता है ।

पञ्चमे नवमस्थाने चतुर्थे च यदा ग्रहाः ।
अग्रेजाता विनश्यन्ति पश्चाज्जीवन्ति वै सुताः ।।
विवाहितायामन्यायामेकपुत्री भवेत्तदा ।
विख्यातो भुवने त्यागी स दीर्घायुर्महीपतिः ।।

यदि पञ्चम स्थान में तथा नवम में और चतुर्थ में ग्रह स्थित हों तो अग्र जात सन्तान नाश होती है पीछे उत्पन्न पुत्र जीवित रहते हैं । विवाहित से पुत्र होता है वह भुवन में विख्यात त्यागी दीर्घायु तथा पृथ्वी का स्वामी होता है ।

सौम्ये स्वक्षेत्रगते पञ्चमे पुत्रशोकभाग् भवति ।
सिंहस्थितेऽपि चैवं नवमे वा तृतीय भार्यायाम् ।।

यदि बुध ३।६ राशि में स्थित होकर पंचम स्थान में हो तो पुत्र शोक वाला होता है इस प्रकार सिंह राशि में स्थित हुआ बुध पंचम भाव में वा नवम में स्थित हो तो तृतीय भार्या में उत्पन्न पुत्र का शोक होता है ।

जीवे मकरं याते पंचमभे आत्मजमृतिविद्यात्
मीनस्थितेऽपि चैवं नवमे शुभसंस्थितेऽल्पजीवी च ।।

यदि मकर राशि का गुरु पंचम स्थान में हो तो पुत्र के मरण को जाने और मीन राशि का गुरु पंचम स्थान में हो तो भी पुत्र के मरण को जाने इन उक्त योगों के होने पर यदि लग्न में शुभ ग्रह हो तो अल्प जीवी सन्तान होती है ।

जीवस्थितस्य राशेः पंचमभे पापसंयुक्ते ।

पुत्रनाशं विद्यात्सोम्यक्षेत्रं तु शुभदं स्यात् ॥

गुरु आश्रित राशि से पंचम स्थान में पाप ग्रह हो तो पुत्र के नाश को जाने परन्तु गुरु की आश्रित राशि से पंचम में शुभ फल को देता है।

भौमगुते सुतमरणं दृष्टं स्त्रीराशिके बहुस्त्रीकः ।

मित्राद्यंशेभानुः. पुत्रकृत्स्त्रीखेटो युवति राशौ ॥

यदि पुरुष नवांश और विषम राशि का चन्द्रमा पंचम स्थान में स्थित हो कर भौम से युक्त दृष्ट हो तो पुत्र का मरण होता है। यदि पंचम स्थान में स्थित चन्द्रमा स्त्री राशि में हो तो बहुत स्त्री वाला होता है अथवा सूर्य मित्रादि नवांश में हो और स्त्री ग्रह राशि में हो तो पुत्र करने वाला होता है।

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।

कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥

यदि पंचम भाव तथा पंचमेश पाप ग्रहों के मध्य में हो और पंचम कारक पाप ग्रह से युक्त हो तो पुत्र नाश को कहे।

भाग्यपुत्रकलत्रेशसंयुक्तनवभागपाः ।

पापांशगाः पापयुताः पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥

नवम, पंचम, सप्तम, इन तीन भाव के स्वामियों के नवांश राशि के स्वामी पापनवांश में हों और पापयुक्त हों तो पुत्र नाश को कहे।

क्रूरांशे पुत्रभावेशे नीचमूढसमन्विते ।
पापैर्दृष्टेऽथवा दुःस्थे पुत्रनाशं वदेत्तदा ।

नीच राशि में वा अस्तंगत हो कर पंचमेश क्रूर षष्ठांश में हो अथवा पंचमेश ग्रहों से षष्ठ होकर दुष्ट स्थान ६।८।१२ में हो तो पुत्र नाश को कहे ।

पुत्रस्थानाधिपे दुःस्थे क्रूरषष्ठांशसंयुते ।
क्रूरग्रहेण वा दृष्टे पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥

यदि पञ्चमेश दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो कर क्रूर षष्ठांश में हो वा क्रूरग्रह से दृष्ट हो तो पुत्र नाश को कहे ।

षष्ठाष्टमस्थो लग्नेशः पापयुक्तः सुताधिपः
दृष्टो वा शत्रुनीचस्थैः पुत्रहानिं वदेद्बुधः ।

यदि लग्नेश षष्ठ वा अष्टम भाव में स्थित हों और पञ्चमेश पापग्रह युक्त वा शत्रुग्रह से और नीच राशि में स्थित ग्रहों से दृष्ट हो तो पुत्र हानि को कहे ।

रिपुदृष्टो रिपुक्षेत्रे नीचे वा पञ्चमे स्थितः ।
भूमिजः पुत्रशोकार्तः करोति नियतं नरम् ।।

यदि पञ्चम स्थान में स्थित हुआ मंगल शत्रु से दृष्ट हो और शत्रु राशि में हो वा नीच राशि में हो तो निश्चय से मनुष्य को पुत्र शोक दुःखित करता है ।

नीचस्थे शत्रुगेहे रविकिरणयुते निर्जिते पापयुक्ते,
सौम्यैर्दृष्टिविवर्जिते सुतगृहे तत्पे तथैव स्थिते ।

शुक्रे भौमेऽपियुक्ते विषमगृहयुते चन्द्रदृष्टया विहीने,
एवं योगद्वये नुःसुतमरणकरं तस्य भार्याऽपिवन्ध्या ॥

यदि 'पञ्चमभाव' नीचराशिगत, शत्रुराशिगत, अस्तंगत, युद्ध में पराजित ग्रह से वा पापग्रह से युक्त हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि से रहित हो तथा पञ्चम भाव का स्वामी भी नीच राशि में वा शत्रु राशि में वा अस्तंगत वा युद्ध में पराजित वा पाप ग्रह से युक्त हो अथवा शुक्र और मङ्गल दोनों पञ्चम स्थान में हों वा दोनों विषम राशि में हों और चन्द्रमा की दृष्टि से रहित हो तो इस प्रकार दोनों योगों में मनुष्य के पुत्र के मरण को करते हैं और उसकी स्त्री भी वन्ध्या होती है ।

वाचस्पतिदिनकरः क्षितिनन्दनो वा,
नीचो विरश्मिरिपुराशिगतः सुतस्थः ।
जातं सुतं झटिति नाशमुपैति नूनं,
चन्द्राद्वदन्ति मुनिगर्ग पराशराद्याः ॥

यदि गुरू का सूर्य, वा मङ्गल, नीच वा अस्तंगत वा शत्रु राशिशत होकर पञ्चम भाव में स्थित हो तो उत्पन्न पुत्र को शीघ्र नाश को प्राप्त करता है और इस योग को गर्ग पराशर आदि मुनिगण चन्द्रमा से भी कहते हैं ।

❀ तनुधनव्यय सोदर पुत्रगः,
सहजपो यदि नात्मज सौख्यकृत् ।
★ सुतगते गुरूभे प्रथमच्चयः पति,
युते तु पुनः सुतसौख्यकृत् ॥

❀ 'पाठान्तरम्' झषधनुर्द्धरपंचमभावगे प्रसवसौख्यबलं नहि दृश्यते । मृतप्रजः खलु पञ्चमगे गुरौ तदिह दृष्टि फलं शुभमश्नुते ।

★ 'पाठान्तरम्' सहजे सहजाधीशे लग्ने वाथ धने भवेत् । जायते न तदा बालो यदि जातो न जोवतीति ।

यदि 'तृतीयेश' लग्न, द्वितीय, व्यय, तृतीय, पञ्चम, इन पांच स्थानों स्थित हो तो पुत्र का सुख नहीं होता है। यदि पञ्चम स्थान में गुरु की १२ राशि स्थित हो तो प्रथम सन्तान का नाश होता है परन्तु पञ्चम स्था में स्थित ९। १२ राशि में गुरू हो तो पुत्र सुख करते हैं।

क्रूरैःखेटैर्दुःखयुक्तो नरःस्यात्पुत्रस्थश्चेद्धन्ति सूर्योऽग्रजातम्।
पश्चाज्जातं सूर्यसूनुर्निहन्ति सिंहीसूनुर्हन्ति पूर्वापरोत्थम्॥

यदि पंचम स्थान में पाप ग्रह हो तो मनष्य सन्तान के दुःख से युक्त होत है और सूर्य पंचम हो तो आगे के पुत्रों का तथा शनि पंचम हो तो पीछे पुत्रों का एवं राहु पांचवें हो तो पहले पिछले सभी पुत्रों का नाश कर है।

पुत्रस्थानं गतो राहुस्तदीशे पापसंयुते ।
नीचराशिगते जीवे द्वात्रिंशे पुत्रमृत्युदः ।,

जो पंचम स्थान में राहु हो और पंचमेश पापग्रह से युक्त हो तथा ग नीचराशि में हो तो ३२वें वर्ष में पुत्र की मृत्यु को देता है।

जीवात्पञ्चमगे पापे लग्नात्पुत्रंगतेऽपि च।
षडविंशे च त्रयस्त्रिशे चत्वारिंशे सुतक्षयः ।

जो गुरू से पंचम स्थान में पाप ग्रह और लग्न से पंचम स्थान में भी प ग्रह हो तो २६वें वर्ष और ३३वें वर्ष तथा ४०वें वष में पुत्र हानि हो है।

लग्ने मान्दि समायुक्ते लग्नेशे नीचराशिगे ।
षट्पञ्चशद्दशाब्देषु पुत्रशोकसमाकुलः ।।

यदि लग्नमान्दि में हो और लग्नेश नीच राशि में हो तो ५२वें वर्ष से दसवर्ष के अन्तराल में पुत्र शोक से व्याकुल होता है ।

पञ्चमे पापसंयुक्ते गुरोः पञ्चमगे शनौ ।
पञ्चमे भौमसंयुक्ते लग्नेशे धनसंगते ।
जातं जातं विनाशं च दीर्घायुश्चैव मानवः ।

पंचम स्थान में ग्रह हो और गुरू से पंचम स्थान में भौम हो एवं लग्नेश द्वितीय में हो तो उस मनुष्य की सन्तान उत्पन्न होती रहे और मरती रहे तथा वह दीर्घायु वाला होता है ।

उच्चो वा यदि वा नीचः पञ्चमः शिखिना स्थितः ।
हाहाकारं च कुरुते पुत्रशोकेन पीड़ितः ।।

यदि उच्चराशिगत वा नीचराशिगत ग्रह पंचम स्थान में केतु से युक्त हो तो पुत्र शोक से दुःखित पुरुष हाहाकार को करता है ।

सर्प के शाप से पुत्र हानि के योग

पंचमस्थान में स्थित हुआ राहु मंगल से दृष्ट हो अथवा राहु पंचम स्थान में स्थित हो कर मंगल की १।८ राशि में हो तो सर्पशाप से पुत्रहानि होती है ।

पंचमेश, राहु से युक्त हो और पंचम स्थान में स्थित शनि, चन्द्रमा से दृष्ट वा युक्त हो तो सर्पशाप से पुत्रहानि होती है ।

पुत्रकारक (गुरु)राहु से युक्त हो तथा पंचमेश निर्बल हो और लग्नेश भौम से युक्त हो तो सर्पशाप से पुत्रहानि होती है ।

पुत्रकारक (गुरु) भौम से युक्त हो तथा लग्न में राहु युक्त हो और पंच
मेश दुष्टस्थान ६। ८। १२ में स्थित हो तो सर्पशाप से पुत्रहानि होती है।

पंचमेश बुध मंगल से युक्त होकर नवांश में स्थित हो तथ
राहु गुलिक लग्न में हो तो सर्पशाप से पुत्र हानि होती है।

पंचम स्थान में मंगल की १।८ राशि हो और उसमें राहु स्थि
होकर बुध से दृष्ट वा युक्त हो तो सर्पशाप से पुत्र हानि होती
है।

सूर्य, मंगल, शनि, राहु, बुध, गुरु, ये पञ्चम स्थान मे स्थित हे
और पंचमेश तथा लग्नेश ये दोनों निर्बल हों तो सर्पशाप से पुत्र हानि होती
है।

लग्नेश राहु से युक्त हो तथा पंचमेश मंगल से युक्त हो एवं पु
कारक (गुरु) राहु से दृष्ट हो तो सर्पशाप से पुत्र हानि होती है।

निर्बल पंचम स्थान राहु वा केतु से युक्त वा दृष्ट हो तथा निर्ब
पंचमेश राहु वा केतु से युक्त वा दृष्ट हो तो सर्पशाप से पुत्र हानि होती
है।

पितृशाप से पुत्र हानि के योग

दशम स्थान का स्वामी पंचमस्थान में हो और पंचमेश भी पंचम स्था
में हो लग्न तथा पंचम में पापग्रह स्थित हों तो पितृशाप से पुत्र हानि
होती है।

नवम स्थान में पापग्रह स्थित हों तथा पंचमेश शनि से युक्त हो
और त्रिकोण में गुलिक स्थित हो तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है।

नीच राशि का सूर्य शनि के नवांश में स्थित हो कर पंचम स्थान में हो और पापग्रहों के मध्य में हो पितृशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि सूर्य पंचम स्थान का स्वामी होकर त्रिकोण में स्थित हो और पापग्रहों से युक्त दृष्ट तथा पापग्रहों के मध्य में हो तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि गुरु सिंह राशी में हो और पंचमेंश सूर्य से युक्त हो एवं पंचम तथा लग्न में पापग्रह स्थित हों तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है।

निर्बल लग्नेश पंचम स्थान में हो तथा पंचमेश सूर्य से युक्त एवं पंचम और लग्न में पापग्रह स्थित हों तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है।

दशमस्थान का स्वामी पंचम स्थान में हों और पंचमेश भी पंचमस्थान में हो और लग्न तथा पंचम में पापग्रह स्थित हों तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि दशम स्थान का स्वामी मंगल हो और वह पंचमेश से युक्त हो कर लग्न, पंचम वा दशम स्थान में हो पाप से सन्तान की हानि होती है।

यदि दशम स्थान का स्वामी दुष्ट स्थान ६। ८। १२ में स्थित हो और पुत्रकारक (गुरु) पापग्रह की राशी में हो तथा पापग्रह लग्नेश हो कर पंचम स्थान में हो तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि लग्न और पंचम भाव में सूर्य, भौम, शनि स्थित हों तथा—राहु, गुरु अष्टम या व्यय में स्थित हों तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है।

लग्न से अष्टम में सूर्य स्थित हो और शनिपंचम स्थान में स्थित हो एवं पंचमेश राहु से युक्त हो तथा लग्न में पापग्रह हो तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है।

व्ययेश लग्न में हो और अष्टमेश पंचम में हो तथा दशमेश अष्टम स्थान में हो तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है ।

षष्ठेश और दशमेश ये दोनों पंचम भाव में स्थित हों तथा पुत्रकारक (गुरु) राहु से युक्त हो तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है ।

मातृशाप से पुत्रहानि के योग

सुख में पापग्रह हो और पंचमेश शनि से युक्त हो तथा व्यय और अष्टम में पापग्रह स्थित हों तो मातृदोष से पुत्रहानि होती है ।

यदि चन्द्रमा पंचमेश होकर नीच राशि में वा पापग्रहों के मध्य में हो तथा चतुर्थ और पंचम में पापग्रह हों तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है ।

शनि लाभ स्थान में हो तथा चतुर्थ स्थान में पापग्रह हों और नीच राशि का चन्द्रमा पंचम स्थान में हो तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है ।

पंचमेश दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो और लग्नेश अपनी नीच राशि में हो तथा चन्द्रमा पापग्रह से युक्त हो तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है ।

पंचमेश दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो तथा चन्द्रमा पापग्रह के नवांश में हो और लग्न तथा पँचम में पापग्रह हो तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है ।

यदि चन्द्रमा पंचमेश हो कर शनि, राहु, मंगल से युक्त हो और वा नवम वा पंचम स्थान में स्थित हो तथा पुत्र कारक भी उन से युक्त हो कर नवम वा पंचम स्थान में हो तो मातृशाप से पुत्र नाश होता है ।

यदि भौम सुखेश हो कर शनि, राहु से युक्त हो और सूर्य, चन्द्रमा ये दोनों पंचम में वा लग्न में एक साथ दोनों हों तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है।

लग्नेश और पंचमेश षष्ठ स्थान में हों तथा सुखेश अष्टम स्थान में हो एवं दशमेश, अष्टमेश लग्न में हो तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है।

षष्ठेश और अष्टमेश लग्न में स्थित हों तथा सुखेश व्यय में स्थित हो और चन्द्र तथा गुरु पाप युक्त हों तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि लग्न पापग्रहों के अंतराल में हो तथा क्षीण चन्द्रमा सप्तम स्थान में स्थित हो एवं सुख में वा पंचम में राहु, शनि स्थित हों तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है।

अष्टमेश पंचम स्थान में हो और पंचमेश अष्टम स्थान में हो एवं न्द्रमा तथा चतुर्थेश दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि चन्द्रमा की कर्क राशि लग्न में स्थित हो और उस में मंगल, राहु युक्त हो तथा चन्द्र शनि पंचम में स्थित हों तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि मंगल, राहु, सूर्य, शनि, ये चारों लग्न, पंचम, अष्टम, षष्ठ इन स्थानो में स्थित हों तथा सुखेश और लग्नेश दुष्ट स्थान ६।८।१२ में हों तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि गुरु दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो कर मंगल, राहु से युक्त हों और शनि, चन्द्रमा पंचम स्थान में स्थित हों तो मातृशाप से पुत्र हानि होती है।

भ्रातृशाप से पुत्र हानि के योग

तृतीयेश पंचम स्थान में स्थित हो कर और मंगल, राहु से युक्त हो तथा पंचमेश और लग्नेश स्थान में हों तो भ्रातृशाप से पुत्र हानि होती है।

लग्न में वा पंचम में मंगल और शनि स्थित हों तथा तृतीयेश नव स्थान में हो और पुत्र कारक (गुरु) अष्टम स्थान में हो तो भ्रातृशाप से पु हानि होती है।

यदि तृतीय स्थान में नीच राशि का गुरु हो और शनि पंचम स्था में स्थित हो एवं पंचमेश अष्टम स्थान में हो तो भ्रातृशाप से पुत्र हा होती है।

लग्नेश व्यय स्थान में हो और मंगल, पंचम में हो तथा पंचमेश अष्ट हो तो भ्रातृशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि लग्न तथा पंचम स्थान ये दोनों पापग्रहों के मध्य में हो औ पंचमेश से पुत्रकारक दुष्ट स्थान में ६।८।१२ में स्थित हो तो भ्रातृशाप से पु हानि होती है।

दशमेश तृतीय स्थान में और पंचम तथा नवम स्थान में पापग्रह यु एवं पंचम स्थान में मंगल हो तो भ्रातृशाप से पुत्र हानि होती है।

लग्नेश तृतीय स्थान में हो तथा तृतीयेश पंचम स्थान में हो एवं ल तृतीय, पंचम में पापग्रह हों तो भ्रातृशाप से पुत्र हानि होती है।

तृतीयेश अष्टम स्थान में हो तथा पुत्र कारक राहु गुलिक युक्त दृष्ट होकर पंचम स्थान में हो तो भ्रातृशाप से पुत्र हानि होती है।

अष्टम स्थान का स्वामी पंचम स्थान में स्थित होकर तृतीयेश से युक्त हो एवं अष्टम स्थान में मंगल शनि हो तो भ्रातृशाप से पुत्र हानि होती है।

मातुलशाप से पुत्रहानि के योग

बुध, गुरु, पंचम स्थान में स्थित हो कर मंगल राहु से युक्त हों तथा लग्न में शनि हो तो मातुल शाप से पुत्र हानि होती है।

लग्नेश तथा पंचमेश पंचम स्थान में स्थित हों एवं शनि, बुध भौम से युक्त हो तो मातुल के (मामा के) शाप से पुत्र हानि होती है।

पंचमेश अस्त हो कर लग्न में स्थित हो तथा शनि सप्तम में हो औ लग्नेश बुध से युक्त हो तो मातुल शाप से उसकी सन्तान का नाश होता है।

षष्ठेश, व्ययेश से युक्त हो कर लग्न में स्थित हो और चन्द्र, बुध, भौम, पंचम स्थान में स्थित हो तो मातुल शाप से उस की सन्तान का नाश होता है।

यदि पंचमेश, पापग्रह से हो कर लग्न में हो और सप्तमेश नीच राशि में हो तथा बुध, पापग्रह से युक्त हो तो मातुल शाप से सन्तान हानि होती है।

ब्रह्मशाप से पुत्रहानि के योग

जो मनुष्य विद्या के गर्व से ब्राह्मणों का तिरस्कार करता हो, उस दोषरूपी ब्रह्मशाप से उस की सन्तान का नाश होता है।

जब राहू गुरु की ९।१२ राशि में स्थित हो तथा गुरु, भौम, शनि, पंचम में हो और धर्मेश अष्टम में हो तो ब्रह्मशाप से पुत्र हानि होती है।

धर्मेश पंचम में हो तथा पंचमेश अष्टम में हो और गुरु, भौम, राहु, अष्टम में हों तो ब्रह्मशाप से पुत्र हानि होती है।

धर्मेश नीच में हो तथा व्ययेश राहु से युक्त वा दृष्ट होकर पंचम में हो तो ब्रह्मशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि गुरु नीच में हो तथा राहु लग्न में वा पंचम में हो और पंचमेश दुष्ट स्थान ६।८।१२ में हो तो ब्रह्मशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि पापयुक्त पंचमेश हो कर अष्टम स्थान में हो अथवा पापयुक्त सूर्य चन्द्रमा पंचमेश हो कर अष्टम स्थान में हो तो ब्रह्मशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि गुरु, शनि के नवांश में स्थित हो कर शनि भौम से युक्त हो तथा पंचमेश व्यय में हो तो ब्रह्मशाप से पुत्र हानि होती है।

पाप युक्त शनि लग्न में हो तथा नवम में राहु हो और व्यय में गुरु हो तो ब्रह्मशाप से पुत्र हानि होती है।

पत्नीशाप से पुत्रहानि के योग

यदि सप्तमेश शनि के नवांश में स्थित होकर पंचम में हो और पंचमेश अष्टम में हो तो पत्नीशाप से पुत्र हानि होती है।

सप्तमेश अष्टम में हो और व्ययेश पंचम में हो तथा पुत्रकारक पाप युक्त हो तो पत्नी शाप से पुत्र हानि होती है।

शुक्र पंचम में हो तथा सप्तमेश, अष्टम, में हो और पुत्र कारक पाप युक्त हो तो पत्नी शाप से पुत्र हानि होती है।

धन स्थान में पापग्रह का सम्बन्ध हो तथा सप्तमेश अष्टम में हो और पंचम में पापग्रह हो तो पत्नी शाप से पुत्र हानि है!

शुक्र भाग्य स्थान में हो तथा सप्तमेश अष्टम में हो और लग्न तथा पँचम में पापग्रह हों तो पत्नीशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि शुक्र नवमेश हो तथा पंचमेश षष्टस्थान में हो एवं गुरु तथा लग्नेश और सप्तमेश दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो तो पत्नी शाप से पुत्र हानि होती है।

यदि पँचम स्थान में शुक्र की २।७ राशि में चन्द्र, राहु स्थित हों और पापग्रह, व्यय, लग्न, धन में स्थित हो तो स्त्रीशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि शनि शुक्र सप्तम में हों और अष्टमेश पंचम में हो तथा राहु से युक्त सूर्य लग्न में हो तो पत्नीशाप से पुत्र हानि होती है।

भौम द्वितीय में हो और गुरु व्यय में हो एवं राहु से युक्त वा दृष्ट शुक्र पंचम में हो तो पत्नीशाप से पुत्र हानि होती है ।

द्वितीयेश तथा सप्तमेश अष्टम स्थान में हो तथा पंचम में भौम और लग्न में शनि हो एवं पुत्र कारक पाप युक्त हों तो पत्नी शाप से पुत्र हानि होती है ।

यदि लग्न में राहु तथा पचम में शनि और नवम में भौम हो एवं पंचमेश तथा सप्तमेश अष्टम स्थान में हो तो पत्नीशाप से पुत्रहानि होती है ।

प्रेतशाप से पुत्र हानि के योग

मनुष्य को मंत्र के शाप से नित्य पिशाच वाधा होती है । तथा पितृदेवों, श्राद्धादि कर्मलोप होने से उन के शाप से वंश नाश होता है ।

शनि सूर्य पंचम में हो तथा क्षीण चन्द्रमा सप्तम में हो एवं लग्न में राहु तथा व्यय में गुरु हो प्रेत शाप से पत्र हानि होती है ।

यदि शनि से पंचमेश हों कर अष्टम स्थान में हो तथा लग्न में भौम हो और पुत्रकारक अष्टम स्थान में हो तो प्रेतशाप में पुत्र हानि है ।

लग्न में पाप ग्रह हो तथा व्यय में सूर्य हो और भौम, शनि, बुध पंचम में हों एवं पंचमेश, अष्टम में हो तो प्रेतशाप से पुत्र हानि होती है ।

यदि लग्न में राहु हो तथा पंचम में शनि हो और पुत्र कारक अष्टम में हो तो प्रेतशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि लग्न में राहु हो तथा शुक्र, गुरु, चन्द्र, शनि से युक्त हों और लग्नेश अष्टम में हो तो प्रेतशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि लग्न में राहु हो तथा मंगल से दृष्ट वा युक्त शनि पंचम स्थान में हो तो प्रेतशाप से पुत्र हानि होती है।

पुत्रकारक ग्रह नीच राशि में हो और पचमेश स्थित राशि में स्थित हो कर किसी नीच राशि में स्थित हुए ग्रह से दृष्ट वा युक्त हो तो प्रेतशाप से पुत्र हानि होती है।

लग्न में शनि हो तथा पंचम में राहु हो और अष्टम में सूर्य हो एवं व्यय में भौम हो तो प्रेतशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि सप्तमेश दुष्ट स्थान ६।८।१२ में हो और पंचम में चन्द्रमा हो तथा लग्न में शनि गुलिक हो तो प्रेतशाप से पुत्र हानि होती है।

यदि शनि शुक्र से युक्त हो कर अष्टम स्थान का स्वामी पंचम स्थान में हो और पुत्रकारक अष्टम स्थान में हो तो प्रेतशाप से पुत्र हानि होती है।

कुलदेव के दोष से पुत्रहानि के योग

यदि शनि षष्ठ स्थान में स्थित हो कर बुध, चन्द्र, सूर्य से दृष्ट हो और लग्न पापग्रह से दृष्ट हो अथवा पाप दृष्ट सूर्य शनि की १०।११ राशि

में स्थित हो वा लग्न में पापग्रहों का वर्ग हो तो इन दोनों उक्त योगों में कुलदेव के दोष से पुत्र हानि होती है।

यदि पंचमेश पापग्रहों से दृष्ट हो तो देवता के शाप से पुत्र हानि होती है। यदि पंचमेश षष्ठेश से युक्त हो तो ब्राह्मण के शाप से पुत्रहानि होती है।

यदि गुरु पचमेश और सप्तमेश से मंगल युक्त हो तो दुष्ट देवता की पीड़ा से पुत्र तथा कन्या के नाश को कहे।

यदि पचमेश, मंगल से युक्त होकर षष्ठेश से दृष्ट हो तथा शुभ ग्रहों में दृष्ट न हो तो शत्रु के दोष से पुत्र हानि होती है।

सन्तति के मृत्यु के कारण

पुत्र स्थानादष्टमस्थे सूर्य पीड़ा ज्वराद्भवेत्।
चन्द्रे च जल शीताभ्यां शस्त्रेण क्षितिनन्दने ।।

यदि पंचम स्थान से अष्टम स्थान में अर्थात् व्ययभाव में सूर्य हो तो सन्तान को ज्वर से पीड़ा होती है एवं व्यय भाव में चन्द्रमा हो तो जल और शनि से पीड़ा होती है और व्यय भाव में मंगल हो तो सन्तान को शस्त्र से पीड़ा होती है।

बुधे च शीतला दोषाद्गुरौ च विषसर्पतः
पश्वादिभिः दैत्य पूज्ये शनौ वालग्रहैर्मृतिः।
राहौ वृक्षादिभिः केतौ विकारैः पीडनं भवेत् ।।

यदि पंचम से अष्टम स्थान में अर्थात् व्यय भाव में बुध स्थित हो तो शीतला के दोष से सन्तान को पीड़ा होती है एवं गुरु व्यय में हो तो विष तथा सर्प से और शुक्र हो तो शनि आदि शस्त्र वालों से शनि हो तो बाल ग्रहों से राहु हो तो वृक्ष आदि से और केतु व्यय स्थान में हो तो विकारों से सन्तान को पीड़ा होतीं है।

सूर्यः पित्तरुजा ज्वरेण गरले नैवात्मजस्थो यदा,
मर्त्यानां विनिहन्ति गर्भपतनाद्यै र्वा तदा सन्ततिम्।
मन्दोऽगुःकृमिणाऽनिलेन दृषदा काष्ठेन नीरेण वा,
शैलेयेन कुजो व्रणेन यदि वा शस्त्रेण रक्तार्तिना॥

जब मनुष्यों के पंचम स्थान में सूर्य हो तब पित्त रोग से ज्वर से विष से वा गर्भपतनादि से सन्तति का नाश होता है। यदि शनि और राहु पंचम हो तो कृमि रोग से वायु से पत्थर से काष्ठ से जल से बा शैलेय रोग से सन्तति का नाश होता है। एवं मंगल, पंचम हो तो व्रण से वा शस्त्र से वा रक्त पीड़ा से सन्तान की मृत्यु होती है।

बालक मरणावस्था के योग

प्रसवान्ते मृतिः सूर्ये षण्मासात्परोऽष्टमे,
चन्द्रे पौगण्डके नष्टः कुजे सद्यो मृतः शिशुः।
बुधे बिवाहतो नष्टः कैसारे च वृहस्पतौ।
यौवने दैत्य पूज्ये च मध्यमागात्परे शनौ।।
राहौ गर्भे मृतो बालः केतौ शस्त्रैः प्रपीड़ितः।
बलाबलंग्रहाणां च विचार्यैवं निगद्यते॥

यदि अष्टम स्थान में सूर्य हो तो प्रसव के अन्त्य में वा छः मास से परे बालक की मृत्यु होती है। चन्द्रमा हो तो पौगण्ड अवस्था में बालक का मरण होता है और भौम हो तो तत्काल ही बालक मृत्यु को प्राप्त होता है। बुध हो तो विवाह के पीछे बालक की मृत्यु होती है। गुरु हो तो किशोर अवस्था में बालक की मृत्यु होती है। शुक्र हो तो युवा अवस्था में और शनि हो तो मध्य भाग में, राहु हो तो गर्भ में बालक मृत्यु को प्राप्त होता है। केतु हो तो शास्त्रों से पीडित हो कर मृत्यु को प्राप्त है वहां के बलाबल का विचार कर इस प्रकार फल कहे।

स्त्री पुरुष के मध्य में किस के पाप से सन्तान का अवरोध हुआ है उसका विचार

अपत्यसंभवं दुःखं यथा पुंसस्तथा स्त्रियाः।
पूर्वजन्म कृतं कर्म द्वयोरेवं ततो भवेत्॥

जिस प्रकार पुरुष के ग्रहों से सन्तान न होने का दुःख होता है, उसी प्रकार स्त्री के ग्रहों से भी सन्तान न होने का दुःख होता है। स्त्री पुरुष दोनों को जो पूर्व जन्म का किया कर्म है उसी से सन्तान का दुःख होता है।

पांच प्रकार के अपत्य सम्भव दुःख के कारण

वियोगान्मरणात् क्लीब्यात्तथा प्रसवादपि।
देशान्तरे च गमनात्पुत्रदुःखं हि पञ्चधा॥

किसी प्रिय के वियोग से, तथा मरण से, नपुंसकता से, उत्पन्न न होने से, और देशान्तर में चले जाने से पांच प्रकार का पुत्र दुःख होता है।

स्त्री पुरुष के पूर्वकर्म विचारने की विधि

विलिख्य कामदम्पत्योः सप्तसप्तसमन्वितम् ।
त्रिभिश्चैव हरेदभागं शेषांकेण विचारयेत् ।।
एकेन पुरुषा ज्ञेया द्वाभ्यां नारी प्रकीतितः ।
शून्ये स्त्रीपूंसोश्च कर्म मिलितं हि निगद्यते ।।

स्त्री पुरुषों का नाम पृथक २ लिखकर उनके नाम की वर्ण संख्या में सात २ युक्त करके तीन से भाग दें, शेष से विचार करे । एक शेष से पुरुष का दोष जानना और २ शेष बचे तो स्त्री का दोष कहना एवं शून्य शेष से स्त्री पुरुष दोनों का मिला हुआ कर्म कहना चाहिये ।

प्रकारान्तर से दोष का विचार

लग्नधीस्थानतः पुंसो द्यूनधीस्थानतः स्त्रियाः ।
क्रूरग्रह समायोगादेवं दोषो विचार्यते ।।

पुरुष जन्म समय में लग्न से पञ्चम स्थान में पापग्रह का समागम हो तो पुरुष के दोष से सन्तान का दुःख हांता है एवं सप्तम भाव से जो पञ्चम स्थान है अर्थात् लाभ में पापग्रह के समागम से स्त्री के दोष से सन्तान का दुःख होता है ।

ग्रहभाव दृष्टि वशसे फल-तारतम्य कहते हैं

एकपादं द्विपादं च त्रिपादं सकलं च वा ।
विचार्य दृष्टिं चादृष्टिं वक्तव्यं ग्रहभावतः ।।

एक चरण, दो चरण और तीन चरण तथा समस्त चरण सम्बन्धी ग्रहों की दृष्टि और अदृष्टि को विचार कर ग्रह के न्यून, अधिक, फल को कहना चाहिये ।

अपुत्र के योग

पापैर्बलिभिर्युक्ते पापर्क्षे पञ्चमे सदा राशौ ।
जातोऽपुत्रः पुरुषः सौम्यग्रहदर्शनातीते ॥

यदि पञ्चम स्थान में पापग्रह की राशि के बलवान् पापग्रह स्थित हों और पञ्चम स्थान शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो इस योग में उत्पन्न हुआ पुरुष अपुत्र होता है ।

सन्तानाधिपतेः पञ्चषष्ठरिःफस्थिते खले
पुत्राभावो भवेत्तस्य यदि जीवो न पश्यति ॥

यदि पञ्चम भाव की आश्रित राशि से पञ्चम, षष्ठ, द्वादश इन स्थानों में पापग्रह हैं और गुरू न देखता हो तो उसको पुत्र का अभाव होता है ।

ओजेसमर्क्षे ऋतुरेतसंस्थे सौर्यर्कदृष्टे सुतवर्जितःस्यात् ।
ज्ञज्येक्षिते चैव सकृत्सुतं च प्राप्नोति वृद्धत्ववयस्थजातः ॥

यदि विषम राशि में ऋतुसंज्ञक (भौम) ग्रह हो और सम राशि में रेतस (वीर्य) सज्ञक (शुक्र) हो और वे दोनों शनि सूर्य से दृष्ट हों तो पुत्र रहित होता है परन्तु ऋतुरेतस् (भौम-शुक्र) को बुध गुरु देखते हों तो पुरुष वृद्धावस्था में एक बार पुत्र को प्राप्त होता है ।

नीचे गुरौ वा भृगुजे तथौजे भानौ समे ज्ञे न सुतः स्ववीर्यात् ।

गुरु वा शुक्र नीच राशि में हो और विषम राशि में सूर्य तथा समराशि में बुध हो तो अपने वीर्य से पुत्र नहीं होता है ।

यत्र चैकादशे राहुःपंचमे च शिखी स्थितः ।
पुत्राननं न दृश्येत यदीन्द्रोऽपि च सेव्यते ,।

जहां ग्याहरवें राहु तथा पांचवें केतु हो वहां यदि इन्द्र का भी पूजन किया जाय तो भी पुत्र का मुख नहीं देख सकता है ।

धीधर्मनाथौ सकलत्रनाथौ दुःस्थानगौ हीनबलौ शुभैर्न ।
दृष्टे सुते दारवहुत्वयोगे त्वपुत्रयोगं मुनयो वदन्ति ॥

यदि पञ्चमेश, नवमेश, ये दोनों निर्बल होकर सप्तमेश से युक्त हों और दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो एवं पञ्चमस्थान शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तथा बहुत स्त्री के योग होने पर भी मुनिजन अपुत्र योग को कहते हैं ।

अनपत्यत्व के योग

पुत्रवित्त कलत्रेशाः संयुक्ता नवभागपाः ।
पापांशकाः पापयुता अनपत्यत्वमादिशेत् ॥

पञ्चमेश, द्वितीयेश, के नवांश के स्वामी पाप ग्रह के नवांश में स्थित होकर पापग्रहों से युक्त हों तो अनपत्य (सन्तानरहित) कहे ।

गुरुलग्नेशदारेशपुत्रस्थानाधिपेषु वा ।
सर्वेषु बलहीनेषु वक्तव्या त्वनपत्यता ॥

गुरु, लग्नेश, सप्तमेश, पंचमेश, ये चारों निर्बल हों तो अनपत्य (सन्तान रहित) कहना चाहिये ।

व्ययेशसंयुतांशेशो मृत्युराशौ स्थिते यदि ।
पुत्रेशो क्रूरषष्ठ्यंशे अनपत्यत्वमादिशेत् ॥

व्ययेश के नवांश का स्वामी अष्टम स्थान में स्थित हो तथा पंचमेश क्रूरषष्ठाँश में हो तो अनपत्य को कहे ।

लग्नपुत्रेश्वरौ दुःस्थौ कारके नीचराशिगे ।
अनपत्यगृहे पुत्रे अनपत्यत्वमादिशेत् ॥

लग्न और पंचम स्थान का स्वामी दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो और पुत्र कारक, नीच राशि में हो और पचम स्थान में अनपत्यराशि (सिंह वा कुम्भ) हो तो अनपत्य कहे ।

क्रूरषष्ठांशके जोवे पुत्रस्थे नाशराशिपे ।
पुत्रेशे नाशराशिस्थे अनपत्यत्वमादिशेत् ॥

यदि गुरु क्रूरषष्ठांश में हो और नाश राशि ६। ८। १२ के स्वामी पंचम में हों और पंचमेश नाशराशि ६।८।१२ में हो तो अनपत्य को कहे ।

रव्याग्राहुशनयः पुत्रस्था बलसंयुताः ।
कारकाद्यात्क्षीणबलादनपत्यत्वमादिशेत् ॥

बलवान् सूर्य भौम राहु शनि पंचमस्थान में स्थित हो तो अनपत्य को कहे ।

सौम्यदृष्टिविहीने च पापैर्बलिभिरन्वितैः ।
पापभे पञ्चमे तत्र त्वनपत्योभवेन्नरः ॥

यदि पंचम स्थान में पाप ग्रह की राशि हो और वह शुभ ग्रह की दृष्टि से रहित हो तथा बलवान् पाप ग्रहों से युक्त हो तो वह मनुष्य अनपत्य होता है ।

पुत्रस्थानगते पापे तदीशे नीचराशिगे ।
शुभदृष्टिविहीने तु वक्तव्या त्वनपत्यता ॥

पचम स्थान में पाप ग्रह स्थित हो और पंचमेश नीच राशि में स्थित होकर शुभ ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो अनपत्यता कहनी चाहिये।

गुरुलग्नहिमांशूनां पञ्चमस्थैरशोभनैः ।
शुभदृग्योगरहितैर्वक्तव्या त्वनपत्यता ॥

गुरु, लग्न चन्द्रमा इन तीनों के मध्य में जिस किसी से वा सबसे पंचम स्थान में पापग्रह हो और वह शुभ ग्रहों की दृष्टि तथा योग से रहित हो तो अनपत्यता कहनी चाहिये।

पुत्रस्थानगते पापे तदीशे पापमध्यगे ।
सौम्यदृग्योगरहिते वक्तव्या त्वनपत्यता ॥

पंचम स्थान में पापग्रह स्थित हो तथा पंचमेश पापग्रहों के मध्य में स्थित होकर शुभग्रहों से दृष्टि युक्त न हो तो अनपत्यता कहनी चाहिये।

पापमध्यगते जीवे पुत्रेशे बलवर्जिते ।
सौम्यदृग्योगरहिते वक्तव्या त्वनपत्यता ॥

यदि गुरु पापग्रहों के मध्य में हो और पंचमेश शुभ ग्रहों की दृष्टि तथा योग से रहित होकर निर्बल हो तो अनपत्यता कहनी चाहिये।

वंशविच्छेद योग

वंशक्षयादिसहिते यदि सत्यमेतत्
शास्त्राधिपारगमना मुनयो वदन्ति ।
पुत्रादियोगमखिलं तदभावयोगं,
प्रोक्तं विलोक्य मनसा च वदेत्सुविद्वान् ॥

वंशक्षयादि योग सहित समस्त पुत्रादि योग तथा पुत्र अभाव योग कहे हैं, इन सब को शास्त्रों के पारदर्शी मुनिगण सत्य कहते हैं। विद्वान् मन से

व्ययेश के नवांश का स्वामी अष्टम स्थान में स्थित हो तथा पंचमेश क्रूरषष्ठाँश में हो तो अनपत्य को कहे।

लग्नपुत्रेश्वरौ दुःस्थौ कारके नीचराशिगे।
अनपत्यगृहे पुत्रे अनपत्यत्वमादिशेत्॥

लग्न और पंचम स्थान का स्वामी दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो और पुत्र कारक, नीच राशि में हो और पचम स्थान में अनपत्यराशि (सिंह वा कुम्भ) हो तो अनपत्य कहे।

क्रूरषष्ठांशके जीवे पुत्रस्थे नाशराशिपे।
पुत्रेशे नाशराशिस्थे अनपत्यत्वमादिशेत्॥

यदि गुरु क्रूरषष्ठांश में हो और नाश राशि ६। ८। १२ के स्वामी पंचम में हों और पंचमेश नाशराशि ६।८।१२ में हो तो अनपत्य को कहे।

रव्यारराहुशनयः पुत्रस्था बलसंयुताः।
कारकाद्यात्क्षीणबलादनपत्यत्वमादिशेत्॥

बलवान् सूर्य भौम राहु शनि पंचमस्थान में स्थित हो तो अनपत्य को कहे।

सौम्यदृष्टिविहीने च पापैर्बलिभिरन्वितैः।
पापभे पञ्चमे तत्र त्वनपत्योभवेन्नरः॥

यदि पंचम स्थान में पाप ग्रह की राशि हो और वह शुभ ग्रह की दृष्टि से रहित हो तथा बलवान् पाप ग्रहों से युक्त हो तो वह मनुष्य अनपत्य होता है।

पुत्रस्थानगते पापे तदीशे नीचराशिगे।
शुभदृष्टिविहीने तु वक्तव्या त्वनपत्यता॥

पचम स्थान में पाप ग्रह स्थित हो और पंचमेश नीच राशि में स्थित होकर शभ ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो अनपत्यता कहनी चाहिये।

गुरुलग्नहिमांशूनां पञ्चमस्थैरशोभनैः ।
शुभदृग्योगरहितैर्वक्तव्या त्वनपत्यता ॥

गुरु, लग्न चन्द्रमा इन तीनों के मध्य में जिस किसी से वा सबसे पंचम स्थान में पापग्रह हो और वह शुभ ग्रहों की दृष्टि तथा योग से रहित हो तो अनपत्यता कहनी चाहिये।

पुत्रस्थानगते पापे तदीशे पापमध्यगे ।
सौम्यदृग्योगरहिते वक्तव्या त्वनपत्यता ॥

पंचम स्थान में पापग्रह स्थित हो तथा पंचमेश पापग्रहों के मध्य में स्थित होकर शुभग्रहों से दृष्टि युक्त न हो तो अनपत्यता कहनी चाहिये।

पापमध्यगते जीवे पुत्रेशे बलवर्जिते ।
सौम्यदृग्योगरहिते वक्तव्या त्वनपत्यता ॥

यदि गुरु पापग्रहों के मध्य में हो और पंचमेश शुभ ग्रहों की दृष्टि तथा योग से रहित होकर निर्बल हो तो अनपत्यता कहनी चाहिये।

वंशविच्छेद योग

वंशक्षयादिसहिते यदि सत्यमेतत्
शास्त्राधिपारगमना मुनयो वदन्ति ।
पुत्रादियोगमखिलं तदभावयोगं,
प्रोक्तं विलोक्य मनसा च वदेत्सुविद्वान् ॥

वंशक्षयादि योग सहित समस्त पुत्रादि योग तथा पुत्र अभाव योग कहे हैं, इन सब को शास्त्रों के पारदर्शी मुनिगण सत्य कहते हैं। विद्वान् मन से

विचार कर पुत्रादि का अभाव कहे ।

वंशस्यविच्छेदकरः प्रजातश्चन्द्रास्फुजित्पापखगाः क्रमेण ।
खंदारसौख्येषु युतास्तथैव लग्नेश्वरे चन्द्रसुतेन युक्ते ॥

यदि चन्द्रमा, शुक्र, क्रम से दशम, सप्तम, चतुर्थ में स्थित हों अर्थात् दशम में चन्द्रमा सप्तम में शुक्र चतुर्थ में पाप ग्रह स्थित हों और लग्नेश बुध से युक्त हो तो इस योग में उत्पन्न पुरुष वंश का विच्छेद कर्त्ता होता है।

पापग्रहा रि:फसुताष्टमस्था वंशस्यविच्छेदकरोऽर्थहीनः ।
निशाकरे लग्नगते सजीवे तत्सप्तमे भूमिसुते शनौ वा ॥

यदि पाप ग्रह द्वादश पंचम, अष्टम इन स्थानों में स्थित हों तो धन-हीन होकर वंश के विच्छेद करने वाला होता है। गुरु सहित चन्द्रमा लग्न में हो और उस से सप्तम स्थान में मंगल वा शनि स्थित हो तो वंश के विच्छेद करने वाला होता है।

पापग्रहा बन्धुगताश्च सर्वे वंशस्यविच्छेदकरोऽत्रजातः ।
लग्नान्त्यापुत्राष्टमराशियुक्तै पापग्रहैर्वंशविनाशहेतुः ॥

यदि सब पाप ग्रह चतुर्थ स्थान में हों तो इस योग में उत्पन्न पुरुष वंश का नाश करने वाला होता है। लग्न द्वादश पंचम, अष्टम स्थान पापग्रहों से युक्त हों तो वंश के विनाश के कारण होंते हैं।

शुभेतरा रन्ध्रविलग्नरि:फे वंशस्य विच्छेदकरः सुतेऽब्जे ।
दारस्थिते सोमसुते सशुक्रे पापे सुखे देवगुरौ सुतस्थे ॥

पापग्रह अष्टम, लग्न, द्वादश, स्थान में स्थित हों और पंचम में चन्द्रमा हो तो वंश का विच्छेद करने वाला होता है। अथवा शुक्र सहित बुध सप्तम स्थान में स्थित हो तथा चतुर्थ में पाप ग्रह हो और पंचम में गुरु हो वंश का नाश करने वाला होता है।

रन्ध्रे शशाँकात्सहिते तु पापैर्वंशस्य विच्छेदकरोऽत्रजातः ।
पापे विलग्ने सुखगे शशांके लग्नेश्वरे पञ्चमराशियुक्ते ।
बलैर्विहीने यदि पुत्रनाथे वंशस्यविच्छेदकरोऽत्र जातः ॥

चन्द्रमा से अष्टमस्थान में पापग्रह हों तो इस योग में उत्पन्न पुरुष वंशका नाश करने वाला होता है अथवा पापग्रह लग्न में स्थित हो और चतुर्थ में चन्द्रमा हो तथा लग्नेश पंचम में हो एवं पंचम भाव का स्वामी निर्बल हो तो इस योग में उत्पन्न पुरुष वंशका विच्छेद करने वाला होता है।

लग्नसप्तमधर्मान्त्यराशिगाः पापखेचराः ।
सपत्नराशिवर्गस्था वंशविच्छेदकारिणः ॥

यदि लग्न, सप्तम, धर्म द्वादश, इन चार स्थानों में पाप ग्रह हों और वे शत्रु की राशि में वा शत्रु के वर्ग में हों वंशविच्छेद करने वाले होते हैं।

रविणा सहितो मन्दो राहुयुक्तो भवेद्यदि ।
वंशच्छेदकरो योगः कथितो मुनिपुंगवैः ॥

यदि शनि सूर्य और राहु से युक्त हो तो श्रेष्ठ मुनिजनों ने वंश-विच्छेद योग कहा है।

भाग्याधिनाथे व्ययभावसंस्थे पापान्वितौ जन्मपलग्ननाथौ ।
अस्तंगतौ जन्मनि वा स्ववंशध्वंसी भवेन्ना गतपुत्रदारः ॥

यदि जन्म समय में नवमेश व्ययभाव में हो और जन्मराशि का स्वामी तथा लग्नेश ये दोनों पापग्रह से युक्त हों वा अस्तंगत हों तो वह मनुष्य पुत्र स्त्री से रहित होकर अपने वंश का ध्वंस करने वाला होता है।

पिता पुत्र के मित्रत्वादि के योग

लग्नपुत्रेष्वराभ्यांतु मित्रत्वेनैव मित्रता ।
शत्रुत्वे शात्रवं प्रोक्तं समत्वे समता भवेत् ।।

यदि लग्नेश तथा पंचमेश की परस्पर मित्रता हो तो पिता पुत्र में मित्रता होती है और लग्नेश पंचमेश में परस्पर शत्रुत्रा हो तो पिता पुत्र में शत्रुभाव कहना चाहिये, एवं दोनों में समता हो तो पिता पुत्र में समता होती है।

लग्नपुत्रेश्वरौ खेटौ परस्परनिरीक्षितौ ।
परस्परगृहांशस्थौ शुश्रूषां कारयेत्सुतः ।।

यदि लग्नेश और पंचमेश दोनों परस्पर देखते हों अथवा दोनों परस्पर राशिनवांश में स्थित हों अर्थात् पंचमेश लग्नेश की राशि में वा नवांश में स्थित हो तो 'पुत्र' पिता की सेवा को करता है।

लग्नं पश्यति वा पुत्रनाथे लग्नान्विते यदि ।
लग्नेश्वरे सुतर्क्षे वा पुत्रो वाक्यवशानुगः ।।

यदि पंचमेश लग्न को देखे वा लग्न में स्थित हो अथवा लग्नेश पंचम स्थान में हो तो 'पुत्र' पिता की आज्ञा मानने वाला होता है।

पुत्रस्थानेश्वरे दुःस्थे लग्नेशेनापि वीक्षिते ।
संदृष्टे कुजराहुभ्यां नित्यं पितृविदूषकः ।।

यदि पंचमेश दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित होकर लग्नेश से दृष्ट हो और मंगल राहु से भी दृष्ट हो तो 'पुत्र' सदा पिता का दूषण (निन्दा) करने वाला है।

सुतेश रिपुभावस्थे षष्ठेशे गुरुसंयुते ।
व्ययेशे लग्नभावस्थे तस्य पुत्रो रिपुर्भवेत् ।

पंचमेश षष्ठस्थान में हो और षष्ठेश गुरु से युक्त हो तथा व्ययेश लग्न में स्थित हो तो उसका पुत्र शत्रु होता है ।

पुत्र सुख के प्रथम ही पिता के निधन का योग

क्षीणे शशांके तनुभावयुक्ते मूढान्विते मन्दगृहे सुरेज्ये
त्रिकोणगैः पापखगैश्च सर्वैः प्रागेव पुत्रस्य सुखाद्विनाशः ।।

क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो और गुरु अस्तंगत होकर शनि की १०।११ राशि में स्थित हो तथा सब पापग्रह त्रिकोण ५।९ में स्थित हों तो पुत्र सुख के प्रथम ही पिता का निधन होता है ।

चन्द्रात्मजेपंचमयराशियुक्ते लग्ने सुखे वा यदि पापयुक्ते ।
शुभेतरैः पञ्चमभावयुक्तैर्नदृश्यते पुत्रसुखं हि तेन ।।

यदि बुध पंचम भाव में हो तथा लग्न में वा चतुर्थ में पापग्रह स्थित हो और पंचम भाव में भी पापग्रह युक्त हो तो उससे पुत्र का सुख नहीं देखा जा सकता है ।

तातेशतत्कारकखेचरेन्दौ दुःस्थौ तयोः पुत्रसुखं न दृष्टम् ।

दशमेश और पितृकारक ये दोनों दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हों तो माता पिता को पुत्र का सुख देखने में नहीं आ सकता है ।

पुत्र सुख का योग

केन्द्रत्रिकोणे यदि तौ विहंगा वदेत्तयोः पुत्रसुखं त्वभीष्टम्

यदि दशमेश और पितृकारक ये दोनों केन्द्र वा त्रिकोण में हो तो उन माता पिता को पुत्र सुख अभीष्ट कहे ।

सन्ततिके प्रकीर्ण योग

नीचारिभांशोपगते जिते स्यात्काव्ये कुजे जन्ममृतप्रजानाम् ।
शुक्रेन्दुभस्थे च सुताप्रजानां शेषांशकस्थे तु सुतप्रजानाम् ॥

शुक्र और भौम नीचराशि में और नीचनवांश में हों अथवा पराजित हों तो इस योग में मृतप्रजावालों का जन्म होता है । शुक्र और चन्द्रमा की राशि के शुक्र मंगल पंचम हों तो पुत्री प्रजावालों का जन्म होता है शुक्र और भौम शेष नवांश में हों तो पुत्रप्रजावाले का जन्म होंता है ।

पौत्रप्राप्तिरनंगभे सुतगृहात्सौम्य राश्यंशके,
तन्नाथे शुभखेटवीक्षितयुते केन्द्रत्रिकोणेऽथवा ।
स्वक्षेत्रोपगते तु पुत्रगृहपे जातोऽल्पपुत्रो भवे-
त्पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येक पुत्रं वदेत् ॥

पंचम स्थान से जो सप्तम स्थान है, उस में अर्थात् लाभ भाव में शुभ ग्रह की राशि और नवांशक स्थित हो एवं लाभ स्थान का स्वामी, शुभ ग्रह से दृष्ट वा युक्त हो अथवा लाभेश, केन्द्र में वा त्रिकोण में स्थित हो तो पौत्र की प्राप्ति होती है । यदि पंचमेश अपनी राशि में स्थित हो तो जातक अल्प पुत्र वाला होता है । एवं पंचमेश के नवांश का स्वामी, अपनी राशि में या अपने नवांश में स्थित हो तो एक पुत्र को कहे ।

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे लग्नात्कलत्रेऽथ वा,
युग्मर्क्षे शशिशुक्रवीक्षितयुते पुत्रीजनो जायते ।

पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिको,
जीवात्पंचमराशितश्च तनयप्राप्तिं वदेद्दैशिकः ॥

यदि पंचमेश वा नवमेश लग्न से सप्मस्थान में अथवा समराशि २।४। ६।८।१०।१२ में स्थित हो और चन्द्र शुक्र दृष्ट वा युक्त हो तो कन्या होती है। यदि पंचमेश वा नवमेश पुरुष राशि १।३।५।७।९।११ में स्थित हो तो पुरुष अधिक पुत्र वाला होता है। गुरु से गिन कर जो पंचम स्थान हो उस से पुत्र की प्राप्ति को कहे।

पुत्रस्थे मदनाधिपे वितनयो जायाविहीनोऽथ वा,
पुत्रादष्टमशत्रुरिःफगृहगाः पापाः कुलध्वंसका।
राहौ नन्दनराशिगे तदधिपे दुःस्थानगे पुत्रहा,
पुत्रस्थे तनुपे तनौ सुतपतौ गृह्णाति दत्तात्मजम् ॥

यदि सप्तम भाव का स्थान स्वामी पंचम में होतो मनुष्य पुत्र रहित अथवा स्त्री रहित होता है और पंचम स्थान से अष्टम, षष्ठ, और द्वादश स्थान में अर्थात् लग्न से व्यय, दशम, चतुर्थ स्थान में पाप ग्रह हो तो वंशविच्छेद करने वाले होते हैं। यदि राहु पंचम स्थान में हो और पंचमेश दुष्ट स्थान ६।८।१२ में हो तो पुत्र को नाश करने वाला होता है। एवं लग्नेश पंचम में स्थित हो तो और पंचमेश लग्न में हो तो दत्तपुत्र को ग्रहण करता है।

पुत्रस्थानपवित्तपौ गतबलौ पापेक्षिते पुत्रभे,
जातोऽनेककलत्रवानपि सुताभावं समेति ध्रुवम्।
तज्जाया यदि पुत्रयोग जनिता सौम्येन वा पंचमे,
षष्ठेशेन निरीक्षिते सुतवती जारेण संजायते ॥

पंचम स्थान तथा द्वितीय स्थान इन दोनों भावों के स्वामी निर्बल हों और पंचम स्थान पाप ग्रह से दृष्ट हों तो जातक अनेक स्त्री वाला भी हो तो निश्चय से पुत्र के अभाव को प्राप्त होता है। यदि उस की स्त्री पुत्र प्रदयोग में उत्पन्न हुई हो अथवा षष्ठेश शुभ ग्रह से पंचम स्थान दृष्ट हो वह जार से पुत्र वाली होती है।

मीनस्थाऽल्पसन्तानश्चाबस्थः कृच्छ्रसन्ततिः।
असन्ततिः कुलीरस्थो जीवः कुम्भे न सन्ततिः॥

मीन राशि में स्थित गुरु अल्पसन्तान करता है और धनराशि में स्थित गुरु सन्तति रहित करता है।

पुत्रस्थाने कुलीरे वा मीने कुम्भे शरासने।
स्थितो यदि सुराचार्यस्तत्फलं कुरुते नृणाम्॥

यदि पंचमस्थान में कर्क, मीन वा कुंभ, धनराशि गुरु स्थित हो तो मनुष्यों के पूर्वोक्त फल को करता है।

पापद्वयेन युक्ते पंचमभवने नहि प्रजालाभः।
चन्द्रे पंचमभवने दत्ताप्तिहीनवीर्यके सौम्ये॥
तद्बद्बलोपपन्ने सुपुत्रवान्विगतरोगश्च।

यदि पंचमस्थान में दो पाप ग्रह हों तो सन्तान की प्राप्ति नहीं होती है। यदि निर्बल चन्द्रमा वा बुध पंचम स्थान में हों तो दत्त पुत्र की प्राप्ति होती है। यदि बलवान् पंचम भाव में हो तो सुपुत्र वाला तथा रोग रहित होता है।

पुत्रेशे सुतगे वातस्थे खेटे बलोपेते।
सत्पुत्रवान् सुबुद्धिः पुण्याचारोभवेज्जातः॥

पंचमेश पंचम में हो अथवा पंचम भाव में स्थित ग्रह बल से युक्त हो तो पुरुष सत्पुत्र वाला सुन्दर बुद्धिमान तथा पुण्याचारी होता है ।

राहौ पञ्चमभवने विसुतः पुण्येन परिहीनः ।
भौमयुते सुतमरणं दृष्टे स्त्रिराशिके भवेत्स्त्रीकः ।

यदि पंचम राहु हो तो सन्तानरहित तथा पुण्य से हीन होता है और पंचम भाव मंगल से युक्त हो तो पुत्र मरण होता है परन्तु पंचम भाव में स्त्री राशि हो और मंगल से दृष्ट हो तो कन्या प्रजा वाला होता है ।

वागीशात्पंचमेशस्त्रिकभवनगतः पुत्रधर्मांगनाथा,
रन्ध्रद्वेष्यान्तिमस्था यदि जनुषि नृणामात्मजानामभावः ॥
किञ्चित्कालं विलम्बः शुभखगसहितास्तेऽथ कर्के सुतर्क्षे,
चन्द्रे कन्याप्रजावान्प्रमिततनयावांश्चाथ देवेन्द्रपूज्यात् ॥
क्रूरश्चेत्पंचमस्थः सुतभवनगतः स्यात्तदाऽपत्यहीन
श्छायापुत्रः स्वगेहाद्यदि भवति सुते सूनुरेकस्तदानीम् ॥

जन्म समय में गुरु जिस राशि में स्थित हो, उस राशि से पांचवीं राशि का स्वामी त्रिकस्थान ६।८।१२ में हो और पंचम, नवम, लग्न इन तीनों भावों के स्वामी अष्टम षष्ठ, द्वादश स्थान में स्थित हो तो मनुष्यों को पुत्र का अभाव होता है । यदि पंचमेश, नवमेश, ये तीनों अष्टम, षष्ठ, द्वादश स्थान में स्थित होकर शुभ ग्रहों से युक्त हों तो सन्तान के होने में थोड़े समय का बिलम्ब होता है । यदि कर्क राशि का चन्द्रमा पंचम स्थान में हो तो कन्या प्रजा वाला होता है और स्वल्प पुत्र वाला होता है । यदि गरु से पंचम स्थान में पाप ग्रह हो, या सुत स्थान में हो तो पुत्र हीन होता है । यदि शनि अपने घर से पंचम में हो तो एक पुत्र होता है ।

कन्यापत्योऽब्जे सुते दुर्बले ज्ञे जीवे सत्पुत्रोऽतिदक्षः सिते च ।
शन्यंशा यावत्बलैस्तत्र दृष्टास्तावद्गर्भप्रक्षयो नेष्टदृष्ट्या ॥

यदि पंचम स्थान में चन्द्रमा हो तो कन्या सन्तति होती है और निर्बल बुध पंचम स्थान में हो तो भी कन्या सन्तति होती है । गुरु पंचम स्थान में हो तो सत्पुत्र होता है, शुक्र हो तो अति चतुर पुत्र होता है । पंचम स्थान में शनि के जितने अंश हों और वे जितने पाप ग्रहों से दृष्ट हों उतने गर्भनाश होते हैं परन्तु शुभ दृष्ट हो तो गर्भ नहीं होते हैं ।

सुखे सपापेच सितेऽस्तसंस्थे खस्थे विधौ सन्ततिवर्जितः स्यात् ।
मृतप्रजःसार्कसिते सुतेऽपि खलाढ्यदृष्टे खलभेऽनपत्यः ॥

यदि सुख भाव पापग्रह सहित हो और शुक्र सप्तम हो तथा चन्द्रमा दशम हो तो सन्तान रहित होता है । एवं सूर्य सहित शुक्र पंचमस्थान में हो तो मृतप्रजावाला होता है और सूर्य सहित शुक्र पापग्रह की राशि में स्थित होकर पंचमस्थान में हो तथा पापग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो सन्तान रहित होता है ।

सुतभे समवर्ग आर्किविद्युत इन्द्वास्फुजिदीक्षिते सुता ।
विषमे विधुशुक्रवर्गगे तनयोऽपीक्षणतोऽन्यथात्मजा ॥

यदि पंचमस्थान में समबर्ग अर्थात् समराशि हो और शनि बुध से युक्त होकर चन्द्र शुक्र से दृष्ट हो तो कन्या सन्तति होती है और पंचमस्थान में विषमराशी वा चन्द्र शुक्र से दृष्ट भी हो तो पुत्र सन्तति होती है, विपरीत होने पर कन्या सन्तति होती है ।

सखलेऽर्कसुतेऽनपत्यताऽसृजि गर्भच्युतिरस्त्यपत्यहा ।
रविरात्मजगोबलोज्झितः शिखिराहू यदि कुत्सितः सुतः ॥

यदि पंचमस्थान में पाप सहित शनि हो तो पुरुष सन्तति रहित होता है, एवं पापयुक्त भौम पंचम हो तो गर्भच्युति करता है और निर्बल सूर्य पंचम हो तो मृतापत्य होता है तथा केतु राहु पंचम हो तो दुष्ट पुत्र होता है।

धीस्थे भौमेपुत्रनाशःखभस्थे खसौम्याख्ये वा पुत्रसौख्यं विलम्बात्।

जो पंचम स्थान में भौम हो तो पुत्रनाश होता है वा दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो विलम्ब से पुत्र-सौख्य होता है।

केन्द्रे कोणे नन्दनेशो यदि स्यात्पुत्रप्राप्तिः तत्र ज्ञेया।

यदि 'पंचमेश' केन्द्र वा त्रिकोण में हो तो पुत्र की प्राप्ति संभव जाननी चाहिये।

सत्पुत्रलाभः सुतपे सुरेज्ये शुभेषु गेहेषु गते च भानौ।
एकः स्थिरःस्यात्सुत एक एव स्थिरः शुभे केन्द्रनवात्मजस्थे॥

यदि पंचम गुरु शुभ ग्रह की राशि में हो तो सत्पुत्र का लाभ होता है एवं पंचमेश सूर्य शुभ ग्रह की राशि में हो तो एक पुत्र स्थिर होता है और शुभ केन्द्र तथा नवम पंचमस्थान में हो तो भी एक ही पुत्र स्थित होता है।

और लग्न से पंचमस्थान में पापग्रह हो तो सन्तान रहित होता है। यदि शनि अपनी १०।११ राशि से पांचवीं २।३ राशि में हो तो एक पुत्र होता है।

त्रिके सुतेशे विबले न पुत्रवान् गुरोः सुतेशेऽपि तथाविधे।
सुतेऽर्कबक्रौ न शुभौ तथाऽऽर्क्यंगू तदा च वंशेशरुषात्मजक्षयः॥

यदि लग्न से पंचमस्थान का स्वामी और गुरु से पंचमस्थान का स्वामी ये दोनों त्रिकस्थान ६।८।१२ में स्थित हों तो मनुष्य पुत्ररहित होता है।

यदि पंचम में सूर्य मंगल हों तथा शनि राहु हों तो कुलदेव के दोष से पुत्रका नाश होता है ।

ज्ञात्षष्ठे च खला बुधो गत बली नीचस्तदीशोप्यस-
न्बालो मातुलदुःखभागथगुरोः पुत्रे खला दुःस्थतात् ।
दुःस्थेऽपत्यपतौ च नात्मजसुखं शुक्रात्तथोह्यंगना
मन्दात्पुष्टखलामृतौ तदधिपे दुःस्थे तदाशुक्षयः ।।

यदि बुध से षष्ठस्थान में पापग्रह हों और बुध निर्बल हो और उसका स्वामी अशुभ हो तो बालक मातुल दुःख वाला होता है । एवं गुरु से पंचम-स्थान में पापग्रह हों और वे नीच शत्रु इत्यादि दुष्ट ६ । ८ । १२ में हो पुत्र का सुख नहीं होता है, इस प्रकार शुक्र से स्त्री की कल्पना करनी चाहिए । यदि शनि से बलवान् पापग्रह अष्टम स्थान में स्थित हो और उस स्थान का स्वामी दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो तो शीघ्र मरण होता है ।

सुतपतिरिहकेन्द्रेपापगःपापदृष्टोःभवतिगतिगरिष्ठःशास्त्रवेत्ताचशूर
लिपिकरणप्रवीणःसन्ततेश्चापिदुःखंक्रतहरिशिवपूजःसन्ततिंवैलभेत्

पंचमेश केन्द्र में पाप ग्रह की राशि में हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य गति में श्रेष्ठ शास्त्रज्ञाता शूर होता है तथा लिखने में चतुर हो सन्तान का दुःख रहे । विष्णु और शिव के पूजन से सन्तान को प्राप्त होता है ।

तुलामीनमेषे वृषे दैत्यपूज्ये धनी राजमानी कलाकौतुकी च ।
त्रयोऽस्यास्मजावैचिरञ्जीविताश्च भावेद्वत्सरेवह्निभीतिर्द्वितीये ।।

जिसके तुला, मीन, मेष, वृष, में शुक्र हो तो वह धनी राजमानी कला कौतुक वाला होता है और उसके चिरंजीवी तीन पुत्र होते हैं तथा दूसरे वर्ष अग्निभय होता है ।

प्रकीर्ण योग

पुत्राद्देवमहीपपुत्रपितृधी पुण्यानि सञ्चिन्तयेत्,
यात्रामस्तसुतस्वकर्मभवनैर्दूराटनं रिःफतः ।
लग्नाद्बन्धुदिनेशतः पितृसुखं जीवात्मजस्थानतः,
पुत्रप्राप्तिमनंग वित्तपसितैः स्त्रीसम्पदश्चिन्तयेत् ॥

पञ्चमस्थान से देवता, पृथ्वी का स्वामीत्व, पुत्र, पिता, बुद्धि पुण्य इसका विचार करे तथा सप्तम, पञ्चम, द्वितीय, दशम, इन चार स्थानों से यात्रा का विचार करे और व्यय से दूरदेशीय भ्रमण का विचार करे । लग्न से चतुर्थ स्थान हो उससे और सूर्य से पिता के सुख का विचार करे तथा गुरु और पञ्चम स्थान से प्राप्ति का विचार करे एवं सप्तम और द्वितीय स्थान तथा शुक्र से स्त्री का बिचार करे ।

लग्नात्पुत्रकलत्रभे शुभपतिप्राप्तेऽथवालोकिते
चन्द्राद्वा यदि सम्पदस्ति हि तयोर्ज्ञेयोऽन्यथाऽसंभवः ।
पान्थानोदयगे रवौ रविसुते मीनस्थिते दारहा
पुत्रस्थानगतश्च पुत्रमरणं पुत्रोऽवनेर्यच्छति ॥

लग्न से वा चन्द्रमा से वा लग्न-चन्द्रमा में जो अधिक बलवान हो उससे जो पंचम तथा सप्तम स्थान हैं वे दोनों वा एक शुभग्रह से और उसके स्वामी से युक्त वा दृष्ट हो तो मनुष्य की पुत्र और स्त्री की संपत् जाननी चाहिये अन्यथा असंभव जानना चाहिये । यदि जन्म समय में कन्याराशि का सूर्य लग्न में हो तो पुरुष दारहा (स्त्री मारने वाला) होता है । यदि पञ्चम स्थान में मंगल हो तो पुत्र मरण को देगा ।

धनजनसुखहीनः पञ्चमस्थैश्चपापै-

र्भवति विकाल एव क्ष्मासुते-तत्र जातः ।

दिवसकरसुते च व्याधिभिस्तप्तदेहः

सुरगुरुबुधशुक्रैः सौख्यसम्पद्धनाढ्यः ॥

यदि पञ्चम स्थान में पापग्रह हों तो मनुष्य धन जन सुख से रहित होता है और पञ्चम स्थान में मंगल हो तो पुरुष विकल शरीर होता है यदि शनि पंचम हो तो व्याधियों से तप्त शरीर वाला होता है एवं गुरु बुध शुक्र पञ्चमस्थान में हों सौख्य संपत्ति और धन से युक्त होता है ।

राजस्थाने गुरुबुधसितैरीक्षिते संयुते वा

तद्राशीशे बलवति नृपप्रीति सम्पत्तिमेति ।

पापाक्रान्ते विगतबलिनि स्वामिनि क्रूरभागे

जातो विद्याविनयगुणधीराजसन्मानहीनः ॥

यदि पञ्चमस्थान गुरु, बुध, शुक्र से दृष्ट वा युक्त हो और पंचमेश बलवान् हो तो पुरुष राजा से प्रीति और संपत्ति को प्राप्त होता है । यदि पंचमस्थान पापांक्रान्त हो और पञ्चमेश क्रूर ग्रह के नवांश में वा क्रूरषष्टांश में हो तो 'जातक' विद्या, विनय, गुण, बुद्धि तथा राजसन्मान से हीन होता है।

लग्ने यानपतौ सुखे तनुपतौ दृष्टेऽथवा खेचरै :

संयुक्ते तु चतुष्पदस्य जननं राहुध्वजाभ्यामजः।

गोजन्मार्यसितेन्दुभिश्च महिषी मंदेन दृष्टे युते

जातः पादपुरस्सर तनुपतिर्माने तनौ भोगिराट् ॥

यदि सुखेश लग्न में हो और लग्नेश सुख में हो और अन्य ग्रहों से दृष्ट वा
क्त हो तो चतुष्पद का जन्म होता है। यदि लग्न में सुखेश और सुख में
थत लग्नेश राहू और केतु से दृष्ट वा युक्त हो तो बकरे का जन्म होता है
वं गुरु शुक्र चन्द्रमा से दृष्ट हों तो गौ का जन्म होता है और शनि से दृष्ट
ा युक्त हों तो महिषी का जन्म होता है। यदि लग्नेश दशमस्थान में हो तो
दों से उत्पन्न जीव का जन्म होता है और लग्नेश लग्न में स्थित हो तो सर्प
ा जन्म होता है।

वित्तास्तगौ पञ्चमयाननाथौ पापेक्षितौ पापसमन्वितौ वा।
ुंसस्त्रिभागे पुरुषग्रहेन्द्रे जाताःकपिकोडविडालकाद्याः ॥

यदि पञ्चमेश और चतुर्थेश द्वितीय तथा सप्तमस्थान में स्थित हो कर
पग्रहों से दृष्ट वा युक्त हो तथा पुरुषगृह पुरुषगृहोंके द्रेष्काण में हों तो इस
ग में उत्पन्न हुए जीव वानर, सूकर, विडालादि, जानने चाहिये।

तस्मिन्मन्दबुधेक्षिते तु जननं पिण्डाकृतिर्वाक्पति,
साहिर्दुर्बलवीक्षितो यदि महीदेवान्वयो नैचकृत्।
एकस्था गुरुराहुभानुतनयाः शुक्रेन्दु पुत्रेक्षिताः,
शूद्रोऽपि द्विजतौल्यमेति निखिलां विद्यामुपैति द्विजः ॥

यदि लग्न में सुखेश तथा सुख में स्थित लग्नेश शनि बुध से दृष्ट हो
पिण्ड के समान आकृति वाले का जन्म होता है यदि गुरु राहु से युक्त हो
र निर्बल ग्रह से दृष्ट हो तो ब्राह्मण वंश में उत्पन्न हुआ पुरुष भी नीच
र्म करने वाला होता है। एवं गुरु, राहु, शनि, ये तीनों एक स्थान में स्थित
कर शुक्र बुध से दृष्ट हो तो शूद्र भी ब्राह्मण की तुलना को प्राप्त होता है
ौर ब्राह्मण सम्पूर्ण विद्या को प्राप्त होता है।

पितुर्धनं याति सुखेसमानौ पुत्रे शशांके मरणं च मातुः
सुते शुभे शोभनदृष्टियोगे पुत्रं ददात्येव तथा तदीशे।

यदि सुख स्थान में सूर्य हो और पंचम स्थान में चन्द्रमा हो तो मनु पिता के धन को प्राप्त होता है और माता के मरण को प्राप्त होता है यदि पंचम स्थान शुभ ग्रह से युक्त वा दृष्ट हो तथा पंचमेश शुभ ग्रह से यु वा दृष्ट हो तो पुत्र को देता है ।

सागौ बिधौ सहजगेऽसहजो धनी च,
साकौं च मेचकतनुः सहजैर्वियुक्ताः
पुत्रर्क्षगे सहजगे च कुजे विपुत्रः
कामे भृगौं बलिनि सद्विविधांगनश्रीः ।।

यदि राहु सहित चन्द्रमा तृतीय स्थान में हो तो भ्रातृ हीन और ध होता है यदि शनि सहित चन्द्रमा तृतीय स्थान में हो तो श्याम शरीर त भ्रातृ रहित होता है । एवं पंचम में वा तृतीय में मंगल हो तो पुत्र हीन हो है और बलवान् शुक्र सप्तम भाव में हो तो अनेक प्रकार सती स्त्री रूप लक्ष होती है ।

ताताम्बिकासोदरमातुलाश्च मातामहः पितृपिता च सूनुः
सूर्यादिखेटः खलु पंचमस्थैर्नश्यन्ति नूनं मुनयो वदन्ति।

पंचम स्थान में स्थित हुए सूर्यादि ग्रह क्रम से पिता, माता मातु मातामह, पितामह, पुत्र, इत्यादि का निश्चय से नाश करते हैं, इस प्रक मुनिगण कहते हैं ।

कुक्षिभेदन के योग

दोदये सौम्य दृशा विहीने सर्पार्कयुक्ते यदि कृष्णचन्द्रे ।
त्रेण कुक्षेर्दलनं वदन्ति जातस्य दर्शे मुनयो महान्तः ॥

लग्न में स्थित हुआ शनि शुभ ग्रह की दृष्टि से रहित हो तथा वस्या में जन्म हो और कृष्ण पक्षीय चन्द्रमा राहु सूर्य से युक्त हो तो त से कुक्षिच्छेदन महात्मा मुनिजन कहते हैं ।

उदर विचार

मूनलग्ने यदि या तदंशे सूर्यान्विते कृष्णनिशाकरे तु ॥
गीन्द्र चन्द्रात्मजसंयुक्तेऽर्के रश्याभिभूतेह्युदरस्य भेदः ॥

मंगल लग्न में अथवा मंगल की राशि वा नवांश लग्न में हो तथा पक्षीय चन्द्रमा सूर्य से और अस्तंगत राहु बुध से युक्त हो तो उदर का होता है अर्थात् शस्त्रादि से पेट फटता है ।

विद्यावान् तथा विद्याहीन के योग

विद्यास्थानाधिपो वा बुधगुरुसहितश्चेत्त्रिके वर्त्तमानो,
विद्याहीनो नरः स्यादथ नवमनिजक्षेत्रकेन्द्रेषु तद्वान् ।
बालत्वं वृद्धता वा यदि गगनसदां जन्मकाले तपाख्या ।
प्रज्ञामान्द्यं नराणामथ यदि विहगः स्वर्क्षगोदोषहृत्स्यात् ।

यदि विद्या स्थान (पंचम) का स्वामी वा बुध गरु सहित त्रिकस्थान ।८।१२ में वर्तमान हो तो मनुष्य विद्याहीन होता है । यदि विद्यास्थानेश बुध गुरु नवम पंचम तथा केन्द्र में हो तो विद्यावान् होता है । जन्म

समय में ग्रहों का वालत्व वा वृद्धत्व हो तो मनुष्यों की बुद्धि मंद होती है परन्तु योगकारक ग्रह स्वराशिगत हो तो मंद बुद्धि दोषहर्त्ता होता है ।

विद्याधिपौ जीवबुधाववविद्यामरित्रयस्थौ कुरुतोऽथ नौ चेत् ।
केन्द्रत्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्थौ प्रयच्छतां द्रागनवद्यविद्याम् ॥

यदि गुरु बुध पंचमेश होकर दुष्टस्थान ६।८।१२ में स्थित हो तो अविद्या को करते हैं अथवा पंचमेश बुध गुरु केन्द्र में वा त्रिकोण में स्वराशि में वा स्वोच्च में स्थित हो तो शीघ्र अनवद्य विद्या को देते हैं ।

वागीश बुधजीवेषु निर्विद्यो नाशगेषु च ।
केन्द्रे तेषु त्रिकोणे वा स्वर्क्षे वा विद्ययान्वितः ॥

यदि द्वितीयभाव का स्वामी और बुध गुरु अष्टम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य विद्याहीन होता है अथवा द्वितीयेश तथा बुध, गुरु केन्द्र में वा त्रिकोण वा स्वराशि में हो तो विद्या से युक्त होता है ।

सुखेशे केन्द्रभावस्थे तथा केन्द्रे स्थितो भृगुः ।
शशिजे स्वोच्चराशिस्थे विद्वान् पण्डित एव सः ॥

यदि सुखेश तथा शुक्र केन्द्र में हो और बुध स्वोच्चराशि में हो तो वह विद्वान् पण्डित होता है ।

विद्याराशौ निजपतियुते सौम्ययुक्तेक्षिते वा,
जातो विद्याविनयचतुरश्चन्द्रसूनौ बलिष्ठे ।
दुःस्थे पापद्युचरसहिते पापदृष्टे तदीशे,
विद्याहीनो भवति मनुजः पापराशिस्थिते वा ॥

यदि चतुर्थ स्थान अपने पति से युक्त हो वा शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो तथा बुध बलवान् हो तो पुरुष विद्यावान् नम्र तथा चतुर होता है । यदि सुखेश पापग्रह से युक्त दृष्ट हो कर दुष्ट स्थान ६।८।१२ में स्थित हो वा पाप ग्रह की राशि में स्थित हो तो मनुष्य विद्या से हीन होता है ।

विद्यास्थानपजीवचन्द्रतनयाः षट्त्रिव्ययायुः स्थिता
विद्याबुद्धिविवेकहीनफलदा नीचारिगा वा यदि ।
स्वोच्चस्वर्क्षगतास्त्रिककोणगृहगाः केन्द्रस्थिता वा यदि
श्रीविद्याविनयादियुक्तिनिपुणो राजाधिराजप्रियः ।।

सुखेश, गुरु, बुध, ये तीनों षष्ठ, तृतीय, द्वादश, अष्टम, स्थान में स्थित हो तो विद्या, बुद्धि, विवेक, से रहित करते हैं। यदि सुखेश, गुरु, बुध ये तीनों अपनी उच्च राशि में या स्वराशि में हों और त्रिकोण में या केन्द्र में स्थित हों तो 'मनुष्य' लक्ष्मी; विद्या, नम्रतादि गुण वाला और युक्ति में चतुर तथा महाराज का प्यारा होता है ।

मन्दराहुसमन्वितेऽमरगुरौ शुक्रेन्दुपुत्रेक्षिते,
जातः शूद्रकलेवरोऽपि निखिलां विद्यामुपैति श्रियम् ।

यदि शनि-राहु से युक्त हुआ गुरु, शुक्र-बुध से दृष्ट हो तो इस योग में उत्पन्न हुआ शूद्र भी समस्त विद्या तथा लक्ष्मी को प्राप्त होता है ।

धर्मस्थानपतौ तु रिःफगृहगे पापग्रहे केन्द्रगे,
जातः पापरतः परान्नधनभुक् विद्याविहीनो भवेत् ।।

नवमेश व्ययस्थान में हो तथा पापग्रह केन्द्र में हो तो इस योग में उत्पन्न पुरुष पाप में संलग्न परान्न धन खाने वाला और विद्या से हीता है।

मित्रत्वप्रप्ति के योग

कारकस्थितराशीशे लग्ननाथेन वीक्षिते ।
राजमंत्रीभवेद्दाता वाक्पतौ बलसंयुते ॥

यदि 'बुद्धिकारकग्रहकी राशी का स्वामी' लग्नेश से दृष्ट हो और गुरु बलवान् हो तो राजमंत्री तथा दानी होता है ।

वुद्धीश्वरेण संयुक्ते गोपुराद्यशकान्विते ,
आगामिसूचको मंत्री कारके केन्द्रकोणगे ॥

यदि 'बुद्धिकारकग्रह केन्द्र में वा त्रिकोण में स्थित हो कर पंचमेश से युक्त हो और गोपुरादि दशवर्ग में स्थित हो तो आगामी काल की सूचना देने वाला मंत्री होता है ।

भृगौ सौम्यसमायुक्ते दृष्टे ताभ्यां शुभांशके ॥
त्रिकालज्ञो भवेज्जीवे स्वांशे मृद्वंशसंयुते ॥

यदि 'शुक्र बुध से युक्त हो और 'गुरु' शुभग्रहके नवांश में वा स्वनवांश में वा मृदुषष्ठांश में युक्त हो कर बुध शुक्र से दृष्ट हो तो त्रिकाल के जानने वाला होता है ।

चन्द्रेत्थशालिनिरवौ स्वगृहोच्चहद्दे,
व्योमस्थकर्मपदृशा नृपतेरमात्यः ।

भौमेक्षिते सकलकर्म करोऽब्जगुर्वो ।
दृष्ट्या नृपस्य लिपिकृत्सु तथा प्रधानम् ॥

यदि स्वराशि में वा उच्च राशि में वा स्वहद्दा में स्थित हुआ सूर्य चन्द्रमा से इत्थशाल करे और वह दशम स्थान में स्थित दशमेश से दृष्ट हो तो राजा का मंत्री होता है । यदि स्वगृहादिगत सूर्य चन्द्रमा से इत्थशाल करता हुआ मंगल से दृष्ट हो तो सफल कर्म करने वाला होता है । एवं वह सूर्य, चन्द्र, गुरु से दृष्ट होने से राजा के लेखकों के मध्य में प्रधान होता है ।

संगीत विद्यावादन योग

एवं शनौ गुरुदृशि क्षिति कर्मकारी
शुक्रेक्षिते गगनलग्नगते नरर्क्षे ।
संगीतविद्बुधनिरीक्षणतो द्वयं स्याद्
वीणादिबादयति भौमदृशा कुनृत्यः ॥

यदि शनि अपनी राशि उच्च राशि वा स्वहद्दा में स्थित हो कर चन्द्रमा से इत्थशाल करे और गुरु से दृष्ट हो तो कृषि कर्म करने वाला होता है । यदि चन्द्रमा के साथ इत्थाल करता हो, शनि बिषम राशि के दशम स्थान में स्थित होकर शुक्र से दृष्ट हो तो संगीत विद्या जानने वाला होता है और बुध दृष्ट होने से संगीत विद्या जानने वाला होता है तथा वीणादि बाजे बजाने वाला होता है, एवं भौम से दृष्ट होने से कुत्सित नृत्य वाला होता है ।

धर्म शास्त्रादि ज्ञान योग

एवं गुरौ खलु घृणी क्षिति धर्मशास्त्रं,
सार्के कुतर्क भृदसौख्य विवादवांश्च ,

एवं बुधे लिपिकरो गुरुभेज्ञयोगाद्,

अध्यापको रविदृशा लिपिकृत्प्रधानम् ।।

इस प्रकार स्वगृहोच्चादि में स्थित गुरु चन्द्रमा से इत्थशाल करे तो दयावान् तथा कृषि और धर्म शास्त्र जानने वाला होता है । यदि गुरु सूर्य सहित हो तो कुतर्क करने वाला तथा सुख रहित विवाद वाला होता है । इस प्रकार स्वगृहोच्चादि में स्थित बुध चन्द्रमा से इत्थशाल करे तो लिपि करने वाला होता है । धनु तथा मीन राशि में बुध के योग होने से अध्यापक होता है और सूर्य दृष्ट होने से लेखकों में प्रधान होता है ।

गणितज्ञ के योग

गणितज्ञो भवेज्जातो वाग्भावे भूमिनन्दने ।

ससौम्ये बुधसंदृष्टे केन्द्रे वा सौमनन्दने ।।

यदि मंगल द्वितीय स्थान में स्थित हो कर बुध से युक्त वा दृष्ट अथवा केन्द्र में बुध हो तो इस योग में उत्पन्न हुआ पुरुष गणित जानने वाला होता है ।

वाग्भावपे बुधे स्वोच्चे लग्ने देवेन्द्रपूजिते ।

शनावष्टमसंयुक्ते गणितज्ञो भवेन्नरः ।।

द्वितीयेश बुध अपने उच्च में हो तथा लग्न में गुरु हो और शनि अष्टम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य गणित जानने वाला होता है ।

केन्द्रत्रिकोणगे जीवे युक्ते स्वोच्चंगते सति ।

वाग्भावपेन्दुपुत्रे वा गणितज्ञो भवेन्नरः ।।

यदि गुरु केन्द्र में वा त्रिकोण में स्थित हो और शुक्र अपनी उच्च राशि में स्थित हो अथवा द्वितीयेश बुध अपनी उच्चराशि में स्थित हो तो मनुष्य गणित जानने वाला होता है।

ज्योतिःशास्त्रज्ञत्व के योग

केन्द्रे बुधे वागधिपे बलाढ्ये शुक्रे धने भ्रातृगते ससौम्ये।
स्वोच्चे धने दानवपूजिते वा ज्योतिर्विदां श्रेष्ठतमो नरःस्यात्।।

यदि बुध केन्द्र में स्थित हो और द्वितीयेश बलवान् हो अथवा बुध सहित शुक्र धन में वा तृतीय में स्थित हो अथवा अपनी उच्चराशि का शुक्र धन स्थान में स्थित हो तो वह मनुष्य ज्योतिषियों में अत्यन्त श्रेष्ठ होता है।

षट्शास्त्रज्ञत्व योग

षट्शास्त्रवल्लभः केन्द्रे जीवे दानवपूजिते।
सिंहासने गोपुरांशे वाग्भावस्थांशगे बुधे।।

यदि गुरु केन्द्र में हो और शुक्र सिंहासनांश में हो तथा द्वितीय स्थान में जो राशि स्थित हो, उस राशि के नवांश में बुध स्थित हो कर गोपुरांश में हो तो षट्शास्त्र जानने वाला विद्वान् होता है।

न्यायज्ञत्व योग

गुरुशुक्रौ धनेशौ चेद्रविभीमनिरीक्षितौ।
मूलत्रिकोणतुंगे वा तर्कशास्त्रविदांवरः।।

यदि गुरु तथा शुक्र धन स्थान के स्वामी हों और सूर्य मंगल से दृष्ट हों अथवा गुरु शुक्र मूलत्रिकोण में वा स्वोच्च में हो तो पुरुष तर्क शास्त्र जानने वालों में श्रेष्ठ होता है।

बुद्धिस्थानाधिपे भौमे गुरुशुक्र निरीक्षते।
मेषनन्दांशके वापि न्यायशास्त्र विशारदः ॥

यदि पंचमेश भौम गुरु शुक्र से दृष्ट हो अथवा मेष के नवांश में हो तो न्यायशास्त्र में पण्डित होता है।

वाग्भावपे रवौ भौमे गुरुशुक्रनिरीक्षिते।
पारावतांशगे सौम्ये तर्क युक्ति परायणः।

यदि द्वितीयेश सूर्य मंगल हों और वे गुरु शुक्र से दृष्ट हों तथा बुध पारावतांश में हो तो पुरुष तर्क युक्ति में तत्पर होता है।

शब्दशास्त्र प्राप्त के योग

सम्पूर्ण बलसंयुक्ते गुरौ तद्भवनेश्वरे।
दिनेशभृगुसंदृष्टे शाब्दिकोऽयं भवेन्नरः ॥

यदि गुरु तथा द्वितीयेश सम्पूर्ण बल से युक्त हों और सूर्य शुक्र से दृष्ट हो तो वह मनुष्य शब्दशास्त्र जानने वाला होता है।

मीमांसाशास्त्र प्राप्ति के योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये स्वोच्चमित्र स्ववर्गगे।
गुरुदृष्टिसमायुक्ते मीमांसाध्यापने रतः ॥

यदि पंचमेश शुभग्रह हो और वह स्वोच्च राशि में, मित्र राशि में तथा स्ववर्ग में स्थित हो गुरु की दृष्टि से युक्त हो तो मीमांसा शास्त्र के अध्यापन में संलग्न होता है ।

देव सेवा के योग

लग्नादात्मनि पुंग्रहेक्षितयुते पुंदेवताराधनं,
युग्मे शुक्रनिशाकरेक्षितयुते स्त्रीदेवतामिच्छति ।
भानौ भास्करमुख्यमिन्दुसितयोर्गौरीं कुमारं कुजे,
विष्णुं चन्द्रसुते गुरौ शशिधरं शन्यादियोगे परान् ।

यदि लग्न से पंचम स्थान पुरुष ग्रहों से दृष्ट वा युक्त हो तो पुरुष देवताओं का आराधन करे, एवं पंचम स्थान में समराशि हो और चन्द्रमा से दृष्ट वा युक्त हो तो स्त्री देवताओं का आराधन करे । यदि पंचम स्थान सूर्य से दृष्ट वा युक्त हो तो भास्करादि देवों की आराधना करे । चन्द्र शुक्रमें गौरी की आराधना करे एवं मंगल में कुमार कार्तिक की, बुध में विष्णु की, गुरु में शिव की, शनि, राहूकेतु में अन्य क्षुद्र देवी की आराधना करे ।

लग्नाधिपस्यात्मपतौ सपत्ने तद्देवभक्तिः सुतनाशहेतुः ।
समानता साम्यतरे सुहृत्त्वे तद्देवतापार कृपामुपैति ॥

यदि लग्नेश का पंचमेश से शत्रुत्व हो तो उस देवता की भक्ति पुत्रनाश का कारण होती है । यदि लग्नेश पंचमेश की समता हो तो देवता की भक्ति भी समत्व होती है और दोनों की परस्पर मित्रता हो तो उस देवता की अपार कृपा को प्राप्त होती है ।

वेदांतज्ञत्व के योग

वाग्भावपे बुधे स्वोच्चे गोपुरांशगते शनौ ।

सिंहासने गुरौ वापि वेदांतज्ञो भवेन्नरः ॥

यदि द्वितीयेश बुध अपनी उच्चराशि में हो तथा शनि गोपुरांश में हो वा गुरु सिंहासनांश में हो तो मनुष्य वेदांत जानने वाला होता है ।

वेदांतपरिशीलः स्यात्केन्द्रकोणे गुरौ सति ।

बुधेन गुरुणा दृष्टे शनौ पारावतांशके ॥

यदि गुरु केन्द्र में वा त्रिकोण में स्थित हो और शनि पारावतांश में स्थित होकर बुध गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य वेदांत जानने वाला होता है ।

उत्तमांशे भृगौ लग्ने केन्द्रे वा तद्विधे भृगौ ।

देवलोकगते चन्द्रे वेदांत ज्ञानपारगः ॥

यदि शुक्र उत्तमांश में स्थित होकर लग्न में हो अथवा शुक्र उत्तमांश में स्थित हो कर केन्द्र में हो और चन्द्रमा देव लोकांश में हो, तो वेदांत ज्ञान का पारगामी होता है ।

क्रमान्तज्ञत्वयोग तथा शास्त्रपरायणत्व के योग

गुरौ बलाढ्ये धनराशि युक्ते तदीश्वराक्रांतनवांशनाथे ।

केन्द्रत्रिकोणे शुभवीक्षिते वा क्रमांतविच्छास्त्रपरायणश्च ॥

यदि गुरु बलवान् होकर धनभाव में स्थित हो और द्वितीयेश के नवांश

का स्वामी केन्द्र वा त्रिकोण में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो क्रमान्त-वेत्ता तथा शास्त्र पारायण होता है ।

निगमान्तज्ञत्व के योग

लग्नेश्वरे धनस्थे लग्ने वा सौम्यसंयुते तुंगे ।
पारावते तदीशे जातो निगमान्तविद्व्यये शुक्रे ।।

यदि लग्नेश धनस्थान में हों वा अपनी उच्चराशि का शुभ ग्रह लग्न में हो तथा धनेश पारावतांश में हो और शुक्र व्यय स्थान में हो तो 'जातक' निगमान्त वेत्ता होता है ।

सभाजड योग

सभाजडो वागधिपः सपापः कर्मस्थितो नीचगतोऽर्कपुत्रः ।
मान्द्यान्विते वाग्भवनेऽर्कयुक्ते पापैस्तुदृष्टे सजडोऽत्र जातः ।।

यदि द्वितीयेश पापयुक्त हो और दशमस्थान में हो तथा शनि नीच में हो तो समाजजड़ होता है अथवा द्वितीय स्थान में मान्दि और सूर्य स्थित हों वे दोनों पापसे दृष्ट हों वे मनुष्य जड़ होता है ।

जड़ःसकेन्द्रे विधुमान्दिमन्दः ससोदरेशो विदिसात्त्विकःस्यात् ।
बलिष्ठदृष्टाः कुजचान्द्रिचन्द्रा नरः सशीघ्रोत्तरदानशीलः ।।

यदि चन्द्र गुलिक तथा शनि केन्द्र में हों तो मूर्ख होता है और बुध तृतीयेश से युक्त हो तो सात्विक प्रकृति वाला होता है एवं भौम बुध तथा चन्द्र बली ग्रह से दृष्ट हों तो वह मनुष्य शीघ्र उत्तर देने वाला होता है ।

बुध्दिजाड्य के योग

पंचमे मंदसंयुक्ते लग्नेशे मन्दवीक्षिते ।
तदीशे पापसंयुक्ते बुद्धिजाड्यं समादिशेत् ।।

पञ्चमस्थान में शनि हो तथा लग्नेश शनि से दृष्ट हो और पञ्चमेश पापग्रह से युक्त हो तो बुद्धि की जड़ता कहे ।

पंचमभावमें स्थित सूर्यादिग्रहोंके वशसे बुद्धि के योग

पञ्चमेऽर्के स्थिरा बुद्धिश्चन्द्रे चञ्चलचित्तता ।
उग्रबुद्धिर्भूमिपुत्रे बुधे जीवे शुभामतिः ।।
मृदुबुद्धिर्भृगोः पुत्रे कुटिला राहुमन्दयोः ।

पञ्चम स्थान में सूर्य हो तो स्थिर बुद्धि और चन्द्रमा हों तो चंचल बुद्धि तथा मंगल हो तो उग्रबुधि एवं बुध, गुरु हों तो सुन्दर बुद्धि शुक्र हो हो कोमल बुद्धि और राहु शनि हों तो कुटिल बुद्धि होती है ।

दुःस्थे बुद्धिस्थानपेऽदृश्यगे वा जातो मन्दप्रायबुद्धिं समेति ।
केन्द्रे कोणे सौम्यवागीशयुक्ते वीर्योपेते बुद्धिमानिंगितज्ञः ।।

यदि बुद्धि स्थान (पंचम) का स्वामी दुष्ट स्थान ६।७।१२ में स्थित हो वा अदृश्य भाग में हो तो इस योग में उत्पन्न पुरुष बड़ी मन्द बुद्धि को प्राप्त होता है । यदि पञ्चमेश केन्द्र वा त्रिकोण में स्थित होकर बुध, गुरु से युक्त हो तथा बलवान् हो तो मनुष्य बुद्धिमान् और अभिप्रायानुसार चेष्टा जानने वाला होता है ।

पूर्णेन्दौ रविनन्दांन्मुसरिफे भौमाच्च सूर्येऽस्तगे,
क्रूरे लग्नतदीशदर्शनशुभा दृष्ट्या च यः स्यात्तनौ ।
अन्ह्यर्कोनिशिचंद्रमास्तदधिपस्यांशेशदृष्ट्या द्वयोः,
शुक्रे चापभ्रूषस्थमिंदुमवनीपुत्रे च पश्यत्यधी ॥

पूर्ण चन्द्रमा शनि से मुसरिफ़ योग करता हो तथा मंगल से सूर्य सप्तम हो अथवा जो ग्रह क्रूर लग्न में स्थित हो वह लग्नेश और शुभ ग्रह से अदृष्ट होने से अथवा दिन में सूर्य और रात्रि में चन्द्रमा ये दोनों उसके स्वामी के नवांशेश से दृष्ट होने से अथवा धनु तथा मीन राशि स्थित चन्द्रमा को शुक्र और मंगल देखे तो इन योगों में उत्पन्न हुआ पुरुष बुद्धिहीन होता है ।

❀लग्नगे हिमरुचौ दशमस्थे साधिकाररविजे द्यूनदृष्ट्या ।
ज्ञेक्षिते मतिवियुग्बुधपूर्णवीक्षिते विमतिरंगकुजेंदौ ॥

लग्न में चन्द्रमा स्थित हो तथा अधिकार सहित शनि दशम स्थान में स्थित हो अर्थात् शनि अपनी हद्दा में तथा अपने नवांश में स्थित हो कर दशम-स्थान में स्थित हो और उस को बुध सप्तम दृष्टि से देखे तो बुद्धि रहित होता है ।

बुद्धिहीन के योग

पृथ्वीसूनुं मृगांकं तनुनिलयगतं पूर्णदृष्ट्येन्दुसूनुः,
पश्येच्चेद्बुद्धिहीनस्त्वथ शशितनुपौ भूभुवा पीड़ितौ वा ।

❀❀'अर्थान्तरम्' प्रालेयांशौ तनुस्थे गगनसदयुगे साधिकारेऽर्कसूनौ ।
दृष्टेऽस्मिन्कामदृष्ट्या हिमकिरणभुवा बुद्धिहीनः मनवः स्यादिति ।

लग्नस्थे रौहिणेये तदनु रविशनी क्रूरदृष्टौ रिपस्था-
वेकर्क्षे चेकभागे भवति गतमतिर्दृष्टिहीनौ शुभानाम् ॥
°लग्नस्थं पश्यतीन्दुं दिनमणितनयं भूमिजो द्यूनदृष्ट्या
बुद्ध्या हीनो नरः स्यादिनविधुविवरे भूमिजश्चेत्तथैव ।

यदि बुध लग्न में स्थित हुए मंगल और चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धि से हीन होता है अथवा 'चन्द्रमा' और 'लग्नेश' मंगल से पूर्ण दृष्ट हों तो भी बुद्धि से हीन होता है। यदि बुध लग्न में स्थित हो, तदनन्तर सूर्य तथा शनि क्रूर ग्रह से दृष्ट हों और षष्ठ स्थान में स्थित हो तथा एक राशि में और नवांश में स्थित हों एवं शुभ ग्रहों की दृष्टि से रहित हों तो मनुष्य बुद्धि रहित होता है। यदि 'मंगल' लग्न में स्थित हुए चन्द्रमा को और शनि को सप्तम दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य बुद्धि से हीन होता है अथवा 'मंगल' सूर्य और चन्द्रमा के अन्तर्गत हो तो उसी प्रकार बुद्धि से हीन होता है।

बुद्धिभावं परित्यज्य रिपुक्षेत्रेऽस्तगो यदा
पंचमेशो नष्टबलो बुद्धिहीनो नरो भवेत् ॥

यदि पंचमेश पंचम स्थान को छोड़ कर अन्य स्थान में शत्रु राशि में

°'मतान्तरम्' लग्नगौ शनिबुधौ द्यूनदृष्ट्याऽसृक् प्रपश्यति यदा मतिहीनः। चन्द्रभानुविवरे यदि भौमो यास्यतीह खलु बुद्धिविहीनः ॥१॥ लग्नेश्वरे शशिनि भौमनिपीड़िते च बुद्ध्या विहीन उदये सबुधेऽपि तद्वत्। एकर्क्षगैकलवगौ रिपुगौ शनीनौ दृष्टौ खलैर्गतमतिः शुभदृष्टिहीनाविति।

स्थित हो वा अस्तंगत वा नष्टबल हो तो मनुष्य बुद्धिहीन होता है ।

बुद्धिनाथो यदा षष्ठे अष्टमे चास्तगो यदा ।
क्रूरदृष्टं क्रूरयुक्तं पञ्चमं बुद्धिवर्जितः ॥

यदि पञ्चमेश षष्ठ वा अष्टम स्थान में स्थित हो कर अस्तगत हो और पञ्चम भाव क्रूर गृह से दृष्ट युक्त हो तो मनुष्य बुद्धि से रहित होता है ।

मूर्खत्व के योग

बुद्धिभावगताः क्रूराः शत्रुगृहसमाश्रिताः ।
नीचराशिगताश्चैव मूर्खो वै मनुजो भवेत् ॥

पंचमस्थान में पापग्रहस्थित हों और वे शत्रुराशि में वा नीच राशि में हों तो मनुष्य मूर्ख होता है ।

क्रूरो वाऽप्यथवा सौम्यो नीचे वा सुतभावगः ।
विनष्टबलतेजा वै महामूर्खो नरो भवेत् ॥

यदि पञ्चम भाव में स्थित हुआ पापगृह और शुभगृह नीच राशि में बल से रहित हो वा नष्ट तेज वाला हो तो मनुष्य महामूर्ख होता है ।

रविचन्द्राहिमन्दानां स्थितोऽप्येको हि पञ्चमे ।
पंचमेशो विनष्टो वै महामूर्खो भवेन्नरः ॥

सूर्य, चन्द्र, राहू, शनि, इन चारों में से एक कोई भी पञ्चम स्थान

स्थित हो और पञ्चमेश नष्ट हो तो मनुष्य महामूर्ख होता है ।

वुद्धिस्वामी विनष्टो वै रविराहुशनैश्चरैः ॥
दृष्टो युक्तो विशेषेण महामुर्खो भवेन्नरः ॥

यदि पञ्चमेश नष्ट हो तथा पञ्चमेश विशेष रूप से सूर्य, राहु, श
से युक्त हो तो मनुष्य महामूर्ख होता है ।

बुद्धिश्रैष्ठ्य के योग

सौम्ये तु बुद्धिभावस्थे गुरुशुक्रनिरीक्षिते ।
तादृशे बुद्धिनाथे वा सर्वेषां वुद्धिदो भवेत् ॥
ऊहापोहसमर्थः स्यात्तदीशे गोपुरांशके ॥

पञ्चमस्थान में स्थित हुआ शुभगृह गुरु शुक्र से दृष्ट हो अथवा पञ्
मेश शुभगृह हो और वह गुरु शुक्र से दृष्ट हो तो समस्त मनुष्यों को बुद्धि दे
वाला होता है । यदि पञ्चमेश गोपुरांश में हो तो शंका समाधान करने
समर्थ होता है ।

बुद्धिभ्रम के योग

तनुपतिर्विकलो विकलांशगौ विकलखेटविलोकनसंयुतः
विकलपञ्चमपस्य गृहंगतः खलु तदा मनुजो विकलो भवेत्।

यदि 'लग्नेश' विकल हो और विकल के नवांश में हो तथा विकल ग्
से दृष्ट हो वा युवत हो एवं विकल पञ्चमेश की राशि में प्राप्त हो तो मनु

निश्चय से बुद्धि से विकल होता है।

जननलग्नपतिःखलसंयुतः परिगतास्तगतिः सुखभावगः।
सुतपतिर्यदि वास्तमुपागतो रिपुगतो मनुजो विकला भवेत्॥

यदि 'जन्मलग्नेश' पापगृह से युक्त हो और अस्तगति को प्राप्त होकर सुख में हो एवं 'पञ्चमेश' अस्तंगत होकर षष्ठस्थान में हो तो मनुष्य विकल होता है।

लग्नेशो यदि पुत्रभावविगतः क्रूरेण वा संयुतो,
नीचो वा परिहीन अंशविभवो नष्टो हि नष्टांशके।
नष्टौ नष्टबलः षडष्टविगतो वास्तंगतो बुद्धिपः,
क्रूरेणैव विलोकितो हि मनुजो बुद्धिभ्रमो मानवः॥

यदि 'लग्नेश' पापगृह से युक्त होकर पंचमस्थान में हो वा नीचराशि में हो वा हीनांश में हो वा हीन राशि हो वा नष्ट के नवांश में हो, एवं 'पञ्चमेश' नष्ट हो और नवम हो तथा षष्ठ, अष्टमस्थान में हो वा अस्तंगत हो वा क्रूर दृष्ट हो तो मनुष्य बुद्धिभ्रम वाला होता है।

पंचमेशः स्थितः षष्ठे चास्तंगो तनुपोऽथवा।
क्रूराक्रान्तः क्रूरबुद्धिर्विकलो मानवो भवेत्॥

यदि 'पचंमेश' षष्ठस्थान में स्थित हो और 'लग्नेश' अस्तंगत हो अथवा क्रूराक्रान्त हो तो मनुष्य क्रूरबुद्धि तथा विकल होता है।

तनयगाः खलखेटसमायुता, बुध बृहस्पतिभार्गवनंदनाः ।
रिपुगृहेष्वथ नीचगतास्तथा, तनयोऽपि तथैव नरो भ्रमी ॥

जो बुध, शुक्र, पञ्चमस्थान में स्थित हों और पाप ग्रह से युक्त हों वा शत्रु राशि में हों वा नीच राशि में हों तथा पञ्चमेश भी पंचमस्थान में स्थित हो और पापग्रह से युक्त हो वा शत्रुराशि में वा नीचराशि में हो तो मनुष्य भ्रम वाला है ।

नष्टांशके हि लग्नेशे बुद्धिपे तु तथैव च ।
व्ययषष्ठगतौ चैव मनुजो विकलो भवेत् ॥

यदि 'लग्नेश' और 'पञ्चमेश' नष्टग्रह के नवांश में स्थित होकर द्वादश और षष्ठ स्थान में हों तो मनुष्य विकल होता है ।

लग्नेशो बुद्धिपश्चैव क्रूरग्रहसमायुतौ ।
विनष्टौ रिपुभावस्था अष्टमे मनुजो भ्रमी ॥

जो 'लग्नेश' 'पञ्चमेश' क्रूर ग्रह से युक्त हों और नष्ट हों तथा षष्ठ वा अष्टम स्थान में स्थित हों तो मनुष्य भ्रम वाला होता है ।

तनयपस्तनुपोऽथ षडष्टगौ खलखगैर्वियुतौ त्वथवास्तगो ।
तनयगो यदि नीचखगो भवेद्विकलतां तनुते जनितस्य तु ॥

यदि पञ्चमेश तथा लग्नेश षष्ठ तथा अष्टम स्थान में स्थित हों और पापग्रहों से युक्त हों अथवा अस्तंगत हों और यदि पञ्चम स्थान में नीच ग्रह स्थित हो तो इस योग में उत्पन्न हुए बालक की बुद्धि में विकलता को करते हैं ।

विस्मृति बुद्धि के योग

मन्दमान्द्यगुसंयुक्ते पंचमे शुभवर्जिते ।
तदीशे पापसंदृष्टे विस्मृतिः प्रायशो भवेत् ॥

यदि 'पञ्चमस्थान' शनि और मांदि से युक्त हो तथा शुभ ग्रह से रहित हो और पञ्चमेश पापग्रह से दृष्ट हो तो बहुधा विस्मृति होती है ।

बुद्धिर्विस्मृतिपूर्वा स्यात्कारकेऽशुभसंयुते ।
तदीशे पापसंयुक्ते क्रूरषष्ठ्यंशकेऽपि वा ॥

जो 'बुद्धिकारक ग्रह' पापग्रह से युक्त हो तथा पञ्चमेश भी पापग्रह से युक्त हो अथवा क्रूर षष्ठांश में स्थित हो तो विस्मृति-पूर्वक बुद्धिवाला होता है ।

बुद्धिनाश के योग

पञ्चमे पापसंयुक्ते तदीशे पापसंयुते ।
क्रूरषष्ठ्यंशके वापि बुद्धिनाशो भवेत्तदा ॥

पञ्चम स्थान में पापग्रह स्थित हो तथा पञ्चमेश पापग्रह से युक्त हो वा क्रूर षष्ठांश में स्थित हो तो बुद्धिनाश होता है ।

नीचमूढारिगेहस्थे पापखेचर वीक्षिते ।
क्रूरषष्ठ्यंशसंयुक्ते बुद्धिनाशो भवेत्तदा ॥

अथवा 'पञ्चमेश' नीच राशि में वा अस्तंगत वा शत्रु राशि

में स्थित हो और पापग्रह से दृष्ट हो तथा क्रूर षष्ठांश में स्थित हो तो बुद्धि-नाश होता है।

बुद्धि-प्राप्ति के योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान्भवेत् ।।

जो पञ्चमेश शुभग्रह हो और शुभग्रह की दृष्टि से युक्त हो अथवा पञ्चम स्थान में शुभग्रह की राशि हो तो मनुष्य बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होता है।

परमोच्चांशके बुद्धिस्थाननाथेन वीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।

यदि 'पञ्चमेश' परमोच्चांश में हो और पञ्चम स्थान को देखता हो तथा पञ्चम भाव शुभग्रहों के मध्य में हों तो तीव्रबुद्धि को कहे।

कारके बलसम्पूर्णे तदीशे शुभवीक्षिते ।
बुद्धिस्थानेऽथवा सौम्ये तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।

जो बुद्धिकारक (बुध) ग्रह पूर्णबली हो और पञ्चमेश शुभग्रह से दृष्ट हो अथवा पञ्चम स्थान में बुध हो तो तीव्र-बुद्धि को कहे

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।

पञ्चमेश के 'नवांश राशि का स्वामी' शुभग्रह से दृष्ट हो अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि को है।

कारकस्थितराश्यंशनाथे केन्द्रत्रिकोणगे ।
बुद्धीश्वरेण संदृष्टे तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥

बुद्धिकारक (बुध) जिस राशि में और जिस नवांश में स्थित हो, उसका स्वामी केन्द्र में वा त्रिकोण में स्थित होकर पञ्चमेश से दृष्ट हो तो तीव्र बुद्धि को कहे।

शुभग्रहाणां मध्यस्थे बुद्धिराशौ शुभान्विते ।
गुरौ केन्द्रत्रिकोणे वा बुद्धिमार्गविशारदः ॥

जो पञ्चमभाव शुभग्रहों के मध्य में स्थित हो और पञ्चम स्थान में शुभग्रह स्थित हो अथवा गुरु केन्द्र त्रिकोण में स्थित हो तो बुद्धिमार्ग में विशारद होता है।

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये बुद्धिराशिगते गुरौ ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे भावे बुद्धिं विनिर्दिशेत् ॥

यदि पञ्चम स्थान का स्वामी शुभग्रह हो तथा पञ्चम स्थान में गुरु स्थित हो तो और पञ्चमभाव शुभग्रहों के मध्य में हो तो बुद्धि को कहे।

बुद्धिस्थानेश्वरे केन्द्रे शुभग्रहसमन्विते ।
उच्चग्रहसमायुक्ते ग्रहणादिपटुर्भवेत् ॥

यदि 'पञ्चमेश' केन्द्र में स्थित हो और शुभग्रहों से युक्त हो

वा उच्चग्रह से युक्त हो तो प्रत्येक विषय के ग्रहण करने में चतुर होता है।

मृद्वशादिसमायुक्ते नाथकारकखेचरे ।
शुभग्रहेण संदृष्टे धारणादिपटुर्भवेत् ॥

पञ्चमेश और बुद्धकारक ये दोनों मृदु षष्ठांशादि में युक्त हों और शुभग्रह से दृष्ट हों तो प्रत्येक विषय के धारणादिक में चतुर होता है।

गोपुराद्यंशके वापि धारणादिपटुर्भवेत् ।
परेंगितज्ञो मेधावी कारकस्थितभागपे ॥
केन्द्रत्रिकोणसंयुक्ते कारकग्रहवीक्षिते ।
नाथकारकसंयुक्तेत्र्यंशभागपतौ शुभे ॥
चतुष्टये त्रिकोणे वा शुभदृष्टेऽगितज्ञकृत् ।

अथवा 'पञ्चमेश' तथा 'बुद्धिकारक' ये दोनों गोपुरादि दशवर्गों में हों तो धारणादि में चतुर होता है। अथवा बुद्धिकारक ग्रह का नवांशेश केन्द्र में वा त्रिकोण में स्थित हो और बुद्धिकारक ग्रह से दृष्ट हो तो पर पुरुष के चेष्टित का जानने वाला तथा बुद्धिमान् होता है। अथवा 'पञ्चमेश' तथा 'बुद्धिकारक' इन दोनों के द्रेष्काणराशि का स्वामी शुभग्रह होकर केन्द्र में वा त्रिकोण में स्थित हो और शुभग्रह से दृष्ट हो तो चेष्टित (इशारा) जानने वाला होता है।

बुधभार्गवजीवानां स्थितोऽप्येको निरीक्ष्यते ।
पञ्चमेशस्तु सबलो बुद्धिमान् शास्त्रचिन्तकः ॥

यदि बुध, शुक्र, गुरु, इन तीनों में से एक कोई भी पञ्चम स्थान में स्थित हो तथा पञ्चम स्थान को देखे और पञ्चमेश बलवान् हो तो मनुष्य बुद्धिमान् तथा शास्त्रचिंतक होता है ।

बुद्धिभावगताः सौम्याः स्वोच्चगाः सबलास्तथा ।
पञ्चमेशस्तथा यातो बुद्धिमान् पुरुषोत्तमः ॥

पञ्चम स्थान में स्थित हुए शुभग्रह अपनी उच्चराशि में हों तथा बलवान् हों और पञ्चमेश भी अपनी उच्चराशि में हो तथा बलिष्ठ हो तो वह मनुष्य बुद्धिमान् और पुरुषों में श्रेष्ठ होता है ।

लग्ने सौम्यो धने सौम्यो बुद्धिभावे तथैव च ।
बुद्धिमान् काव्यकर्त्ता च पुरुषो दीप्तकान्तिकः ।

लग्न में द्वितीय में तथा पञ्चम स्थान में शुभ स्थित हों तो पुरुष बुद्धिमान् काव्यकर्त्ता तथा उज्ज्वल कान्ति वाला होता है ।

एकः शुभग्रहो वापि सबलो बीर्य्यसंयुतः ।
बुद्धिभावगतो वापि शास्त्रकर्त्ता च मानवः ॥

यदि एक ही शुभग्रह बलसहित वीर्य्य से युक्त हो कर पञ्चम स्थान स्थित हो तो मनुष्य शास्त्रकर्ता होता है ।

शुभग्रहैः साधुधर्मा प्रपञ्ची चाशुभग्रहैः ।
युतिदृष्टिवशाद्वापि पञ्चमे फलमादिशेत् ॥

यदि पंचम स्थान शुभग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो साधु धर्म वाला होता है एवं पंचम स्थान पापग्रहों से युक्त-दृष्ट हो तो प्रपंची होता है। इस प्रकार शुभ पापग्रहों के योग दृष्टिवश से पंचम में फल को कहे।

धीस्थैः सत्खचरैः प्रवञ्चरचको दक्षोऽतिगूढः सुधीः
सन्मंत्रामरसेवनेषु निरतो नूनं सुशीलः सदा।
क्रूरैस्तत्रगतैरसन्मनुसुराराध्यो त्रिगूढ़ः कुधी—
मर्त्यः स्यादशुचिः प्रवञ्चरचनाशक्तः सतां निन्दकः॥

यदि पंचमभाव में शुभग्रह स्थित हों तो मनुष्य प्रपंच रचने वाला तथा चतुर अतिगूढ़ (जिसके मन की कोई न जान सके) एवं सद्बुद्धि वाला उत्तम मंत्र (उत्तम सलाह) अर्थात् यज्ञ अच्छे मन्त्र एवं देवताओं के सेवन में तत्पर रहे और निश्चय से नित्य सुशील होता है, यदि पंचम भाव में पापग्रह हों तो क्रूर मन्त्र तथा क्रूर देवता का आराधन करे एवं उसके मन में बात छिप न सके तथा वह मनुष्य कुत्सित बुद्धि, अपवित्र, प्रपंच रचना में असमर्थ और सज्जनों की निन्दा करने वाला होता है।

पञ्चम भावगत मेषादि राशियों के फल को कहते

मेषे सुतस्थे लभते मनुष्यः प्रायेण पुत्रान्विधनांस्तथा च।
क्रूरान्सुखेनाविक्रतानपत्यान्मोहानुरक्तान्कुचरित्रयुक्तान्॥

यदि मेषराशि पंचम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य बहु

निर्धन, क्रूर, सुख से हीन, मोहयुक्त, तथा दुष्टचरित्र वाले सन्तान की प्राप्ति होती है।

वृषे सुतस्थे जनते मनुष्यः प्राप्नोत्यपत्यानि मनोहराणि।
सुशीलयुक्तानि गुणाधिकानि प्रभासमेतानि बलाधिकानि॥

यदि जन्म समय में वृष राशि पंचम स्थान में हो तो मनुष्य मनोहर, अच्छे शील युक्त, गुणी, प्रभाव वाले और बली सन्तान को प्राप्त होता है।

मिथुने यस्य पुत्रस्थे तस्य पुत्रो गुणान्वितः।
सुखरूपः सुशीलश्च बली प्राज्ञः सुकौशलः॥

जिस पुरुष के पंचम भाव में मिथुन राशि स्थित हो, उस पुरुष का पुत्र गुणवान् अच्छे रूप वाला तथा शीलवान्, बली, पण्डित, तथा चतुर होता है।

कर्के सुतर्क्षे जनयेन्मनुष्यः पुत्रान्प्रसिद्धान्सुतलालसांश्च।
विस्तीर्णकीर्त्तिश्च महानुभावान् धनेन युक्तान्विनयेन युक्तान्॥

यदि कर्क राशि पंचम भाव में स्थित हो तो मनुष्य, विख्यात तथा पुत्रों की लालसा वाले और विस्तीर्ण कीर्ति तथा बड़े प्रभाव वाले धनी विनयसम्पन्न पुत्रों को उत्पन्न करता है।

सिंहे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः क्रूरस्वभावांस्तनयानकान्तान्।
मांसप्रियान् स्त्रीस्वजनान्सुतीव्रान्विदेशभाजो क्षुधया समेतान्॥

यदि सिंह राशि पंचम भाव में हो तो मनुष्य, क्रूर स्वभाव कान्तिहीन, मांस-प्रिय, तथा स्त्री स्वजन, बड़े तीव्र विदेश में रहने वाले तथा क्षधा सम्पन्न पुत्रों को उत्पन्न करता है।

कन्या यदा पञ्चमगा तदा स्यात्कन्या नराणां स्वजनैर्विहीना ।
पतिप्रियापत्यपरा प्रगल्भा प्रशान्तकामा गुणभूषणा च ॥

जब कन्या राशि पंचम स्थान में स्थित हो तो मनुष्यों की कन्या स्वजनों से हीन तथा पतिप्रिया सन्तानपारायरा तथा बड़ी वाचाल, प्रशान्त काम वाली और गुणभूपरा होती है।

तुलो यदा पंचमगो नराणां तदा सुशीलानि मनोहराणि ।
भवन्त्यपत्यानि सुरूपकान्ति क्रियासमेतानि सुखोचितानि ॥

जब तुला राशि पंचम स्थान में स्थित हो तो मनुष्यों के सुन्दरशील-युक्त और मनोहर रूप कान्ती क्रियायुत तथा सुखोचित सन्तान होती है।

कीटे सुतस्थे जनयेद्वियोनौ पुत्रान्मनुष्यः सुभगान् सुशीलान् ।
आमानदोषान्प्रणयेन युक्तान्सदानुरक्तान्निजगोत्रधर्मैः ॥

यदि वृश्चिक राशि पंचम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य वियोनि में सुन्दर ऐश्वर्ययुक्त तथा सुन्दर शील सम्पन्न तथा धनी निर्दोष स्नेह युक्त गोत्रधर्मों से युक्त पुत्रों को उत्पन्न करता है।

चापे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः सुतान्विचित्राह्वयमार्गयुक्तान् ।
धानुष्कचापान् हतशत्रुपक्षान् सेवाप्रियान्पार्थिवमानयुक्तान् ॥

यदि धन राशि पंचम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य चित्र विचित्र मार्ग युक्त, धनुषधारी शत्रु हंता, सेवा प्रिय. राजसत्कार युक्त को उत्पन्न करता है।

मृगे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः पुत्रान्मृषापापमतीन्कुरूपान् ।
युक्तान्कुकर्मण्यानुलोमधर्मान् क्लीवस्वभावानगभीरचेष्टान् ॥

यदि मकर राशि पंचम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य मिथ्याचारी पाप बुद्धि कुत्सितरूप से युक्त तथा कुकर्म से युक्त, अनुलोम धर्म, नपुंसक स्वभाव अगंभीर चेष्टायुक्त पुत्रों को उत्पन्न करता है ।

कुम्भे सुतस्थे स्थिरतासमेतान् गभीरचेष्टानतिशक्तियुक्तान् ।
पुत्रान्मनुष्यो जनयेत्प्रसिद्धान्नष्टात्मजान्कष्टमहाप्रसूतान् ॥
दशमगः कुरुते सुतनायको नृपतिकर्मकरं सुखसंयुतम् ।
विविधलाभयुतं प्रवरं नरं प्रवरकर्मकरं वनितारतम् ॥

जो पंचमेश दशम स्थान स्थित हो तो मनुष्य को राजाओं के कर्म करने वाला, सुख तथा अनेक प्रकार के लाभ से युक्त, श्रेष्ठ और श्रेष्ठ कर्म करने वाला तथा स्त्रियों का प्रिय करता है ।

सुतपतिर्भवगः सुखसंयुतं प्रकुरुते सुतमित्रयुतं नरम् ।
प्रवरगानकलाप्रवरं विभुं नृपतितुल्यकुलं च सदैव हि ॥

पंचमेश एकादश स्थान में हो तो मनुष्य को सुख से युक्त तथा पुत्र मित्र से युक्त करता है और गान विद्या में चतुर, समर्थ और सदा राजाओं के समान कुल वाला करता है ।

व्ययगतो व्ययकृत्सुतनायको विगतपुत्रसुखं खचरैः खलैः ।
सुतयुतं च शुभैः कुरुते नरं स्वपरदेशगमागमनोत्सुकम् ॥

यदि पंचमेश व्यय स्थान में हो तो मनुष्य को विशेष व्यय करने वाला करता है और पाप ग्रहों से पुत्र का सुख नहीं होता है। परन्तु शुभ ग्रह हों तो पुत्रों से युक्त और स्वदेश तथा परदेश के जाने आने में उत्साही करता है।

पंचम भाव पर सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि के फल को कहते हैं

सुतगृहे यदि सूर्यनिरीक्षिते प्रथमसन्ततिनाशकरश्च हि।
तदनु पीड़ितवायुतः सदा गृहभावाल्पसुखःकथितःसदा ॥

यदि पंचम भाव सूर्य से दृष्ट हो तो प्रथम सन्तान का नाश करता है, पीछे सदा वात से पीड़ा और स्त्री का अल्प सुख कहा है।

सुतस्थानगा चन्द्रदृष्टिर्यदा स्यात्प्रसूते सुखं मित्रजन्यं सदैव।
नरेन्द्रादितुल्यः स्ववंशे प्रधानोऽप्यथैवान्यदेशे क्रये जीवितं च ॥

जो पंचम स्थान में चन्द्रमा की दृष्टि हो तो मित्रों से सुख और अपने वंश में राजा के समान प्रधान तथा दूसरे देश में क्रय विक्रय की आजीविका करे।

सुतगृहे यदि भौमनिरीक्षते प्रथमसन्ततिनाशकरश्च हि।
जठरगः खलु वह्निरथाधिके भोजने भ्रमति चैव गृहे गृहे ॥

जो पंचम भाव मंगल से दृष्ट हो तो प्रथम सन्तान का नाश करता है। उदर की अग्नि तीव्र हो और भोजन के लिये गृह गृह में भ्रमण करे।

करता है । उदर की अग्नि तीव्र हो और भोजन के लिये गृह गृह में भ्रमण करे ।

सम्पूर्णदृष्टिर्यदि पंचमे च वुधो यदा स्यात्तनया प्रसूतिः ।
चतुष्टयान्ते खलु पुत्रजन्म सुकीर्तिरैश्वर्ययुतो नरो हि ॥

यदि पंचम स्थान पर बुध की सम्पूर्ण दृष्टि हो ती कन्या ही उत्पन्न हो, चार कन्या होने पर पुत्र हो और कीर्त्ति तथा ऐश्वर्य से युक्त मनुष्य होता है ।

सन्तान भावे गुरुपूर्णदृष्टिः सन्तानसौख्यं प्रचुरं करोति ।
शास्त्रेषु नैपुण्यमथो च लक्ष्मीं विद्याधनं वै चिरजीवितं च ॥

यदि पंचम स्थान में गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो सन्तान को धिक सुख करता है और सर्वशास्त्र में चातुर्य्य, लक्ष्मी, विद्या न, और आयु की वृद्धि करता है ।

सुतगृहं यदि काव्यनिरीक्षितं तनयजन्म पुनश्च सुता भवेत् ।
णवान् खलु धान्यसुसंचयी पठति शास्त्रमथापि च सौख्यभाक् ।

यदि पंचम स्थान शुक्र से दृष्ट हो तो पहले पुत्र फिर पुत्री और वह नुष्य द्रव्य से युक्त धान्य संचय करने वाला विद्या को पढ़ने वाला तथा ख भोगी होता है ।

सुतगृहं यदि मन्द निरीक्षितं सुतसुखं न करोति नरस्य हि ।
स्थिरमना यश आयवृद्धिभाक्स्वकुलधर्मरतश्च चिरं भवेत् ॥

यदि पंचम भाव शनि से दृष्ट हो तो मनुष्य को पुत्र का सुख नहीं

बचन बोलने वाला तथा बहुत मान से युक्त पुरुष श्रेष्ठ तथा सब से अधिक श्रेष्ठ करता है ।

रिपुगतस्तनयाधिपतिर्यदा रिपुजनारभितं कुरुते नरम् ।
स्थिरतनुं बहुदोषयुतं सदा धनसुतैरह्वितं खलखेचरैः ॥

जब पञ्चमेश षष्ठ स्थान में हो तो मनुष्य को शत्रुओं से मिलने वाला, दृढ़ शरीर, अनेक दोषों से युक्त करता है यदि पञ्चमेश पाप ग्रहों से युक्त हो तो धन पुत्र से रहित करता है ।

मदनगस्तनयस्थलनायकः सुभगपुत्रवती दयिता सदा ।
स्वजनभक्तिरता प्रियवादिनी सुजनशीलवती तनुमध्यमा ॥

जो पञ्चमेश सप्तम स्थान में हो तो उस पुरुष की स्त्री सुन्दर ऐश्वर्य तथा सुन्दर पुत्र वाली और अपने जनों की भक्ति में तत्पर प्रियवासिनी, सुजना, शीलवती तथा मध्यम शरीर वाली होती है ।

सुतपतौ निधनस्थलगे नरःकुवचनाभिरतो विगतांगकः ।
भवति चण्डरुचिश्चपलो नरो गतधनो विकल शठतस्करः॥

पञ्चमेश अष्टम स्थान में हो तो मनुष्य कुवचन बोलने वाला तथा विकल अंग, चंडरुचि, चपल, धनहीन, विकल, शठ और चोर होता है ।

सुकृतभावगतस्तनयाधिपः समवितर्क विभाजन वल्लभः ।
सकलशास्त्रकलाकुशलो भवेन्नृपतिदत्तरथाश्वयुतो नरः ॥

पञ्चमेश नवम भाव में हो तो मनुष्य, वितर्क वाला, मनुष्यों का प्रिय समस्त शास्त्रों की कला में चतुर, राजा के दिये रथादि से युक्त होता है।

चन्द्रः सुतस्थःससुतं प्रसूते विद्याधिकं ब्राह्मणदेवभक्तम्।
शुद्धस्वभावं विजितारि पक्षं प्रियंवदं पार्थिववल्लभं च॥

चन्द्रमा पञ्चम स्थान में स्थित हो तो पुत्रवान्, अधिक विद्यावान् ब्राह्मण देवताओं का भक्त, शुद्ध स्वभाव, शत्रुओं को जीतने वाला, प्रिय बोलने वाला तथा राजा के प्रिय मनुष्य को उत्पन्न करता है।

जितेन्द्रियः सत्यवचाः प्रसन्ना धनात्मजावाप्तसमस्तसौख्यः।
सुसंग्रही स्यान्मनुजःसुशीलः प्रसूतिकाले तनयालयेऽब्जे॥

यदि जन्म समय चन्द्रमा पञ्चम स्थान में हो तो मनुष्य जितेन्द्रिय, सत्यावादी, शरणागत साधु, धन तथा पुत्रों से प्राप्त समस्त सुख वाला संग्रह करने में तत्पर तथा सुशील होता हैं।

पञ्चमे रजनीनाथः कन्यापत्यमपुत्रकम्।
क्षीणः पापयुतो वापि जनयेच्चञ्चलां सुताम्॥

पंचम भाव में चन्द्रमा हो तो मनुष्य कन्या सन्तान वाला और पुत्रहीन होता है। यदि पंचम भाव में स्थित चन्द्रमा क्षीण हो या पाप ग्रहों से युक्त हो तो चंचल कन्या को उत्पन्न करता है।

पंचमभावगतसूर्यादिग्रहों के फल कहते हैं

सुतस्थितः स्वल्पसुतं प्रसूते दिनाधिनाथः प्रणयेन हीनम् ।
कुकृत्यरक्तः व्यसनाभिभूतं पित्ताधिकं भूरिविपक्षयुक्तम् ॥

यदि सूर्य पंचम स्थान में स्थित हो तो अल्पपुत्रवान्, स्नेह से रहित कुकर्म में आसक्त व्यसनों से अभिभूत, अधिक पित्त वाला तथा बहुत शत्रु पक्ष से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

स्वल्पापत्यं शैलदुर्गेशभक्ति सौख्येनयुक्तं विविधार्थयुक्तम् ।
भ्रांतस्वान्त मानवं हि प्रकुर्य्या सूनुस्थाने भानुमान्वर्त्तमानः ॥

जो पंचम स्थान में सूर्य वर्तमान हो तो मनुष्य को स्वल्प सन्तान, शैलदुर्गेश की भक्ति से युक्त, सुख युक्त तथा अनेक पदार्थों से भ्रमचित्त वाला करता है ।

❀ पंचमे स्थिरगेहे स्याद्रविः प्रथमपुत्रहा ।
न हन्ति चरभे पुत्रानन्यर्क्षे पुत्रघातकः ॥

जो पंचम स्थान में स्थित हुआ सूर्य स्थिर राशि में होतो प्रथम पुत्र का नाश करता है तथा चर राशि में हो तो पुत्रों का नाश नहीं करता है परन्तु अन्य राशि में अर्थात् द्विस्वभाव राशि में स्थित हुआ सूर्य पंचम भाव में हो तो पुत्र नाशक होता है ।

❀ 'पाठांतरम्' पञ्चमे स्वगृहे चेत्स्याद्रविः प्रथम पुत्रहा । न हन्ति चरमान्पुत्रानन्यर्क्षे गर्भघातक इति ।

सुतस्थानगते सूर्ये क्रूरैर्दृष्टेऽथवा तथा।
सुस्थिरा च भवेद्बुद्धिः प्रजास्वल्पा प्रजायते ॥

पंचम स्थान में स्थित सूर्य क्रूरग्रहों से दृष्ट हो तो स्थिर बुद्धि तथा अल्पसन्तान वाला होता है।

लोहानलभवापीडा शनिदृष्ट्या ह्यपत्यजा।
गर्भस्रावो भौमदृष्ट्या गर्भपातश्च राहुणा ॥
एवं द्विपापदृष्टिश्च मृतापत्यत्वकारणम्।
केतुना काकवन्ध्यत्वं राहुणा चानपत्यता।
बुधेक्षिते सुते सूर्ये द्वौ पुत्रौ पञ्चकन्यकाः।
कुजदृष्टया पुत्रनाशो राहुणा कन्यकामृतिः।
केतुदृष्ट्या गर्भपातः पुंस्त्रीग्रहविचारतः।
क्रूराक्रूरविचारैश्च संख्यानाशश्च सन्ततेः ॥

यदि पंचम स्थान में स्थित सूर्य शनि से दृष्ट हो तो लोह और अग्नि से उत्पन्न पीड़ा तथा सन्तान के कारण से उत्पन्न पीड़ा होती है। यदि पंचम स्थान में स्थित सूर्य भौम से दृष्ट हो तो गर्भच्युति एवं राहु से दृष्ट हो तो गर्भपात होता है। इस प्रकार पंचम भाव में स्थित सूर्य दो पापग्रहों से दृष्ट हो तो मृतसन्तान का कारण होता है। पंचम भावस्थ सूर्य केतु से दृष्ट हो तो काक-बन्ध्यत्व और राहु दृष्ट हो तो निःसन्तानत्व होता है एवं बुध दृष्ट बुध हो तो दो पुत्र तथा पांच कन्यायें होती हैं। मंगल की दृष्टि से पुत्र नाश और राहु की दृष्टि से कन्या का मरण होता

है तथा केतु की दृष्टि से गर्भ होता है। पुत्र संज्ञक तथा स्त्री संज्ञक ग्रहों के विचार से और पाप ग्रह तथा सौम्य ग्रहों के विचार से सन्तान संख्या के नाश का विचार करे।

सुतस्थितः सञ्जनयेच्च वक्रः सुतैर्विहीनः पुरुषं सदैव।
पापैः समेतं परतर्ककं च विद्याविहीनं गतसौहृदं च ॥

यदि पंचम स्थान में मंगल स्थित हो तो पुत्रों से हीन, पापों से युक्त, दूसरों से तर्क वाला, विद्याहीन, मित्रत्व रहित पुरुष को उत्पन्न करता है।

कफानिलव्याकुलता कलत्रान्मित्राच्च पुत्रादपि सौख्यहानिः।
मतिर्विलोमा विपुलाजनौ च प्रसूतिकाले तनयालयस्थे ॥

यदि जन्म समय में मंगल पंचम स्थान में हो तो मनुष्य कफ वात से व्याकुल हो और स्त्री, मित्र तथा पुत्र से भी सुख की हानि हो और विपरीत बुद्धि वाला होता है।

रिपुदृष्टो रिपुक्षेत्रे नीचे वा पञ्चमे स्थितः।
भूमिजो पुत्रशोकार्त्तं करोति नियतं नरम् ॥

पंचम स्थान में स्थित हुआ मंगल यदि शत्रु से दृष्ट हो वा शत्रु राशि में वा नीच राशि में हो तो मनुष्य को निश्चय पुत्र शोक से पीड़ित करता है।

स्वल्पात्मजं सञ्जनयेन्मनुष्यं सुतस्थितः सोमसुतोऽल्पवीर्य्यम्।
कीनाशमर्त्यं बहुपापसक्तं सुधालुमिष्टैः परिवर्जितं च

यदि बुध पंचम स्थान में स्थित हो तो स्वल्पपुत्रवान, अल्पवीर्य्य वाला कीनाश मनुष्य, बहुत पापों में आसक्त सुधा वाला, इष्टों सहित मनुष्य को उत्पन्न करता है।

पुत्रसौख्यसहितं बहुमित्रं मित्रवादकुशलं च सुशीलम्।
मानवं किल करोति सुरूपं शीतदीधतिसुतः सुतसंस्थः॥

यदि बुध पंचम स्थान में हो तो मनुष्य को पुत्र सुख से युक्त बहुत मित्र वाला, मित्र वाद में निपुण, सुशील और सुन्दर रूपवान् करता है।

पञ्मस्थश्चन्द्रपुत्रः सन्तानं प्रकरोति हि।
अस्तंगतः शत्रुदृष्टश्चोत्पन्नस्य विनाशकः॥

पंचम स्थान में स्थित बुध सन्तान को करता है परन्तु पंचम भावस्थ बुध अस्तंगत वा शत्रु दृष्ट हो तो उत्पन्न हुए पुत्र का नाश करता है।

पञ्चमर्क्षे गतो नीचं रविभौम विलोकितः।
तनुजं प्रतिवध्नाति पुत्रार्थे शोककर्षितः॥

पंचम स्थान में स्थित हुआ वुध नीच में राशि हो तथा सूर्य भौम से दृष्ट हो तो पुत्र का प्रतिबन्धक होता है और पुत्र के लिए शोक से कर्षित होता है।

प्रभूतपुत्रं सुरराजमन्त्री सुतस्थितः सञ्जनयेन्मनुष्यम्।
प्रख्यातियुक्तं सुधिया समेतं प्रियंवदं ब्राह्मणसम्मतं च॥

यदि गुरु पंचम स्थान में स्थित हो तो अधिक पुत्र वाला

विख्याति से युक्त तथा बुद्धिमान्, प्रिय बोलने वाला तथा ब्राह्मणसंमत मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

सन्मित्रपुत्रोत्तममंत्रशास्त्रसुखानि नाना धनवाहनानि ।
बृहस्पतिः कोमलवाग्विलासंनरं करोत्यात्मजभावसंस्थः ।।

यदि गुरु पंचम भाव में स्थित हो तो मनुष्य को अच्छे मित्र वाला उत्तम पुत्र वाला, मंत्र शास्त्र वाला और सुखी, धनी तथा बाहन वाला और कोमल वाणी और कोमल वाणी के विलास वाला करता है ।

समृद्धो बहुपुत्रश्च दाता भोक्ता गुणान्वितः ।
धनी मानी च सततं सुतस्थे देवतागुरौ ।।

पंचम भाव में स्थित हुआ गुरु मनुष्य की समृद्धि से युक्त बहुपुत्रवान् दानी, भोगी, गुणों से युक्त धनी और नित्यमानी करता है ।

भृगुणैकः शुभः पुत्रो जले चैको मृतो भवेत् ।
सुतैर्वियोगं मंदेन कन्यैका म्लेच्छगामिनी ।।

यदि पंचम स्थान में स्थित हुआ राहु सूर्य से युक्त, वा दृष्ट हो तो उस पुरुष की स्त्री पुत्र से वर्जित होती है और निःसन्तानता (पुत्रहीनता) होती है । यदि पंचम भावस्थ राहु चन्द्रमा से युक्त दृष्ट हो तो कुछ सन्तान हो कर निःसन्तानता होती है । एवं मंगल से दृष्ट हो तो पिता का नाश तथा गर्भपात होता है । यदि पंचम भावस्थ राहु बुध से युक्त दृष्ट हो तो कन्या उत्पन्न हो कर नष्ट हो जाती है और गुरु से युक्त दृष्ट दोनों एक शुभ

गुण वाला पुत्र हो और एक विवाहित पुत्र मृत्यु को प्राप्त होता है। पंचमस्थ राहु शनि से युक्त वा दृष्ट हो तो पुरुष पुत्रों से वियोग को प्राप्त होता है और एक कन्या म्लेच्छ-गामिनी होती है।

बुद्धभ्रिमं पुत्रविनाशनं च विद्याल्पतां स्वोदरपीडनं च।
महाभ्रमं वैरिविकल्पता च प्राप्नोति जन्तुः सुतगे च राहौ॥

यदि राहु पंचम में स्थित हो तो मनुष्य की बुद्धि में भ्रम तथा पुत्रों का नाश होता है एवं विद्या की अल्पता को और मनुष्य उदर पीड़ा को, महाभ्रम को तथा शत्रुओं की विकल्पना को प्राप्त होता है।

सुते सद्मनि स्याद्यदा सैंहिकेयः सुतेच्छा चिरं चित्तसंतापनीया।
भवेत्कुक्षिपीडा मृतिः क्षुत्प्रबोधाद्यदि स्यादयं स्वीयवर्गेण दृष्टः॥

जब राहु पंचम स्थान में हो तो बहुत काल तक पुत्र की प्राप्ति में चिन्ता रहे तथा कोख में पीड़ा हो और यदि वह राहु अपने वर्ग (पाप ग्रह) से दृष्ट हो तो उस पुरुष की क्षुधा से मृत्यु होती है।

तनयं दीनमलिनं सुतर्क्षे रचयेत्तमः।
❀यदि चन्द्रग्रहं तत्स्यात्तदा निःसन्ततिः पुमान्॥

पंचम स्थान में स्थित हुआ राहु दीन मलिन पुत्र को उत्पन्न करता है। यदि पंचम स्थान में स्थित राहु चन्द्र ग्रहण के समय का हो तो पुरुष सन्तान हीन होता है।

❀'पाठान्तरम्' यदि चन्द्रगृहं तत्स्यात्तदानीं सन्ततिर्भवेदिति।

सिंहे कुलीरराशौ राहुः पुत्रेऽथ पुत्रिणं कुरुते ।
अन्यस्मिन्नपि राशौ पुत्रविहीनो भवेन्मनुजः ॥

यदि पंचम स्थान में स्थित हुआ राहु सिंह राशि में वा कर्क राशि में प्राप्त हो तो मनुष्य को पुत्र वाला करता है । यदि अन्य राशि में स्थित हुआ राहु पंचम स्थान में हो तो मनुष्य पुत्र रहित होता है ।

सुतस्थानस्थिते राहौ भार्या पुष्पेण वर्जिता ।
सूर्य युक्ते सूर्य दृष्टे जायते चानपत्यता ॥
चन्द्रयुक्तेक्षिते राहौ किंचित्सुत्याऽनपत्यता ।
भौमदृष्ट्या पुत्रनाशो गर्भस्रावस्तथैव च ॥
बुधयुक्तेक्षिते कन्या जायते चापि नश्यति ।
गुरुणैकः शुभः पुत्रो मृतश्चैको विवाहितः ॥

करोति शुक्रः खलु पञ्चमस्थः सुतान्विचित्रान्प्रचुरप्रभागान् ।
वाचातिमुख्यानति सर्वकालान्प्रसूयते च प्रचुरप्रतापान् ॥

यदि शुक्र पंचम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य के विचित्र तथा अधिक प्रभाव वाले अधिक वाचाल अति सर्वकाल तथा बहुत प्रताप वाले पुत्रों को उत्पन्न करता है ।

सकलकाव्यकलाभिरलंकृतस्तनयवासनधान्यहसन्वितः ।
वसुपतिर्गुरुगौरवभाङ्नरो भृगुसुते सुतसद्मनि संस्थिते ॥

यदि शुक्र पंचम भाव में हो तो मनुष्य सम्पूर्ण काव्य कलाओं से

युक्त तथा पुत्र, वाहन और धान्य से युक्त धनवान और बड़े गौरव वाला होता है ।

सुतसुखमित्रोपचितं परमधनमतिपण्डितं शुक्रः ।
कुरुते पञ्चमराशौ मंत्रिणमथ दण्डनेतारम् ॥

यदि शुक्र पंचम स्थान में हो तो मनुष्य को पुत्र सुख वाला और मित्रों से पुष्ट तथा परमधनी अतिपण्डित और दंडपति करता है ।

करोति सौरः खलु पञ्चमस्थः कुमित्रभाजं च कुपुत्रयुक्तम् ।
विहीनकोषं विगतप्रतापं विवर्जितं सर्वसुखेन नित्यम् ॥

यदि शनि पंचम स्थान में हो तो मनुष्य को कुमित्र वाला तथा कुपुत्रों से युक्त कोषहीन प्रतापरहित और सदा सब सुख से रहित करता है ।

सुतभवनगतोऽरिमन्दिरस्थः सकलसुतान्विनिहन्ति मन्दगामी ।
समुदितकिरणः स्वतुंगसंस्थः कथमपिजनयेत्सुतेक्षणमेकपुत्रम् ॥

पंचम भाव प्राप्त हुआ शनि शत्रुराशि में स्थित हो तो समस्त पुत्रों का नाश करता है और शनि उदय को प्राप्त हो तथा अपनी उच्चराशि में स्थित हो तो बड़े तीक्ष्ण एक पुत्र को उत्पन्न करता है ।

सुजर्जरक्षीणतरं वपुश्च धनेन हीनत्वमनंगहीनम् ।
प्रसूतिकाले नलिनीशपुत्रः पुत्रे स्थितः पुत्रभयं करोति ॥

जिसके जन्म समय में शनि पंचम स्थान में हो, उसका अति जर्जर क्षीण शरीर धन से हीन तथा काम से हीन और पुत्र भय को करता है ।

सुतस्थान स्थिते मन्दे दृष्टे वा क्रूरखेचरैः ।
उदरे जायते पीड़ा लोहजा वह्निजा तथा ॥

पंचम स्थान में स्थित हुआ शनि पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो उदर (पेट) में लोह से और अग्नि से उत्पन्न पीड़ा होती है ।

पंचमभावस्थ पापग्रहों का फल संक्षेप से कहते हैं

चेद्भानावुदरस्थिते तु मनुजः कोपान्वितः स्यात्तदा ।
दग्धस्तत्र कृशानुनाऽथ चरणे दक्षे शृगालाश्वजा ॥
पीडा वा विषवह्निजा हतसुतो भौमेऽग्निशस्त्रव्यथा ।
प्रोक्तांगेषु मृत प्रजस्तु नितरां स्यान्मानवो दुःखितः ॥
स्वर्भानावुदरस्थिते कृमिरुजा वा वातगुल्मान्विदो ।
मन्देऽप्येवमथेन्दुना यदि युते प्लीहायुतः स्यान्नरः ॥

यदि सूर्य पंचम स्थान में हो तो मनुष्य क्रोध से युक्त होता है और दक्षिण पाद अग्नि से दग्ध होता है वा दक्षिण पाद में शृगाल से वा घोड़े से उत्पन्न पीड़ा होती है । अथवा विष वा अग्नि से उत्पन्न पीड़ा होती है । यदि मंगल पंचम स्थान में हो तो पूर्वोक्त अंगों में अग्नि से वा शस्त्र से पीड़ा होती है । तथा निरन्तर सन्तान उत्पन्न होकर मरती रहे एवं दुःखित रहे । यदि राहु पंचम स्थान में हो तो कृमि रोग हो वा वातगुल्म रोग से युक्त

होता है, इस प्रकार पंचमस्थ शनि से भी रोग होता है। यदि पंचमस्थ शनि चन्द्रमा से युक्त हो तो मनुष्य प्लीहा रोग से युक्त होता है।

यदा पंचमे जन्मतोऽयस्य केतुः स्वकीयोदरे वातघातादिकष्टम्।
स्वबुद्धिव्यथा सन्ततिस्वल्पपुत्रः सदाधेनुलाभादियुक्तो भवेच्च॥

जिस के जन्म लग्न से केतु पंचम स्थान में स्थित हो उस के उदर में वात घातादि का कष्ट रहे और बुद्धि में विकलता हो तथा थोड़ी सन्तान होती है और नित्य धेनु लाभादि से युक्त होता है।

पुत्रे केतुः प्रजाहानिर्विद्याज्ञानविवर्ज्जितः।
भयत्रासी सदा दुःखी विदेशगमने रतः॥

यदि पंचम स्थान में केतु हो तो पुरुष सन्तान हानि वाला, विद्या, ज्ञान से वर्जित होता है और भय त्रास को प्राप्त होता है तथा नित्य दुःखी एवं विदेशगमन में प्रेम रखने वाला होता है।

पंचम भाव में स्थित द्विग्रहादि योगों के फल को कहते हैं

(सू. चं.)

चन्द्रान्वितस्तीक्ष्णकरः सुतस्थो नरं प्रसूते विगताभिमानम्।
कुब्जं विरक्तं च कुपुत्रभाजं सदातिकष्टं कृतकस्वभावम्॥

चन्द्रमा से युक्त सूर्य पंचम स्थान में हो तो अभिमान रहित, कूबड़ा, उदासीन, कुपुत्र वाला, नित्य अति कष्ट वाला और कृतक स्वभाव वाले मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(सू. मं.)

भौमान्वितस्तीक्ष्णकरः सुतस्थो नरं प्रसूते बहुपुत्रदारम् ।
गम्यं रिपूणां सुतरां नृशंसं भयान्वितं पापरतं सदैव ।।

मंगल से युक्त सूर्य पंचम स्थान में हो तो बहुत पुत्र स्त्री वाला शत्रुओं के स्वभाव को जानने वाला निरन्तर हिंसक भय से युक्त और नित्य ही पाप में संलग्न मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(सु. बु.)

सौम्यान्वितस्तीक्ष्णकरः सुतस्थो नरं प्रसूते बहुपापरक्तम् ।
दोषैः समस्तैः सहितं नृशंसं स्वदारसंत्यक्तमनर्थयुक्तम् ।।

बुध से युक्त सूर्य पंचम में हो तो बहुत पाप अनुरक्त तथा सम्पूर्ण दोषों से युक्त, हिंसक, अपनी स्त्री से त्यागा हुआ और अनर्थों (बुराइयों) से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(सू. वृ.)

जीवान्वितस्तीक्ष्णकरः सुतस्थो नरं प्रसूते श्रुतिवाक्यहीनम् ।
परान्नपुष्टं परदाररक्तं सुनिष्ठुराङ्गं गुणवर्जितं च ।।

गुरु से युक्त सूर्य पंचम स्थान में हो तो वेद वाक्य से वर्जित दूसरों के अन्न से पुष्ट, पराई स्त्री में प्रीति करने वाला, निष्ठुर, शरीर गुण रहित

मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(सू. शु.)

शुक्रान्वितस्तीक्ष्णकरः सुतस्थो नरः प्रसते गतबुद्धिसत्वम् ।
वाधान्वितं वैरिगतं कृशार्त्तं दुर्मेधसं शास्त्रपराङ्मुखं च ॥

शुक्र से युक्त सूर्य पंचम में हो तो बुद्धि पराक्रम से रहित वाधा से युक्त शत्रुओं में प्राप्त, कृश तथा पीडित, दुष्ट बुद्धि और शास्त्र से विमुख मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(सू. श.)

धातुक्रियापण्यमतिर्गुणज्ञो धर्म्मप्रियः पुत्रकलत्रसौख्यः ।
सदा समृद्धोऽतितरां नरः स्यात्प्रद्योतने भानुसुतेन युक्ते ॥

शनि से युक्त सूर्य पंचम स्थान में हो तो मनुष्य धातुओं के क्रय-विक्रय के व्यापार बुद्धि वाला, गुणों को जानने वाला, धर्म को प्रिय मानने वाला, पुत्र स्त्री के सुख वाला और नित्य अल्प समृद्धि शाली होता है ।

(चं. मं.)

चन्द्रान्वितो भूतनयः सुतस्थो नरं प्रसूते बहुसौख्ययुक्तम् ।
संप्राप्तविद्यं द्विजदेवतानां साधुप्रदत्तं श्रुतलालसं च ॥

चन्द्रमा से युक्त भौम पंचम में हो तो अधिक सौख्य वाला, विद्यावान्, ब्राह्मण देवताओं का साधुवाद प्राप्त करने वाला तथा श्रवण की लालसा वाले मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(चं. बु.)

चन्द्रान्वितो सोमसुतः सुतस्थो नरं प्रसूते गरिमासमेतम् ।
तारुण्यरूपं बहुमित्रलाभसमन्वितं देवगुरुप्रसक्तम् ॥

चन्द्रमा से युक्त बुध पंचम में हो तो गौरव से युक्त, तरुण, रूपवाला, बहुत मित्रों के लाभ से युक्त, देव गुरु की सेवा में आसक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(चं. वृ.)

चन्द्रान्वितो देवगुरुः सुतस्थो नरं प्रसूते क्षतशास्त्रपक्षम् ।
निसर्गसौख्यं प्रभुना समेतं सदा जपं शास्त्रविचक्षणं च ॥

चन्द्रमा से युक्त गुरु पंचम स्थान में हो तो क्षतशास्त्र के पक्ष वाला स्वाभाविक सुखी, ऐश्वर्य से युक्त नित्य, जपवाला तथा शास्त्र मैं चतुर मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(चं. शु.)

चन्द्रान्वितो दैत्यगुरुः सुतस्थो नरं प्रसूते निधिबुद्धिभाजम् ।
सन्तुष्टचित्तं वहुसौख्ययुक्तं कन्याधिकं स्त्रीदयितं सदैव ॥

चन्द्रमा से युक्त शुक्र पंचम स्थान में हो तो निधि बुद्धि वाला, संतुष्टचित्त, अधिक सौख्य से युक्त, अधिक कन्या वाला तथा स्त्री के प्यारे मनुष्य को उत्पन्न करता है ,

(चं- श.)

चन्द्रान्वितः सूर्यसुतः सुतस्थो नरं प्रसूते सुतसौख्यहीनम् ।
प्रपञ्चशीलं कुधिया समेतं निरर्गलं शास्त्रबहिष्कृतं च ॥

चन्द्रमा से युक्त शनि पंचम स्थान में हो तो पुत्र सुख से हीन, प्रपंच-शील, दुष्टबुद्धि से युक्त, अनर्गल (व्यर्थ की बातें) बोलने वाला तथा शस्त्र से विमुख मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(मं. बु.)

भौमान्वितः सोमसुतः सुतस्थो नरं प्रसूते विनयप्रयुक्तम् ।
कृषिभ्रमान्नष्टधनं सुतीव्रं विदेशरक्तं कृतवन्धुपुत्रम् ॥

मंगल से युक्त बुध पंचम में हो तो नम्रता से युक्त, कृषि के भ्रम से धन हानि वाला, तीक्ष्ण स्वभाव, विदेश में अनुरक्त, बन्धु को पुत्र मानने वाले मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(मं शु.)

भौमान्वितो दैत्यगुरुः सुतस्थो नरं प्रसूते बहुवैरिभाजम् ।
पराजयं नीचजनेन नित्यं भ्रमान्वितं ब्राह्मण भक्तिहीनम् ॥

मंगल से युक्त शुक्र पंचम स्थान में हो तो बहुत, शत्रु वाला, नित्य नीच जन से पराजय वाला, भ्रम से युक्त, ब्राह्मण भक्ति से रहित मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(मं. शु.)

भौमान्वितः सूर्यसुतः सुतस्थो नरं प्रसूते क्षतजार्दितांगम् ।
स्त्रीनिर्जितं दुष्टमतिं कृतघ्नं क्षमाविहीनं परमैश्वर्य्यहीनम् ॥

मंगल से युक्त शनि पंचम में हो तो क्षतों से उत्पन्न पीड़ित शरीर वाला, स्त्री से पराजित, दुष्टबुद्धि, कृतघ्न, क्षमा से रहित, परम ऐश्वर्य से वर्जित मनुष्य को उत्पन्न करता है ।

(बु. वृ.)

सौम्यान्वितो देवगुरुः सुतस्थो नरं प्रसूते बहुपुत्रभाजम् ।
जयैषिणं स्त्रीदयितं मनोज्ञं प्रधानकर्माणमलोलुपं च ॥

बुध से गुरु पंचम में हो तो बहुत पुत्र वाला, स्त्री का प्यारा, चित्त की बात को जानने वाला, श्रेष्ठ कर्म करने वाला तथा लोलुपता से रहित मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(बु. शु.)

सौम्यान्वितो दैत्यगुरु सुतस्थो नरं प्रसूते शुभवाक्ययुक्तम् ।
प्रभुं महद्दभुतकर्मरक्तं द्विजजातिभक्तं निपुणं प्रगल्भम् ॥

बुध से युक्त शुक्र पंचम स्थान में हो तो सुन्दर वचनों से युक्त, समर्थ, महान् अद्भुत कर्म में अनुरक्त, द्विजजाति का भक्त, चतुर और बड़े बोलने वाले मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(बु. श.)

सौम्यान्वितः सूर्यसुतः सुतस्थो नरं प्रसूते विकलं शरीरम् ।
सुखैर्विहीनं विकृतं विरूपं निसर्गतः शोभनवर्जितं च ॥

बुध से युक्त शनि पंचम में हो तो विकल शरीर वाला, सुख से रहित, विकृत स्वभाव, बुरे रूप वाला तथा नैसर्गिक कल्याण से रहित मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(वृ. शु.)

जीवान्विो दैत्यगुरुः सुतस्थो नरं प्रसूते बहुभाग्यवन्तम् ।
कुलप्रधानं बहुपुत्रवन्तं धनान्वितं सौख्यसमन्वितं च ॥

बुध से शनि पंचम में हो तो विकल शरीर वाला, सुखों से रहित,

विकृत स्वभाव, बुरे रूप वाला तथा नैसर्गिक कल्याण से रहित मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(वृ. श.)

जीवान्वितः सूर्यसुतः सुतस्थो नरं प्रसूते बहुभाग्यवन्तम्।
असाधुदुष्टाशयपानरक्तं कुचैलमश्लाध्यमधर्मिणं च॥

गुरु से युक्त शनि पंचम में हो तो बहुत भाग्य वाला, असज्जन, दुष्टाशय पाने से अनुरक्त, बुरे वस्त्र वाला और अधर्मी मनुष्य उत्पन्न करता है।

(शु. श.)

शुक्रान्वितः सूर्यसुतः सुतस्था कन्याजनित्रं मनुजं प्रसूते।
स्त्रीचञ्चलं पापकथानुरक्तं कृतघ्नमश्लाघ्यतमं विरूपम्॥

शुक्र से युक्त शनि पंचम स्थान में हो तो कन्या उत्पन्न करने वाला, स्त्रियों में चंचल, पापकथा में अनुरक्त कृतघ्न अत्यन्त अप्रशंसनीय तथा बुरे रूप वाले मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(सू. चं. मं.)

सूर्येन्दुभौमाः सुतगाः मनुष्यं कुर्वन्ति कीर्त्या सहितं सदैव।
पुण्येन युक्तं विकृतस्वभावं संपीडितांगं स्वकृतैर्विकारैः॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम पंचम स्थान में स्थित हों तो मनुष्य को नित्य ही कीर्त्ति से युक्त, पुण्य से रहित, विकृत स्वभाव, स्वकृत विकारों से पीड़ित शरीर वाला करता है।

(सू. चं. बु.)

सूर्येन्दुसौम्याः सुतगा मनुष्यं कुर्वन्ति पापप्रचुरं गतस्वम् ।
पापैर्विमुक्तं सुतसौख्यहीनं स्त्रीनिर्जितं चञ्चलमानसं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, पंचम में हों तो मनुष्य को अधिक पापी, द्रव्य रहित, पापों से युक्त, पुत्र से हीन, स्त्री से पराजित, चंचल चित्त वाला करता है ।

(सू. चं. वृ.)

सूर्येन्दुजीवाः सुतगाः मनुष्य पुत्रैर्विहीनं प्रचुरप्रतापम ।
विद्यायुतं शोभनकर्मकारकं दयाधिकं स्नेहकलाविहीनम् ॥

सूर्य, चन्द्र, गुरु, पंचम में हों तो मनुष्य को पुत्रों से रहित, अधिक प्रतापी, विद्या से युक्त, उत्तम कार्य करने वाला अधिक दयावान्, स्नेहकला रहित करता है ।

(सू. चं. शु.)

सूर्येन्दुशुक्राः सुतगा मनुष्यं सदा प्रकुर्वन्ति गुणैर्विहीनम् ।
परस्वरक्तं बहुशत्रुपक्षं क्षमादयाभ्यां परिवर्जितं च ॥

जो सूर्य, चन्द्र, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को नित्य गुणों से रहित, दूसरों के द्रव्य से अनुरक्त, बहुत शत्रु पक्ष वाला तथा क्षमा और दया से रहित करता है ।

(सू. चं. श.)

सूर्येन्दुसौराः सुतगा मनुष्यं कुर्वन्ति द्रव्याधिभयैर्विहीनम् ।
प्रपञ्चशल्यं व्यसनैः समेतं सुतैर्युतं बन्धुपराङ्मुखं च ॥

जो सूर्य, चन्द्र, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को द्रव्य तथा मानसिक भयों से रहित, प्रपंचों से शल्य व्यसनों से युक्त [तथा पुत्रों से युक्त और बन्धुओं से विमुख करता है।

(सू. मं. बु.)

सूर्यारसौम्याः सुतगाः मनुष्यं कुर्वन्ति दुष्टव्रणपीडितांगम् ।
निस्नेहसंदीनरतं निराशं सदा विमुक्तं परतर्ककं च ॥

जो सूर्य, मंगल, बुध, पंचुम में हों तो मनुष्य को दुष्ट व्रण से पीड़ित शरीर वाला, स्नेह रहित, दोनों से प्रीति युक्त, आशा तथा बन्धन रहित और दूसरों से तर्क वाला करता है।

(सू. मं. वृ.)

सूर्यारजीवाः सुतगाः मनुष्यं कुर्वन्ति हीनानुगतं नृशंसम् ।
व्यंगं निराशं हृतदानशक्तं विरक्तदारं हृतपौरुषं च ॥

जो सूर्य, भौम, गुरु, पंचम में हों तो मनुष्य को नीचों से अनुगत हिंसक, व्यंग; आशा रहित, दान शक्ति से हीन, स्त्री में प्रेम न करने वाला, पुरुषार्थ रहित करता है।

(सू. मं. शु.)

सूर्यारशुक्राः सुतगा मनुष्यं कुर्वन्ति सर्वाभरणैरसंगम् ।
सहान्नभाजं जनता निरस्तं नराभिभूतं कठिनस्वभावम् ॥

जो सूर्य, भौम, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य समस्त आभरणों से रहित, बहुत अन्न वाला, जनता से निरस्त, मनुष्यों से अभिभत तथा कठिन स्वभाव वाला करता है।

(सू. मं. श.)

सूर्यारसौराः सुतगाः मनुष्यं कुर्वन्ति पापात्मजकन्यकाढ्यम् ।
विरक्तभाजं सुतशास्त्रहीनं प्रद्वेषकं साधुजनस्य नित्यम् ॥

यदि सूर्य, मंगल, शनि, पंचम में हों तो पापी पुत्र-कन्या से युक्त, विरक्त मन वाला, पुत्र और शास्त्र से रहित और नित्य सज्जनों से बैर रखने वाला करता है ।

(सू. बु. वृ.)

सूर्यज्ञजीवाः सुतगाः मनुष्यं कुर्वन्ति पापात्मजमुग्रकोपम् ।
क्लीवं नृशंसं परदाररक्तं सुदुःखितं दुःखितलोकमित्रम् ॥

यदि सूर्य, बुध, गुरु, पंचम में हों तो मनुष्य को पाप पुत्र वाला, उग्रक्रोधी, नपुंसक, हिंसक, पराई स्त्री से प्रेम करने वाला, तथा दुःखित जनों का मित्र करता है ।

(सू. बु. शु.)

सूर्यज्ञशुक्राः सुतगा मनुष्यं कुर्वन्ति वन्ध्याजनकं कृतघ्नम् ।
भार्याधिकं क्लेशयुतं सपापं विवर्जितं भोगधनाशनैश्च ॥

यदि सूर्य, बुध, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को बन्ध्या कन्या वाला, कृतघ्न, अधिक स्त्री वाला, दुःख से युक्त, पाप सहित, भोग, धन, भोजन से रहित करता है ।

(सू. बु. श.)

सूर्यज्ञसौराः सुतगा मनुष्यं कुर्वन्ति सन्तानधनैर्विहीनम् ।
लम्बोदरं दीर्घकृकाटिकाढ्यं सुदीर्घजंघं पदवर्जितं च ॥

यदि सूर्य, बुध, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को सन्तान, धनों से

हीन, लम्बे पेट वाला, बड़ी कृकाटिका से युक्त, बड़ी जंघा वाला और पद से रहित करता है।

(सू. वृ. शु.)

सूर्यामरेज्यास्फुजितः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति विधर्मयुक्तम्।
धर्मादिहीनं कुहकानुरक्तं मायेन्द्रजालादिशरैरविद्धम्॥

यदि सूर्य, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को विधर्म से युक्त धर्मादि से हीन, कुहक प्रयोग करने वालों से अनुरक्त, भाषा तथा इन्द्रजालादि के वाणों से अविद्ध करता है।

(सू, वृ. श.)

सूर्यामरेज्यार्कसुताः सुतस्था नरं प्रकुर्वन्ति सदा निरस्तम्।
स्वबान्धवैर्वित्तनिपीडितांगं युद्धानुरक्तं च भयेन हीनम्॥

जो सूर्य, गुरु, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को बान्धवों से नित्य निरस्त, धन से पीड़ित शरीर, युद्ध में अनुरक्त और भय से रहित करता है।

(सू. शु श.)

सूर्यासुरेज्यार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति निरस्तधैर्य्यम्।
दुष्टस्वभावं च धिया विहीनं विदेशसेवानुरतं सदैव॥

जो सूर्य, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को धैर्य रहित, दुष्ट स्वभाव वाला, वुद्धि से रहित और नित्य ही विदेश सेवा में अनुरत करता है।

(चं० मं० बु०)

चन्द्रारसौम्याः सुतगाः मनुष्यं कुर्वन्ति दीनं गतपौरुषं च ।
विधर्मिणं द्यूतनिषेवितं च प्रतप्तकं दर्पधिया समेतम् ॥

जो चन्द्र, भौम, बुध, पंचम में हों तो मनुष्य को दीन; पुरुषार्थ रहित विधर्म्मी, जुआ खेलने वाला, संतप्त हृदय तथा साहस बुद्धि से युक्त करता है ।

(चं० मं० वृ०)

चन्द्रारजीवाः सुतगा मनुष्यं कुर्वन्ति भी श्रीकमुरुप्रकोपम् ।
असह्ययं बन्धुजनानुरक्तं प्रज्ञाविहीनं बहुगर्वितं च ॥

जो चन्द्र, भौम, गुरु, पंचम में हों तो मनुष्य को भय तथा लक्ष्मी वाला और उसमें प्रकोप बुरे कार्य में खर्च करने वाला बन्धुजनों में अनुरक्त, बुद्धि से रहित और बहुत गर्ववाला करते हैं ।

(चं० मं० शु०)

चन्द्रारशुक्राः सुतगा मनुष्यं कुर्वन्ति हीनानुगतं कुरूपम् ।
वाताधिकं कीर्तिविवर्जितांगं गतप्रतापं मनुजैर्निरस्तम् ॥

जो चन्द्र, भौम, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को नीच जनों का अनुराग, कुत्सित रूप वाला, अधिक वातल, यश रहित शरीर, प्रताप से रहित और मनुष्यों से पराजित करता है ।

(चं० मं० श०)

चन्द्रारसौराः सुतगाः मनुष्यं कुर्वन्ति सत्यार्थसुखैर्विहीनम् ।
प्रभूतनिद्रं च विरूपमित्रं खलस्वभावं भयवर्जितं च ॥

यदि चन्द्र, मंगल, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को सत्य अर्थ तथा सुख-से रहित करता है और अधिक निद्रा वाला, बुरे रूप मित्र वाला दुष्ट स्वभाव तथा भय से रहित करता है।

(चं० बु० बृ०)

चन्द्रज्ञजीवाः सुतगा मनुष्यं कुर्वन्ति तीर्थप्रवणं सुबुद्धिम् ।
प्रभूतविज्ञप्तिं समृद्धिधर्मं माता पितृभ्यां दृढ़भक्तिभाजम् ॥

यदि चन्द्र, बुध, गुरु पंचम में हों तो मनुष्य को तीर्थ-सेवन करने वाला, सुन्दर बुद्धिमान्, अधिक विज्ञप्ति वाला तथा समृद्धि धर्म वाला और माता पिताओं की दृढ़ भक्ति वाला करते हैं।

(चं० बु० शु०)

चन्द्रज्ञशुक्राः सुतगाः मनुष्यं कुर्वन्ति पीनांगमलोभभाजम् ।
जनेऽभिरक्तं बहुतीर्थसेवाद्विमुक्तपापं प्रथितप्रभावम् ॥

यदि चन्द्र, बुध, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को स्थूल शरीर वाला, बिना लोभ वाला, जनों में अभिरक्त, अधिक तीर्थ वास से पाप रहित और बड़े प्रभाव वाला करते हैं।

(चं० बु० श०)

चन्द्रज्ञसौराः सुतगाः मनुष्यं कुर्वन्ति धन्यं यशसा समेतम् ।
स्थिरस्वभावं मृतधर्मयुक्तं कलाधिकं कामविवर्जितं च ॥

जो चन्द्र, बुध, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को प्रशंसनीय कीर्ति से युक्त, स्थिर स्वभाव वाला,दास धर्म से युक्त, अधिक कलावान् तथा काम रहित करते हैं।

(चं० वृ० शु०)

चन्द्रामरेज्यास्फुजितः सुतस्था नरं प्रकुर्वन्ति सुतप्तकण्ठम् ।
लं (अं) बालिकाधर्मवरं प्रधानं हतारिपक्षं प्रियदर्शनं च ॥

जो चन्द्र, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को तप्तकंठ वाला, अंवालिका धर्म में तत्पर, श्रेष्ठ शत्रु पक्ष नष्ट करने वाला और दर्शन प्रिय करते हैं।

(चं० वृ० श०)

चन्द्रमारेज्यार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति मतिप्रधानम् ।
ख्यातिं कवीन्द्रं प्रचुरं हतारिं निमग्नसौख्यं सुहृदं सुवक्त्रम् ॥

चन्द्र, गुरु, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को बुद्धिश्रेष्ठ विख्यात, कवि, अधिक शत्रु नष्ट करने वाला, सुख में निमग्न सुन्दर मुख वाला करते हैं।

(चं. शु. श.)

चन्द्रासुरेज्यार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति गुणस्वभावम् ।
ज्योतिर्विदारंगविवर्जितांगं मदान्वितं धर्मकथानुरक्तम् ॥

यदि चन्द्र, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो गुणवान् स्वभाव वाला, ज्योतिष जानने वाला, रंग रहित शरीर वाला मद से युक्त, धर्म कथा में अनुराग रखने वाला करते हैं।

(मं० बु० वृ०)

भौमज्ञजीवाः सुतगाः मनुष्यं कुर्वन्ति धर्मध्वजमिष्टसत्यम् ।
सत्यानुरक्तं बहुबुद्धिभाजं सलज्जमुत्साहिनमेकवीरम् ॥

यदि मंगल, बुध, गुरु, पंचम में हों तो मनुष्य को धर्म में अग्रगण्य, सत्यप्रिय तथा सत्य में अनुरक्त अधिक बुद्धिमान् लज्जावान् उत्साही वीरों में श्रेष्ठ करते हैं।

(मं० बु० शु०)

भौमज्ञशुक्राः सुतगाः मनुष्यं सौभाग्ययुक्तं मनसाधिधर्म्मम् ।
द्विजप्रियं साधुजनानुरक्तं सुवर्णवस्त्राभरणैः समेतम् ।।

जो मंगल, बुध, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को सौभाग्य से युक्त चित्त से अधिक धर्मात्मा, ब्राह्मणों का प्रिय साधुजनों में अनुरक्त तथा सुवर्ण वस्त्र आभूषणों से युक्त करते हैं।

(मं० बु० श०)

भौमज्ञसौराः सुतगा मनुष्यं कुर्वन्ति षंढं च कलत्रभाजम् ।
दयाविहीनं त्वथ निर्गुणं च श्रमार्त्तदेहं निजवर्गयुक्तम् ।।

जो भौम, बुध, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को नपुंसक तथा स्त्री वाला, दया से हीन, गुण रहित, परिश्रम से पीड़ित शरीर और अपने वर्ग से युक्त करते हैं।

(मं० बु० शु०)

भौमामरेज्यास्फुजितः सुतस्थः नरं प्रकुर्वन्ति धिया समेतम् ।
सुसूक्ष्मवस्त्राभरणैः समेतं दृढ़प्रतिज्ञं परमर्दनं च ।।

जो मंगल, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को बुद्धि से युक्त तथा सुन्दर सूक्ष्म वस्त्र भूषणों से यक्त दृढ़ प्रतिज्ञा वाला और शत्रुओं को मर्दन करने वाला करते हैं।

(चं० वृ० शु०)

चन्द्रामरेज्यास्फुजितः सुतस्था नरं प्रकुर्वन्ति सुतप्तकण्ठम् ।
लं (अं) बालिकाधर्मवरं प्रधानं हतारिपक्षं प्रियदर्शनं च ॥

जो चन्द्र, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को तप्तकंठ वाला, अंबालिका धर्म में तत्पर, श्रेष्ठ शत्रु पक्ष नष्ट करने वाला और दर्शन प्रिय करते हैं।

(चं० वृ० श०)

चन्द्रमारेज्यार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति मतिप्रधानम् ।
ख्यातिं कवीन्द्रं प्रचुरं हतारिं निमग्नसौख्यं सुहृदं सुवक्त्रम् ॥

चन्द्र, गुरु, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को बुद्धिश्रेष्ठ विख्यात, कवि, अधिक शत्रु नष्ट करने वाला, सुख में निमग्न सुन्दर मुख वाला करते हैं।

(चं. शु. श.)

चन्द्रासुरेज्यार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति गुणस्वभावम् ।
ज्योतिर्विदारंगविवर्जितांगं मदान्वितं धर्मकथानुरक्तम् ॥

यदि चन्द्र, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो गुणवान् स्वभाव वाला, ज्योतिष जानने वाला, रंग रहित शरीर वाला मद से युक्त, धर्म कथा में अनुराग रखने वाला करते हैं।

(मं० बु० वृ०)

भौमज्ञजीवाः सुतगाः मनुष्यं कुर्वन्ति धर्मध्वजमिष्टसत्यम् ।
सत्यानुरक्तं बहुबुद्धिभाजं सलज्जमुत्साहिनमेकवीरम् ॥

यदि मंगल, बुध, गुरु, पंचम में हों तो मनुष्य को धर्म में अग्रगण्य, सत्यप्रिय तथा सत्य में अनुरक्त अधिक बुद्धिमान् लज्जावान् उत्साही वीरों में श्रेष्ठ करते हैं ।

(मं० बु० शु०)

भौमज्ञशुक्राः सुतगाः मनुष्यं सौभाग्ययुक्तं मनसाधिधर्म्मम् ।
द्विजप्रियं साधुजनानुरक्तं सुवर्णवस्त्राभरणैः समेतम् ॥

जो मंगल, बुध, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को सौभाग्य से युक्त चित्त से अधिक धर्मात्मा, ब्राह्मणों का प्रिय साधुजनों में अनुरक्त तथा सुवर्ण वस्त्र आभूषणों से युक्त करते हैं ।

(मं० बु० श०)

भौमज्ञसौराः सुतगा मनुष्यं कुर्वन्ति षंढं च कलत्रभाजम् ।
दयाविहीनं त्वथ निर्गुणं च श्रमार्त्तदेहं निजवर्गयुक्तम् ॥

जो भौम, बुध, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को नपुंसक तथा स्त्री वाला, दया से हीन, गुण रहित, परिश्रम से पीड़ित शरीर और अपने वर्ग से युक्त करते हैं ।

(मं० बु० शु०)

भौमामरेज्यास्फुजितः सुतस्थः नरं प्रकुर्वन्ति धिया समेतम् ।
सुसूक्ष्मवस्त्राभरणैः समेतं दृढ़प्रतिज्ञं परमर्दनं च ॥

जो मंगल, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तो मनुष्य को बुद्धि से युक्त तथा सुन्दर सूक्ष्म वस्त्र भूषणों से यक्त दृढ़ प्रतिज्ञा वाला और शत्रुओं को मर्दन करने वाला करते हैं ।

(मं. वृ. श.)

भौमामरेज्यार्क सुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति दयासमेतम् ।
वाणिज्य विद्यागमसाधुयुक्तं क्षमान्वितं देवगुरुं प्रभक्तम् ॥

यदि भौम गुरु शनि,' पंचम में हो तो मनुष्य को दया से युक्त व्यापार विद्या से प्राप्ति वाला साधु युक्त तथा क्षमा युक्त और देव गुरुओं का भक्त करते हैं।

(मं. शु. श.)

भौमासुरेज्यार्कसुतः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति कुबुद्धिभाजम् ।
लज्जाविहीनं नयवर्जितांगं विमुक्तदारं वहुगर्वितं च ॥

यदि भौम शुक्र, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को दुष्ट बुद्धि लज्जा से हीन, नीति से वर्जित, स्त्री रहित और बहुत गर्व वाला करते हैं।

(बु. वृ. शु.)

सौम्यामरेज्यास्फुजितः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति सुरत्नभाजम् ।
विप्रानुरक्तं बहुशास्त्रज्ञानं विरच्य स्वर्गतलमण्डलं च ॥

यदि बुध गुरु शुक्र पंचम में हों तो मनुष्य को सुन्दर रत्नवाला ब्राह्मणों में प्रीति रखने वाला अधिक शास्त्र ज्ञान जानने वाला और भूमण्डल में स्वर्ग बनाने वाला करते हैं।

(बु. वृ. श.)

सौम्यामरेज्यार्कसुता; सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति हितं गुरुणाम् ।
प्रभूतविद्यार्जनतत्परं च कुलप्रधानं दृढसौहृदं च ॥

यदि बुध गुरु शनि पंचम में हों तो मनुष्य को गुरुओं का हित चाहने वाला बहुत विद्याओं के उपार्जन में तत्पर अपने कुल में श्रेष्ठ और दृढ मित्रता वाला करते हैं।

(बु. शु. श.)

सौम्यासुरेज्यार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति विहीनपुत्रम् ।
स्थूलं पृथुग्रीवभुजं कुकर्णं द्यूतानुरक्तं परवञ्चनैकम् ॥

जो बुध शुक्र शनि पंचम में हो तो मनुष्य को पुत्र रहित, स्थूल शरीर वाला तथा बड़ा गला और हाथ वाला, एवं बुरे कान वाला जूआ में अनुराग रखने वाला, दूसरों के ठगने में अग्रगण्य करते हैं।

(वृ. शु. श.)

जीवासुरेज्यार्कसुताः सुतस्था नरं प्रकुर्वन्ति बहुप्रशीलम् ।
धान्यान्वितं वासकरं परेषां शास्त्रार्जने तत्परमानसं च ॥

जो गुरु, शुक्र, शनि पंचम में हो तो मनुष्य को अधिक शीलवान्, धान्य से युक्त, दूसरों के घर में निवास करने वाला, शास्त्रों के अध्ययन में तत्पर चित्त वाला करते हैं।

(सू. चं. मं, बु.)

रवीन्दुभौमेन्दुसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति सुदूषणाप्तम् ।
गुरुप्रकोपं नियमैर्विमुक्तं व्यपेतलज्जं विकृतस्वभावम् ॥

जो सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध पंचम में हो तो मनुष्य को दोषों को प्राप्त करने वाला, बड़ा क्रोधी नियमों से विरुद्ध कार्य करने वाला, लज्जा रहित तथा विकृत स्वभाव वाला करते हैं।

(सू. चं. मं. वृ.)

रवीन्दुभौमामरपूजितांगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
सुतैर्विमुक्तं विनयेन हीनं दीनं दयाधर्मविवर्जितं च ॥

जो सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, पंचम में हों तो पुत्रों में वर्जित नम्रता से हीन दीन, दया और धर्म रहित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू. चं. मं. शु.)

रवीन्दुभौमासुरपूजितांगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
द्रलम्बलिंग सव्रणोरुयुक्तं विहीनवित्तं परदारलुब्धम् ॥

जो सूर्य, चन्द्र, भौम, शुक्र, पंचम में हों तो लम्बलिंग वाला, व्रणसहित ऊरु वाला, धर्म से हीन, पराई स्त्री में आसक्त मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(सू. चं. मं. श.)

रवीन्दुभौमार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति कृतं कृतघ्नम् ।
हर्षाधिकारेण निपीडितांगं सुदीनवृत्तिं गतबन्धुवर्गम् ॥

जो सूर्य, चन्द्र, भौम, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को कृतघ्न, हर्षाधिकार से पीड़ित शरीर वाला, दीन वृत्ति वाला तथा बन्धु वर्ग से रहित करते हैं।

(सू. चं. बु. वृ.)

रवीन्दुसौम्यामरपूजितांगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
हर्षाधिकं कामनिपीडितांगं सदा कुलीनं नयवर्जितं च ॥

जो सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, पंचम में हों तो अधिक हर्ष वाला, काम से पीड़ित शरीर वाला, सदा सज्जनता युक्त और नीति रहित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू. चं. बु. शु.)

रवीन्दुसौम्यासुरपूजितांगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
पैशुन्यरक्तं निजधर्महीनं प्रद्वेषकं साधुजनस्य नित्यम् ।।

जो सूर्य, चन्द्र, बुध, ुक्र, पंचम में हों तो पिशुनता (चुगली) में प्रीति करने वाला, अपने धर्म से रहित, साधुजनों के साथ नित्य बैर रखने वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू. चं. बु. श.)

रवीन्दुसौम्यार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति दयाविहीनम् ।
विनष्टबुद्धिं विगताभिमानं भूषान्वितं पापसमन्वितं च ।।

जो सूर्य, चन्द्र, बुध, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को दया से हीन, ष्ट बुद्धि वाला, अभिमान रहित, भूषणों से युक्त तथा पापों से युक्त रते हैं।

(सू. चं. वृ. शु.)

"
न, चौ ीवासुरपुजितांगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
करते हैं क्तं विनयेन हीनं विलेपनं स्नानविलेपनाद्यैः ।।

ो सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तो रथ तथा द्रव्य से युक्त, सूर्य रहित और स्नान विलेपनादियों से विलेपन करने वाले मनुष्य को कु करते हैं

f

रहित र

(सू. चं. वृ. श.)

रवीन्दुजीवार्कसुताः सुतस्था नरं प्रकुर्वन्ति सुखैः प्रयुक्तम् ।
वृथाश्रमं मित्रजनैर्विहीनं सन्तानहीनं प्रियसाहसं च ॥

जो सूर्य, चन्द्र, गुरु, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को सुखों से युक्त वृथा परिश्रम करने वाला मित्रजनों से हीन तथा संतान से रहित आर साहसी करते हैं।

(सू. मं. बु. वृ)

सूर्यारसौम्यामरपूजितांगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम्।
ओजोविहीनं सुविरुद्धचेष्टं सुनीचकर्माणमुरः प्रकोपम् ॥

जो सूर्य, भौम, बुध, गुरु पंचम में हों तो बल से रहित, विरुद्ध चेष्टा वाला, नीच कर्म करने वाला, क्रोध हृदय वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू. मं. बु. शु.)

सूर्यारसौम्यासुरपूजिताँगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
विधर्मिणं नीतिमति प्रहीनं, जिह्मस्वभावं विकृतानुरक्तम् ॥

जो सुर्य, भौम, बुध, शुक्र, पंचम में हों तो परधर्मावलम्बी नीति तथा बुद्धि से हीन कुटिल स्वभाव, विकृतों से अनुरक्त मनुष्य क[illegible]ध्न, [illegible]न [illegible]हित करते हैं।

(सू. मं. बु. श.)

सूर्यारसौम्यार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति विहीनसत्[illegible]
प्रमोष्यकं कामकथानुरक्तं प्रेष्यं परैर्निर्जितपौरुषं च[illegible]

जो सूर्य, भौम, बुध, शनि पंचम में हों तो मनुष्य पराक्रम र[illegible]
चोरी करने वाला, कामदेव की प्रथा में प्रेम करने वाला, प्रेष्य, दूस[illegible]

पराजित पुरुषार्थ वाले करते हैं।

(सू. मं. वृ. श.)

सूर्यारजीवासुरपूजितांगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम्।
बहुक्षतार्त्तं प्रविनष्टधर्मं कुशास्त्रसेवानिरतं सदैव॥

जो सूर्य, भौम, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तो बहुत क्षतों से पीड़ित, नष्ट धर्म वाला, नित्य ही कुत्सित शास्त्र की सेवा में निरत मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

सूर्यारजीवार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति सुतीव्रभावम्।
महारुजार्त्तं कृतकस्वभावं विहीनधर्मं श्रुतिवर्जितं च॥

जो सूर्य, भौम, गुरु, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को तीव्र स्वभाव वाला, बड़े रोग से पीड़ित तथा कृतक स्वभाव,धर्म हीन और वेदों के अध्ययन से वर्जित करते हैं।

(सू. मं. शु. श.)

सूर्यारशुक्रार्कसुताः सुतस्था नरं प्रकुर्वन्ति विहीनबाहुम्।
चतुष्पदाच्छादन भाजनार्थैर्विवर्जितं च व्यसनान्वितं च॥

यदि सूर्य, भौम, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को हाथों से हीन, चौपायों से वस्त्र पात्र तथा अर्थ से वर्जित और व्यसनों से युक्त करते हैं।

(सू. बु. वृ. शु.)

सूर्यज्ञजीवासुरपूजितांगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम्।
कुकीर्तिभाजं विगतप्रभावं नीचान्वितं सत्वरमानसं च॥

यदि सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र पंचम में हों तो अपकीर्ति वाला, प्रभाव रहित, नीचों से युक्त और चञ्चल चित्त वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू. बु. वृ. श.)

सूर्यज्ञजीवार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति कुकर्मभाजम् ।
कुस्त्रीकुसेवासुरतं विसंज्ञं सुनिर्दयं विप्रपराँगमुखं च ॥

यदि सूर्य, बुध, गुरु, शनि पंचम में हों तो मनुष्य को कुत्सित कर्म वाला, बुरी स्त्री तथा बुरी सेवाओं में संलग्न, संज्ञा रहित दया से हीन और ब्राह्मणों से विमुख मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू. वृ. शु. श.)

सूर्यामरेज्यास्फुजिदर्कपुत्राः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
कुपण्यरक्तं कुमति प्रसक्तं कुकाव्य संयुक्तमपक्षयातम् ॥

जो सूर्य, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो बुरे व्यापार में अनुरक्त दुष्ट बुद्धि से तथा बुरे काव्य से युक्त और पक्षपात हीन मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू. बु. शु. श.)

सूर्यज्ञशुक्रार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति पराभिभूतम् ।
कुचैलमाशुद्धमकालभाजं दारिद्रदुःखार्जितमेवनित्यम् ॥

जो सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को दूसरों से अनादर पाने वाला, बुरे वस्त्र वाला शुद्ध विचारवान्, असमय वाला और नित्य दरिद्रता तथा दुःख एकत्र करते हैं।

(चं. मं. बु. वृ.)

चन्द्रारसौम्यामरपूजितांगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
विवेकविद्यागमशास्त्ररक्तं क्षतारिपक्षं च ससौहृदं च ॥

यदि चन्द्र, भौम, बुध, गुरु पंचम में हों तो विवेक विद्या तथा वेद

शास्त्र से युक्त तथा शत्रुपक्ष से पीडित और मित्रता सहित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं मं. बु. श.)

चन्द्रारसौम्यार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति विनीतवेषम्।
सौभाग्यविद्याविनयैः समेतं सत्पात्ररक्तं सुविचक्षणं च ॥

जो चन्द्र, भौम बुध, शुक्र, पंचम में हों तो सौभाग्य विद्या तथा नम्रता से युक्त, सत्पात्र में अनुरक्त और चतुर मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं. मं. बु. श.)

चन्द्रारसौम्यार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति विनीतवेषम्।
स्वधर्मसंतोषणमुग्रवीर्यं दानप्रधानं वहुगौरवं च ॥

जो चन्द्र, भौम, बुध, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को नम्र वेष वाला, अपने धर्म में सन्तोष पाने वाला, उग्रबली, दान में श्रेष्ठ और अधिक गौरववान् करते हैं।

(चं. मं. वृ. शु.)

चन्द्रारजीवसुरपूजितांगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम्।
बहुव्रणं त्राणकरं द्विजानां गुणानुरक्तं प्रथिताभिमानम् ॥

जो चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तो अधिक व्रण वाला, ब्राह्मणों की रक्षा करने वाला, गुणों में अनुरक्त, बड़े अभिमान वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं. मं. वृ. श.)

चन्द्रारजीवार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति सुशीतलाढ्यम्।
नानार्थशास्त्रैः सहितं प्रगल्भं कविप्रधानं जनवल्लभं च ॥

जो चन्द्र भौम, शुक्र, शनि पंचम में हों तो मनुष्य को शीतलता

से युक्त अनेक प्रकार के अर्थ शास्त्रों से युक्त तथा वाचाल, कवियों में श्रेष्ठ और जनों का प्रिय करते हैं।

(चं. मं. शु. श.)

चन्द्रारशुक्रार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति हितं जनानाम्।
प्रभूतमित्राभरण समृद्धं क्षमान्वितं धर्मविधानदक्षम् ॥

यदि चन्द्र, भौम, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को जनों का मित्र करते हैं और अधिक मित्र तथा भूषण वाला, समृद्धिशाली, क्षमा से युक्त, धर्म विधान में निपुण करते हैं।

(चं. बु. वृ. श.)

चन्द्रज्ञजीवास्फुजितः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति सुतार्थयुक्तम्।
विलेपनाच्छादनभक्षणाढ्यं महाधनं पुत्रसुखैः समेतम् ॥

यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र पंचम में हों तो मनुष्य को पुत्रार्थ से युक्त तथा लेपन वस्त्र भक्ष्यादिपदार्थों से युक्त, अति धनी, पुत्रों के सुखों से युक्त करते हैं।

(चं. बू. वृ. श.)

चन्द्रज्ञजीवार्कसुताः सुनित्यं सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम्।
सत्यप्रधानं विनयेन युक्तं सुधार्मिकं पण्डितसम्मतं च ॥

यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शनि पंचम में हों तो सत्य में श्रेष्ठ, नम्रता से युक्त, धर्मात्मा पण्डित सम्मत मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं. बु. शु. श.)

चन्द्रज्ञशुक्रार्कसुताः सुतस्था नरं प्रकुर्वन्ति विशीलभाजम्।
जितेन्द्रियं शौचपरं सुरूपं सौभाग्यवीर्याढ्यमलोलुपं च।

यदि चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को विशेष शील वाला, जितेन्द्रिय पवित्रता परायण, सुन्दर रूपवान, सौभाग्य तथा बल से युक्त और लोलुपता रहित करते है।

(चं. वृ. शु. श.)

चन्द्रेज्यशुक्रार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति नरेन्द्रपूज्यम्।
शास्त्रार्जने तत्परमिष्टधर्मं सुतप्रधानं बहुवित्तभाजम्॥

यदि चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो राजाओं से माननीय शास्त्रों के अध्ययन में तत्पर, धर्म प्रिय, पुत्रों से श्रेष्ठ तथा अधिक धनवान् करते हैं। (मं. बु. वृ. शु.)

भौमज्ञजीवासुर पूजितांगाः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम्।
अध्यात्मवेत्तारमरिप्रयुक्तं सन्तुष्टचित्तं नृपवल्भं च॥

यदि भौम, बुध, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तों आध्यात्मिक ज्ञान को जानने वाला, शत्रुओं से युक्त सन्तोष चित्त वाला राजाओं के प्रिय मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(मं. बु. वृ. श.)

भौमज्ञजीवार्कसुताः सुतस्था नरं प्रकुर्वन्ति सुरूपगात्रम्।
तृष्णाविहीनं नियमेन युक्तं कुलप्रधानं मतिशुद्धभाजम्॥

यदि भौम, बुध गुरू शनि, पंचम में हों तो मनुष्य को रूपवान, सुन्दर शरीर वाला, तृष्णा रहित, नियम से युक्त, कुल में श्रेष्ठ तथा शुद्ध बुद्धि वाला करते हैं।

(मं. बु. शु. श.)

भौमज्ञशुक्रार्कसुताः सुतस्थाः नरं प्रकुर्वन्ति विशीलभाजम्।
धर्मप्रधानं पितृकार्यदक्षं क्षमान्वितं सर्वजनानुरक्तम॥

जो भौम, बुध, शुक्र शनि पंचम में हों तो मनुष्य को विशेष शील वाला, धर्म में श्रेष्ठ, पितृकार्यों में निपुण, क्षमा से युक्त, सब जनों से प्रीति करने वाला करते हैं।

(मं. वृ. शु. श.)

भौमामरेज्यास्फुजिदर्कपुत्राः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
सुमिष्टलाभान्वितमिष्टसाधुं सुभक्तियुग् वेदगुरुद्विजानाम् ॥

जौ भौम, गुरु, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो सुन्दर मिष्ट पदार्थों के लाभ से युक्त, सज्जन प्रिय तथा वेद, गुरु, ब्राह्मणों की भक्ति से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(बु. वृ. शु. श.)

सौम्यामरेज्यास्फुजिदर्कपुत्राः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्याम्
सुशिल्पवेदार्थचतुष्पदाद्यं शुद्धाधिकं कीर्तिसमन्वितं च ॥

जो बुध, गुरु, शुक्र, शनि पंचम में हो तो शिल्प शास्त्र से, वेदार्थ से तथा चौपायों से युक्त, अधिक शुद्ध यश से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू. चं. मं. बु. वृ.)

रवीन्दुभौमज्ञसुरेन्द्रपूज्याः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
विरूपदेहं मलदग्धगात्रं सन्तानमिष्टं बहुदोषयुक्तम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम बुध, गुरु, पंचम में हों तो रूपरहित शरीर तथा मल से दग्ध देह वाला, सन्तान प्रिय, बहुत दोषों से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू. चं. मं. बु. शु.)

रवीन्दुभूमितनयज्ञशुक्राः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
कन्दर्पव्याप्तं गणिकाप्रयुक्तां प्रभूतरोगोपहतं सदैव ॥

यदि सूर्य, चंद्र, भौम बुध, शुक, पंचम में स्थित हों तो कामदेव से शरीर वाला, वेश्या में आसक्त, नित्य ही बहुत रोगों में पीड़ित मनुष्य उत्पन्न करते हैं ।

(सू० चं. मं. बु. श.)

सूर्येन्दु भौमज्ञदिनेशपुत्राः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
क्लीवं च वर्णश्रुति शास्त्रहीनं सुनिष्ठुरांग गुणवर्जितं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शनि, पंचम में हों तो नपुंसक, वर्ण व्यवस्था तथा वेदशास्त्र से रहित निष्ठुर शरीर वाला और गुणों से रहित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. चं. मं. वृ. शु.)

सूर्येन्दु भौमामरपूज्यशुक्राः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
श्रियाविहीनं प्रचुरप्रकोपं वृथाटनं बन्धुजनप्रयुक्तम् ॥

जो सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तो लक्ष्मी से रहित, अधिक क्रोधी, व्यर्थ भ्रमण करने वाला तथा बन्धुजनों से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. चं. मं. वृ. श.)

रवीन्दुभौमामरपूज्यसौराः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
कुसंगरक्तं कृतकोपचारं चारित्र्यहीनं हतसत्यमानम् ॥

जो सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शनि, पंचम में हों तो दुष्टसंगति से युक्त, कृतक उपचारवाला, सच्चरित्र से वर्जित और सत्य तथा मान रहित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू. चं. मं. शु. श.)

रवीन्दु भौमासुर पूज्यसौराः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
स्ववन्धुपुत्रार्थसुखैर्विहीनं द्यूतानुरक्तं प्रतिद्वेषकं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो अपने बान्धव तथा पुत्र अर्थ के सुखों से वर्जित, द्यूत (जुआ में) अनुरक्त तथा वैर करने वाले मनुष्यों को उत्पन्न करते हैं।

(सू. चं. मं. शु. श.)

रवीन्दुसौम्यामरपूज्यशुक्राः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
दुर्वृत्तभार्यं निजबन्धुमुक्तं देवद्विजातिक्षतमक्षमं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो दुष्टचरित्रवाली स्त्री वाला, अपने बाँधवों से रहित, देव द्विजातियों को पीड़ित करने वाला और क्षमा रहित मनुष्य को उत्पन्न करता है।

(सू. चं. बु. वृ. श.)

रवीन्दुसौम्यामपूज्यसौराः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
सदा कुशीलं गुरुभिर्निरस्तं पराङ्मुखं साधुजनस्य नित्यम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरू, शनि, पंचम में हों तो नित्य बुरे शीलवाला, गुरु जनों से निरस्त और साधुजनों के विमुख मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(सू. चं. बु. शु. श.)

रवीन्दुसौम्यासुरपूज्यसौराः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
असह्ययानर्थयुतं व्ययार्त्तं पानप्रसक्तं कृपयाविहीनम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो बुरे खर्च वाला, बुराइयों से युक्त, व्यय से पीड़ित, मदिरादि पेय पदार्थों में आसक्त तथा दया से रहित मनुष्य को उत्पन्न करते है ।

(सू. चं. बु. वृ. शु.)

रवीन्दु जीवासुरपूज्यसौरा सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
विहीनकोशं सुतमानहीनं सूनिष्प्रभं शोकसमन्वितं च ॥

यदि सूर्य चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो कोश (खजाना) से रहित, पुत्र तथा मान से हीन और कान्तिरहित तथा शोक से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. मं. बु. वृ. शु.)

सूर्यारसौम्यामरपूज्यशुक्राः सुतस्थिताः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
कलत्रदोषोपहतं रुजार्त्तं भयान्वितं व्यर्थसमुद्यमं च ॥

यदि सूर्य, भौम, बुध, गुरु, शनि, पंचम में हों तो स्त्री के दोषों से पीड़ित रोगों से दुःखित, भय से युक्त, व्यर्थ उद्योग वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. मं. बु. वृ. श.)

सूर्यारसौम्यामरपूज्यसौरा सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
विमूढ़बुद्धि प्रमदाविमुक्तं सुहृष्टचित्तं रणकातरं च ।

यदि सूर्य, भौम, बुध, गुरु, शनि, पंचम में हों तो विशेष मूर्खबुद्धिवाला, स्त्री से रहित, हर्षित चित्तवाला तथा युद्ध से डरने वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. मं. बु. शु. श.)

सूर्यारसौम्यासुरपूज्यसौराः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
व्यपेतलज्जं जितसाधुलोकं गतश्रियं पानपरं कृतघ्नम् ॥

यदि सूर्य, भौम, बुध, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो लज्जारहित, सज्जनों को पराजित करने वाला, लक्ष्मी रहित, पेयपदार्थों में आसक्त तथा कृतघ्न मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. मं. वृ. शु. श.)

सूर्यारजीवासुरपूज्यसौराः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
शिरोर्ति दीर्घक्षतपीडितांगं गुरुत्वहीनं विभवैः प्रयुक्तम् ॥

जो सूर्य, भौम, गुरु, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो शिर में पीड़ा तथा बड़े घाव से पीड़ित शरीर वाला, गौरव से हीन ऐश्वर्यों से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. बु. वृ. शु. श.)

सूर्यज्ञजीवासुरपूज्यसौराः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
नेत्रव्यथापीडितमुग्ररोषं विरूपदेहं सततं कुचैलम् ॥

जो सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तो नेत्र रोग से पीड़ित, घोर क्रोध वाला रूपरहित शरीर वाला, तथा नित्य बुरे वस्त्र वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(चं. मं. बु. वृ. शु.)

चन्द्रारसौम्यामरपूज्यशुक्राः सुतस्थिताः सञ्जनयन्ति मर्त्यम् ।
उत्साहहीनं सुतरां नृशंसं विर्चाचिकानर्थसमन्वितं च ॥

जो चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, पंचम में हों तो उत्साह से रहित, निरन्तर हिंसावाला, विर्चाचिका तथा अनाथों से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(चं. मं. बु. वृ. श.)

चन्द्रारसौम्यामरपूज्यसौराः सुतस्थिताः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
बहुप्रतापं व्यसनैर्विमुक्तं शूरं प्रभुं मानसमन्वितं च ॥

यदि चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शनि, पंचम में हों तो अधिक प्रतापी, व्यसनों से रहित, शूर वीर, समर्थवान् तथा मान से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं. मं. बु. शु. श.)

चन्द्रारसौम्यासुरपूज्यसौराः सुतस्थिताः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
दाक्षिण्यशीलं सुतवित्तभाजं जितेन्द्रियं ख्यातिपरं सदैव ॥

यदि चन्द्र भौम, बुध. शुक्र, शनि, पंचम में हों दो चातुर्य्य युक्त, शील पुत्रवान् तथा धनवान् जितेन्द्रिय प्रसिद्धि में तत्पर मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं. मं. वृ. शु. श.)

चन्द्रारजीवासुरपूज्यसौराः सुतस्थिताः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
सुमालिनं दुर्जनमप्रमेयं प्रभूतकोशं सुतवत्सलं च ॥

यदि चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो सुन्दरमालवान्, दुष्टजन, अप्रमेय, अधिक कोश वाले, पुत्रप्रिय मनुष्य को उत्पन्न करते हैं।

(चं. बु. वृ. शु. श.)

चन्द्रज्ञजीवासुरेज्यसौराः सुतस्थिताः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
विस्तीर्णकीर्त्तिं कुलवन्धुमुख्यं विनीतवेषाभरण सुदान्तम् ॥

यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो विस्तृत कीर्ति वाला कुल तथा बान्धवों में मुख्य, नम्र वेष तथा भूषण वाला और इन्द्रियों को दमन करने वाले मनुष्यों को उत्पन्न करते हैं ।

(मं. बु. बृ. शु. श.)

भौमज्ञजीवासुरपूज्यसौराः सुतस्थिताः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
प्रशस्तवाक्य प्रणनं विनीत दयान्वितं दानरतं सुसत्यम् ॥

यदि भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि पंचम में हों तो शुभवचन बोलने वाला, प्रणत तथा नम्र दया से युक्त दान में संलग्न और सत्यबोलने वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. चं. मं. बु. बृ. श.)

रवीन्दुभौमज्ञसुरेज्यसौराः सुतस्थिताः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
कुलप्रधानं जनताविरुद्धं सुतप्तदेहं स्वजनैर्वियुक्तम् ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शनि, पंचम में हों तो कुल में मुख्य, जनता से विरुद्ध, तप्तशरीर वाले, अपने जनों से रहित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. चं. मं. बु. श.)

रवीन्दुभौमज्ञसितार्कपुत्राः सुतस्थिताः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
प्रियातिथिं चारुविशालनेत्रं तपस्विनं नीतिसमन्वितं च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो अतिथियों को प्रिय मानने वाला, सुन्दर, बड़े नेत्रवाला, तपस्वी, नीति से युक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. चं. मं. वृ. शु. श.)

रवीन्दुभौमामरपूज्यशुक्रशनैश्चराः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
कृपाविहीनं न च सत्यभाजं विदेशगं वै परतर्कक च ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, गुरु, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो दया से रहित, सत्य न बोलने वाले, विदेशगमन करने वाले दूसरों से तर्क किये जाने वाले मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. चं. बु. वृ. शु. श.)

रवीन्दुसौम्यामरपूज्यशुक्रशनैश्चराः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
क्रूरं खलं दुष्टजनैर्वियुक्तं सदाऽनुरक्तं सुतमित्रधर्म्मे ॥

यदि सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो क्रूरस्वभाव, मूर्ख, दुष्टजनों से रहित और पुत्र मित्र तथा धर्म में अनुरक्त मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. मं. बु. वृ. शु. श.)

सूर्यारसौम्यामरपूज्यशुक्रशनैश्चराः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
हतप्रभावं प्रमदाविरक्तं विहीनकोषं रिपुवन्दितं च ॥

यदि सूर्य, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो प्रभाव रहित, स्त्रियों से विरक्त, कोष वर्जित तथा शत्रुओं से वन्दित मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(चं. मं. बु. वृ. शु. श.)

चन्द्रारसौम्यामरपूज्यशुक्रशनैचराः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
अध्यात्मविद्यानिरतं सुमुख्यं धनान्वितं बान्धवसम्मतं च ।

यदि चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो, आध्यात्मिक विद्या में निष्णात, प्रधान, धन युक्त, बान्धवों से सम्मत मनुष्य को उत्पन्न करते हैं ।

(सू. चं. मं. बु. वृ. शु. श.)

रवीन्दुभौमज्ञसुरेज्यशुक्रशनैश्चराः संजनयन्ति मर्त्यम् ।
सुखप्रियं सर्वकलासुदक्षं प्रभूतविद्यान्वितमीश्वरं च ।

यदि सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, पंचम में हों तो सुख को प्रिय मानने वाला, सम्पूर्ण कलाओं में चतुर, बहुत विद्याओं से युक्त तथा समर्थवान् पुरुष को उत्पन्न करते हैं ।

❀ समाप्तः ❀

[illegible]
[illegible]

१—८० तक पंजाब नैशनल प्रस, जालन्धर में छपा ।
८१—१७६ तक गणेश कम्पुजिग हाऊस जालन्धर व कोआप्रेटिव प्रैस में छपा ।

ज्योतिष रत्नाकर भा. टी.	५)
ज्योतिष की प्रथम पुस्तक	।।।)
शिवामंत्रावली	२)
तनुभावप्रकाश भा. टी.	१)
धन भावप्रकाश भा. टी.	१।।)
सहजभावप्रकाश भा. टी.	१)
सुतभावप्रकाश भा. टी.	२)
स्त्री भावप्रकाश भा. टी.	१।)
दशमभावप्रकाश भा. टी.	१)
वर्षफल चन्द्रिका	२)
ग्रह विज्ञान	८।।)
लग्न मन्दाकिनी	१।।)
लग्न सारिणी समुच्चय	२)
भुवनदीपक भा. टी.	२।)
गायत्री मंत्र जप विधि	।।)
सं० १९११ से २००५	३।।)
सं० १९७१ से १९८०	२।।)
सं० १९८१ से १९९०	२।।)
टेवा फार्म रंगीन सैंकड़ा	६।)
सादे रंगीन फार्म सकड़ा	५)
विवाह लग्न प्रति सकड़ा	१२।।)
जन्म पत्र व्यवस्था	।। ≡)
जातकालंकार भा. टी.	१।।
जैमिनी सूत्र	२)
जातकाभरण भा. टी.	६)
ज्योतिष सर्व संग्रह	१।।)
ताजिक नीलकंठी	३।।
भाव प्रकाश ज्या.	१।।।)
भावफलाध्याय भा. टी.	।)
भाव कुतुहल भा टी.	२)
मानसागरी भा. टी.	८)
भारतीय ज्योतिष	६)
मुहूर्त्तमार्तण्ड भा. टी.	२।।)
मुहूर्त्तचिन्तामणि भा. टी.	३।।)
लग्नचन्द्रिका भा. टी.	२)

लघुजातक भा. टी.
लघु वा मध्यपराशरी
गरगमनोरमा
ग्रह लाघव भा. टी.
प्रश्न प्रकाश
प्रश्न भूषण
खेट कौतक भा. टी.
हनुमान ज्योतिष
सर्वतोभद्रचक्र पुस्तक
शीघ्र बोध भा. टी.
बृहज्जातक भा. टी.
बृहद्होरा चक्र
बृहद्ज्योतिषसार भा.
षट् पंचाशिका भा. टी.
सिद्धखेटी
हस्त सामुद्रिक शास्त्र
हस्त रेखा विज्ञान ४)
पद्म कोष भा. टी.
वृहत्पाराशर भा. टी.
कर्म विपाक
व्यापार रतन
जातक तत्व रतलाम
जन्मपत्र प्रदीपिका
जातक पारिजात
जातकशिरोमणि भा.
सर्वार्थ चिन्तामणी
भृगुसंहिता भा. टी.
नरपतिजय चर्या
मुहूर्त गणपति
रमलदिवाकर
अंक विद्या ४) रमलश
प्रश्न शिरोमणी
प्रश्न ज्ञानकप्रदीप
प्रश्न चण्डेश्वर



